त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

हेमन्ताङ्क

वर्ष
१४
सं० २०११

संख्या
२
पौष

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य १।-)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

आवश्यक सूचना

जो सज्जन गत वर्ष चैत्र मासके 'वसन्ताङ्क' से (अप्रैल १९५४ से) 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहक बने थे, उनका मूल्य इस अङ्कमें समाप्त हो जाता है, अतः वे अपना वार्षिक मूल्य ४।) चाररुपये चारआने मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें। अन्यथा उन्हें आगामी 'वसन्ताङ्क' नहीं भेजा जायेगा। आगामी अङ्कमें अनेक विद्वानोंके महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित होंगे। नये वर्ष सं० २०१२ का राजनैतिक सामाजिक और व्यापारिक-भविष्यफल विस्तृत रूपमें रहेगा। आगामी 'वसन्ताङ्क' चैत्र शुक्ल १ ता० २५ मार्च १९५५ को प्रकाशित हो जायेगा। इस अङ्कमें वे ही लेख प्रकाशित हो सकेंगे जो माघ शु० १५ ता० ६ फरवरी१९५५ तक पहुंच जावेंगे। बादमें आये लेख प्रकाशित न हो सकेंगे।

यह 'हेमन्ताङ्क' प्रकाशनकी निश्चित तिथि पौष शुक्ल १० से चार दिन पूर्व ता० ३१ दिसम्बर को प्रकाशित कर ग्राहकोंको भेजा जा रहा है, ताकि पौष शु० १० ता० ४ जनवरी तक दूर-दूरके सब ग्राहकोंके हाथमें पहुंच जावे। प्रत्येक ग्राहकको अङ्क बड़ी सावधानीसे जांचकर भेजा जाता है, फिर भी यदि किसी ग्राहकको न मिले तो पहले अपने डाकघरमें पड़ताल करके १५ जनवरी १९५५ से पहले ही हमारे कार्यालयमें सूचना भेजनी चाहिए। बादकी शिकायत पर यह अङ्क दुबारा नहीं भेजा जायेगा।

—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

❀—×—❀

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

—❀—

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आइ० ई०, सोलन

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी सहिबा सिरमौरीजी बघाटराज्य, सोलन।

श्रीमान् ला० शिवचरणदासजी म्युनिस्पल कमिश्नर, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।

श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)।

श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर।

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित तालुल्केदार, भरतपुर।

श्रीमान् भाई चूहरमल्लजी मुञ्जाल, चूहरमल्ल एण्ड को०, कटरा बड़ियां, देहली।

श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड, सोलन ब्रूरी।

श्रीमान् बा० भागीरथलालजी मिलऑनर, लहरागागा [पटियाला-राज्यसंघ]।

श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, न्यूअमरटाकीज, अजमेरीगेट, दिल्ली।

श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]।

❀—○—❀

सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) और एक प्रतिका १।-) एक रुपया पांच आना है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदन की ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मँगवाए जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेख के प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमी से) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तक के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जावेगा। 'नववर्षाङ्क' के विना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।) रु० और एक अङ्क का मूल्य १।-) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मँगवाने पर उक्त मूल्य में ग्यारह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवाने में ही ग्राहकों को विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक-संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिये। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्य का नोट या टिकट लिफाफे में कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहक के पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए, बादकी शिकायतपर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्ताङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १४ | सोलन, पौष शु० १० मंगलवार सं० २०११ वि० | संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

उपादाय भ्रष्टैरपि बृहदुपायैर्जनमता-
न्यलंमानाः सभ्याः सदसि समिता राष्ट्रभरणे ।
दुरन्तैरुत्कोचैर्निशि निशि भरन्तो निजगृहान्
जनानां कल्याणान्यहह ! कवयन्ते दिशि दिशि ॥१॥
युवानो वृद्धा वा सदसि विदधानाः प्रतिदिनं
जनाऽऽशंसां मत्त्वा तृणमिव नवान्नीतिनियमान् ।
अशक्तान् पिंषन्तोऽप्यवनमवनेर्जानत इमे
बुभुक्षाऽऽश्लिष्टानां मतिरविनयानेव सृजति ॥२॥

सम्पादकीय विचार—

तपका अभाव

"पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्त तनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत ॥"

ऋ. ९।८३।१

सुख प्रत्येक व्यक्ति चाहता है । किन्तु, उसको पानेके लिये कठोर परिश्रम करनेके लिये सब प्रस्तुत नहीं हैं । इस के कारण जहाँ दरिद्रता और दीनताने हमारे देशमें अपना अड्डा बना लिया है वहाँ इसके कारण अनेक पापोंका भी उदय हुआ है । क्योंकि दरिद्रता सब पापोंकी जननी है । इस दरिद्रताका अन्त करनेका उपाय क्या है ? वैदिक ऋषि कहते हैं कि तप करो सुख प्राप्त होगा । प्रभु सर्वत्र व्यापक है, अंगअंगमें व्याप्त है, परन्तु उसके दर्शन भी तपके बिना सम्भव नहीं । हमारी जातिने जबसे तपकी महिमाको भुलाया है तबसे ही वह दीन दरिद्र और दुःखी रहने लगी है । अतः भौतिक सुख पानेके लिए घोर परिश्रम करना चाहिए । जब हम घोर परिश्रम करेंगे तो यह धरती पहले के समान सोना उगलेगी । आज हमारी भूमि प्रति एकड़ मिस्र, जापान, चीन आदिसे भी कम मात्रामें अन्नोत्पादन करती है । इसके अनेक कारण हैं । किन्तु मुख्य कारण है किसानकी दरिद्रता और खेती करनेके उपकरणोंका पुराना होना तथा किसानकी कमाईका उससे छिन जाना । समाजमें जोंकोंकी कमी नहीं है, अमरबेलके समान परपोषी और पराम्न जीवियोंकी भी कमी नहीं है । हम फसलकी रक्षाके लिए बन्दरोंका निर्यात करते हैं, उनको पकड़ कर लाने वालोंको पुरस्कार देते हैं । टिड्डी विनाश-कार्यके लिए तो हमने एक अलग विभाग ही खोला हुआ है । परन्तु समाजके अमर-बेलोंका नाश करनेके लिए हमने अभी तक कुछ नहीं किया है । वे अभी तक पनप रहे हैं, फूल फल रहे हैं, इनके रहते हुए क्या हम यह आशा कर सकते हैं कि जनता कठोर परिश्रम करनेके लिए तैयार होगी ? हमारे प्रधान-मंत्रीको शिकायत है, कि सरकारी योजनाओंको सफल बनानेमें जनता सोत्साह भाग नहीं लेती । परन्तु क्या यह भी सोचा गया है कि हमारे पड़ोसी देश चीनमें वहाँके नेता यह शिकायत क्यों नहीं करते ? चीनी जनता आज जो नव-निर्माणके लिए मिशनरियोंके समान सोत्साह प्रयत्न कर रही है, उस के कारणोंको जाननेके लिए भी क्या कभी प्रयत्न किया गया है ? पांच वर्षमें जो चीनमें सम्भव हुआ वह इस देश में क्यों सम्भव नहीं हुआ ? क्या हमारे नेताओंने इसपर भी कभी विचार किया है ? उत्तर सीधा है । हमारे नेताओंने चीनके समान 'सम्भूय-समुत्थान' का मार्ग ग्रहण नहीं किया । उन्होंने अपनेको ही सर्वप्रथम धनी बनानेका यत्न किया, उन्होंने तपका मार्ग छोड़ दिया । फलतः योगभ्रष्टकी जो अवस्था होती है वही दशा इनकी है । तपभ्रष्ट नेताओंमें जनताका विश्वास और उसकी श्रद्धा न रही । यही कारण है कि सरकारी विभागोंमें भ्रष्टाचार चरम सीमापर पहुँच गया है । सड़कपर झाड़ू देनेकी नौकरी पानेके लिए आज रिश्वत देनी पड़ती है । उत्कोचने आज अनेक रूप धारण कर लिए हैं । नगदी भेंटको ही केवल आज उत्कोच माना जाता है । अन्य रूपोंमें दी गई भेंटोंको उत्कोच नहीं माना जाता । कहा जाता है कि लार्ड कर्जनने इसलिए सरकारी अधिकारियोंका भेंटें लेना बन्द कर दिया था । किन्तु अंग्रेजोंकी बुद्धिने उसका मार्ग निकाल लिया । उन्होंने स्वतः भेंटें लेनी बन्द कर दीं, पर अपनी पत्नीके नामसे भेंटें लेने लगे । पत्नीको भेंटें और उपहार देने वाला सरकारी कृपाका पात्र बना रहा । यह आज भी प्रचलित है और व्यापक रूपमें प्रच-

लित है। इस ओरसे हमने आँखें मून्द रखी हैं। जब यह स्थिति है, तब हम यह कैसे आशा कर सकते हैं, कि जनता योजनाओंको सफल बनानेमें सोत्साह सहयोग देगी?

सरकारी उद्देश्य—

चीनसे लौटनेके बाद श्री नेहरूने घोषित किया है कि सरकारका उद्देश्य इस देशमें समाजवादी राज्यकी स्थापना करना है। इसपर लोकसभाने भी अपनी मुहर लगा दी है! पर समाजवादी राज्यकी स्थापनाका मार्ग वह न होगा जो चीन और रूसका है, वरन् लोकतन्त्रात्मक होगा। हम चाहते हैं कि प्रधानमन्त्रीका यह आशावाद सफल हो। परन्तु चीनसे लौटनेके बाद उन्होंने जो पहला महत्त्वपूर्ण कार्य, केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलके पुनर्गठनका किया है, उससे देशको घोर निराशा हुई है। क्या पूछा जा सकता है कि ये सब प्रधानमन्त्रीकी घोषित नीतिमें पूर्णतः विश्वास करते हैं और ये लोग अपने साथ जनताको ले चलनेकी क्षमता और सामर्थ्य रखते हैं? क्या इन लोगोंकी सहायतासे देशमें समाजवादी राज्यकी स्थापना हो सकेगी?

तपभ्रष्ट—

समाजवादी राज्यकी स्थापना यदि वस्तुतः हमारा लक्ष्य है और हम सचमुच उसमें विश्वास करते हैं, तो हमें वैयक्तिक समृद्धि और उत्कर्षका विचार छोड़कर सब की उन्नति और सबकी समृद्धिमें अपनी उन्नति और अपनी समृद्धि समझनी चाहिये। म० गांधीने इसी विचार से लंगोटी पहनना प्रारम्भ कर दिया था, देशके दीनातिदीन किसानके समान अपना जीवन बितानेका प्रयत्न किया। परन्तु तपका यह मार्ग म० गांधीके अनुयायियोंने ही छोड़ दिया। यदि वे म० गांधीके मार्गका अनुसरण करते, संसद, विधानसभाओंके सदस्य और मन्त्री बनने पर भी पहलेके समान जीवन बिताते और शीघ्रातिशीघ्र अपना घर भरनेका विचार न करते, तो हम यह प्रवाद न सुनते कि संसदके सदस्य संसदमें प्रश्न पूछनेके बदले पैसे लेते हैं, जिस श्रेणीमें रेल-यात्रा करते हैं, उससे ऊपरके वर्गका किराया प्राप्त करते हैं और अब रेलका पास बनवानेके लिये उनको भी अपना चित्र (फोटो) देनेकी आवश्यकता है। जब विधिनिर्माताओंकी यह स्थिति है, तो अन्योंके विषयमें क्या कहना?

बड़प्पनका मानदण्ड त्याग नहीं धन—

लोकसभामें एक बार श्री रामनारायणसिंहने तात्कालिक गृहमंत्री श्रीराजाजीसे पूछा था कि जब हम और आप जेलोंमें थे, कांग्रेसका कार्य करते हुए गाँव-गाँव भटकते थे, उस समय क्या हमारे परिवार नहीं पल रहे थे? तब आज वेतन और भत्तोंकी क्या आवश्यकता है? परन्तु आजके कांग्रेसी नेता कहते हैं कि क्या वे 'स्टेनो' से भी कम पाकर सन्तोष करें? हीनताकी छाप उनके हृदय तक पहुँच गई है। बड़प्पनका मानदण्ड (पैमाना) उनके लिये आज त्याग नहीं रहा है, धन हो गया है। वे सामूहिक उन्नतिमें नहीं, सम्भूय उत्थानमें नहीं, अपितु अपने उत्कर्ष में विश्वास करते हैं। क्या श्री नेहरू इसी कांग्रेसके भरोसे और ऐसे लोगोंकी सहायतासे देशमें समाजवादी राज्यकी स्थापना करनेकी आशा करते हैं?

मनोवृत्ति जब तक न बदलेगी, हृदय-परिवर्तन जब तक न होगा, जीवन और समाज तथा जनताके प्रति दृष्टिकोण जब तक परिवर्तित न होगा, तब तक लोकतन्त्रात्मक प्रणालीसे इस देशमें समाजवादी राज्यकी स्थापना नहीं की जा सकती। अतः प्रश्न यह है कि मनोवृत्ति और दृष्टिकोणमें परिवर्तनके लिये क्या किया जाय?

वेतन-स्तर नीचा हो—

पहली आवश्यक बात है कि वेतनोंका स्तर नीचा किया जाय। चपरासी और सर्वोच्च अधिकारीके वेतनके मध्य अनुपात १ और १० का रहे। यदि चीनका राष्ट्रपति माओ-त्से तुंग ७०० रु० में जीवन-निर्वाह कर सकता है, यदि चीनका प्रधानमन्त्री चू एन-लाई ५०० रु० पाकर भी समस्त विश्वका ध्यान अपने शब्दोंकी ओर आकर्षित कर सकता है, तो कोई कारण नहीं दीखता कि हमारे देशके मन्त्री ५०० रु० मासिकसे अधिक क्यों लेवें?

यदि सौराष्ट्रके मुख्यमन्त्री श्री ढेबर--कांग्रेसके नव-निर्वाचित अध्यक्ष—चार कमरोंमें रहते हुए शासन-कार्य कर सकते हैं, तो कोई कारण नहीं दिखाई देता कि हमारे मन्त्री जनतासे दूर, बड़ी-बड़ी कोठियों और बड़े-बड़े बंगलोंमें रहें। १६३१ में गोलमेज-परिषदमें भाषण देते हुए गांधीजीने कहा था कि—"भारतमें स्वराज्य हो जाने पर वायसरीगल लाज (राष्ट्रपति-भवन) हस्पताल या गोशालामें बदल जायगा।" जब एक-एक कोठड़ीमें इस देशके अन्दर चार-चार व्यक्ति रहते हैं, तो उनके मन्त्री विशाल कोठियोंमें रहनेका स्वप्न भी कैसे ले सकते हैं? जब तक देशकी आयका स्तर नीचा है और हम न्यूनतम वेतन बढ़ानेकी क्षमता नहीं रखते, तब तक हमें उच्चतम वेतनका स्तर ५०० रु० से अधिक ऊँचा नहीं करना चाहिये। इससे हम आर्थिक विषमता दूर कर सकेंगे और समाजमें सन्तोषका वातावरण उत्पन्न कर सकेंगे। इससे जनतामें नया उत्साह उत्पन्न होगा।

कम वेतन होनेसे योग्य व्यक्ति न मिलेंगे, यह कहना ठीक नहीं है। यदि चीनके अन्दर 'पीपल्स बैंक'की शंघाई-शाखाका मैनेजर (शंघाईकी जनसंख्या ५० लाख है और एशियाका सबसे बड़ा नगर है) ४०० रु० पाकर सन्तुष्ट हो सकता है, और अपने लिये चपरासी रखना जन-शक्तिका अपव्यय मानता है, तो भारतमें भी योग्यतम व्यक्ति राष्ट्र और जनताके सम्भूय-समुत्थानके लिये वृत्ति मात्र लेकर काम करनेके लिये मिल जायेंगे। आवश्यकता है कि हम त्याग और तपस्याका वातावरण उत्पन्न करें।

जनताका सहयोग चमत्कार उत्पन्न कर देगा। चीनके लोहे व इस्पात कारखानेका मैनेजर केवल ७५० रु० वेतन पाता है। चीन भरमें इससे अधिक वेतन पानेवाला और दूसरा व्यक्ति नहीं है। इसके नीचे सवा लाख व्यक्ति काम करते हैं। तीन वर्ष पहले वहाँ पांच लाख टन इस्पात तैयार होता था। आज २० लाख टन इस्पात तैयार होता है। हमारा ताताका कारखाना केवल ६ लाख टन इस्पात तैयार करता है। पिछले पांच वर्षोंमें इसने केवल दो लाख टन अधिक उत्पादन बढ़ाया है। चीनके इस्पातके कारखानेमें अदक्ष श्रमिक (मजदूर) का वेतन ६० रु० है और दक्ष श्रमिकका न्यूनतम वेतन १५० रु० मासिक है। अदक्ष मजदूरको रहनेके लिये स्नानगृह और रसोईघर समेत एक कमरा मिलता है। इसमें बिजली होती है। रसोई बनानेके लिये गैसकी व्यवस्था है। कारखानेका मैनेजर भी मजदूरोंके मध्य रहता है और उसको तीन कमरे मिले हुए हैं। अदक्ष मजदूर और कार-खानेके मैनेजरके जीवन और रहन-सहनके बीच इतना कम अन्तर रहनेसे मजदूर सन्तोषके साथ जीवन-यापन करता है और पूरी शक्ति एवं पूर्ण उत्साहसे काम करता है। क्योंकि उसको विश्वास है, कि उसके श्रमका फल उसको और सारे समाजको प्राप्त होगा। यह आत्म-सन्तोष ही उसको अपने देशके वास्ते सब कुछ अर्पण करनेकी प्रेरणा देता है। क्या यह आत्म-सन्तोष बिना तपके उत्पन्न हो सकता है?

धनका उपयोग क्या है? नाना प्रकारके आभूषण खरीदने, नई-नई मोटरकारें खरीदने और विलासकी विविध-समग्री जुटानेके सिवाय क्या कुछ और भी किसी काममें धनका उपयोग धनी लोग करते हैं? यदि वैयक्तिक महाजनी और सूदखोरीका सर्वथा अन्त कर दिया जाय, सोना-चांदीकी आजके समान खुली बिक्री बन्द कर दी जाय, और मोटरें हस्पतालों, सेना सदृश सार्वजनिक एवं राष्ट्रीय आवश्यकता पूरी होनेके बाद व्यक्तियोंको खरीदने की अनुमति दी जाय, तो क्या धन-संग्रहके लिये लोग उचित और अनुचित उपायोंका अवलम्बन करेंगे? इस अवस्थामें आवश्यक व्ययसे बचा धन बैंकोंमें जायगा और यह पूंजी नये उद्योगोंको जन्म देगी, और हमें विदेशी पूंजीकी शरण लेनी न पड़ेगी। विदेशी पूंजी लेनेके बदले तपस्या और बलिदानका यह जीवन बिताना क्या अधिक अच्छा नहीं है?

निराश युवक—

समाजवादी राज्यकी स्थापनामें एक बड़ी बाधा युवकों और तरुणोंमें फैली भारी निराशा है। दूसरी ओर

चीनमें देशके पुनर्निर्माण और पुनर्जागरणमें युवक सबसे आगे हैं। कारण क्या है? कालेज और विश्वविद्यालयकी सारी शिक्षा निःशुल्क है। निवास-भोजन-छादन सब निःशुल्क है और यह सरकार देती है। शिक्षित युवकोंको बेकारीका सामना नहीं करना पड़ता। उपाधि प्राप्त करनेसे पहले ही उनको नियुक्ति-पत्र मिल जाता है। शिक्षकका न्यूनतम वेतन १५० रु० है। इस वेतन पर क्या हमारे देशके युवा शिक्षक, डाक्टर तथा वकील और इञ्जीनीयर गांवों और कस्बोंमें जनताके साथ रहना पसन्द न करेंगे? काश्मीरमें प्राथमिक शिक्षासे लेकर विश्वविद्यालय तककी शिक्षा निःशुल्क है। त्रावनकोर-कोचीनमें सोशलिस्ट मन्त्रिमण्डल ने आठवीं तक शिक्षा निःशुल्क कर दी है। यदि काश्मीर में शिक्षा निःशुल्क हो सकती है, तो कोई कारण नहीं दीखता कि सारे देशमें चीनके समान उच्च शिक्षा निःशुल्क क्यों न कर दी जाय? जब मन्त्री ५०० रु० से अधिक न लेंगे, तो प्रोफेसर भी ४००, ५०० रु० मासिक पर शिक्षा देनेके लिये तैयार हो जायेंगे।

शिक्षाका माध्यम—

शिक्षाका माध्यम हिन्दी होना चाहिये, यह एक निर्विवाद सत्य है। यदि चीन पांच वर्षके अन्दर अकेले इंजीनियरिङ्ग पर २००० से अधिक ग्रन्थ चीनी भाषामें तैयार कर सकता है और चीनी भाषाके माध्यमसे सब विषयोंकी शिक्षा दे सकता है, तो हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते? इसका एक मात्र कारण है, अंग्रेजीके प्रति मोह और अपनी सुविधाका विचार। यदि हमको अपने देश और भावी पीढ़ीका जरा भी ध्यान होता, तो हमारे देशसे अंग्रेजी भाषाका राज्य भी अंग्रेजोंके चले जानेके साथ उठ जाता। किन्तु, शासकों और शिक्षकोंने अपनी सुविधाका विचार किया, देश और भावी पीढ़ी तथा ज्ञान-प्रसारका विचार नहीं किया। क्यों? तप और दृढ़ संकल्पका अभाव है।

सम वितरण—

जमीदारीका अन्त हो गया, पर किसान आज भी सन्तुष्ट नहीं। क्योंकि जमीदार आज भी छद्मवेषमें बने हुए हैं। कानूनने उनका अन्त कर दिया, पर आज भी वे भूमिपति और भू-स्वामी बने हुए हैं और भूमि जोतने और गोड़ने वाला आज भी भूमि-हीन है। यदि प्रत्येक गाँवकी जोतकी जमीन वस्तुतः खेती करने वाले किसानोंमें समान रूपसे बांट दी जाती, तो किसान प्रसन्न हो जाता और हम इस देशमें एक नवीन युगका आरम्भ कर सकते थे। आज भी भूमि-वितरणकी ओर हमारा ध्यान नहीं। इसके अभावमें समाजवादी राज्यकी स्थापनाका स्वप्न क्या पूरा हो सकता है? जो कभी हलको छूते नहीं, जो हल जोतना पाप समझते हैं, जो आजीविका और धनोपार्जनके लिये अन्य काम करते हैं और फिर भी भूमिपति बने हुए हैं, उनके पास जमीन रहनेका क्या कोई उचित कारण दिया जा सकता है?

जमींदारीका अन्त करनेके साथ नगरोंमें भी गृह स्वामित्वका अन्त करना वाञ्छनीय है। गृहस्वामी (मकान मालिक) अपनेको दूसरा भगवान् मानते हैं। ये साधारण मनुष्योंको कीट-पतंगसे अधिक नहीं गिनते। अतः विना किसी क्षतिपूर्तिके मकान-मालिकोंके वर्गका अन्त करना चाहिये। ये समाजके महाजनोंके ही समान शोषक और अमरबेलके समान समाजके जीवनको खोखला करनेवाले हैं। उद्योगोंका राष्ट्रीयकरण इसके अभावमें अपूर्ण रहेगा। इमारती उद्योग एक महत्त्वपूर्ण उद्योग है। इस्पातके समान यह भी महत्त्वपूर्ण है। इसको कुछ व्यक्तियोंके हाथमें रखना किसी भी दृष्टिसे हितकर नहीं कहा जा सकता।

कस्मै देवाय हविषा विधेम—

यदि सरकार और कांग्रेस वस्तुतः देशमें समाजवादी राज्यकी शान्तिपूर्ण, सहकारिता और लोकतंत्रात्मक रीतिसे स्थापना करना चाहते हैं, तो सर्वप्रथम उनको अपनी मनोवृत्ति बदलनी चाहिये और इस प्रश्नका उत्तर देना चाहिये—"कस्मैदेवाय हविषा विधेम?" उनको अपने वचन और अपनी घोषणाओंसे ही नहीं अपितु अपने कार्यसे भी जनताको यह विश्वास दिलाना चाहिये कि वे जो कुछ कर रहे हैं और जो कुछ करनेका संकल्प रखते हैं, वह एकमात्र जनता और देशके लाभके लिये है, इसमें

उनका अपना और अपने वर्गका हित निहित नहीं है। इसके अभावमें लोकतंत्र प्रणालीकी महत्ता स्थापित नहीं हो सकती। कम्युनिज्म और अधिनायकवादको यदि लोकतंत्रकी अपेक्षा कम कार्यक्षम और कार्यसाधक सिद्ध करना है, तो राष्ट्रके कर्णधारों और सरकारी अधिकारियोंको जन-सेवाका कठोर व्रत लेना चाहिये। भगवान् श्री कृष्णने अर्जुनसे कहा था—जो कुछ कर्म, तप, धर्माचरण हवन आदि करता है, दान देता है, वह सब मेरे अर्पण कर—

"यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय! तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥"

इसकी आज राष्ट्र नेताओंसे अपेक्षा करता है। आज आवश्यकता इस बातकी है, कि हम मूक निरीह और पीड़ित जनताके उत्थान, उसके जीवन-मानको ऊंचा करनेके लिये काम करें। जब तक सम्भूय समुत्थान और सर्वोदयकी यथार्थ भावनासे काम न किया जायगा तब तक जनतामें देशके अन्दर समाजवादी राज्यकी स्थापनाके लिये उत्साह उत्पन्न न होगा। इसके लिए तपकी आवश्यकता है। क्या हम अभावों और संयमका जीवन बिताने और राष्ट्रके पुनरुज्जीवनके लिये कमसे कम साधनोंके साथ—जैसे कि एक साधारण भारतीय रहता है—रहनेको तैयार हैं? इस प्रश्नके उत्तर पर निर्भर है कि इस देशमें शान्तिपूर्ण, सहकारिता और लोकतंत्र प्रणालीसे समाजवाद स्थापित होगा या अधिनायकवाद द्वारा। आंध्रका भावी निर्वाचन नहीं, अपितु इस प्रश्नका उत्तर इस बातका निश्चय करेगा कि हम स्वतंत्र भारतीय प्रणालीका विकास करनेमें समर्थ हैं, या नहीं, या केवल मास्को और पेकिंगका अनुसरण ही करना जानते हैं। निस्सन्देह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है, और इसका उत्तर शीघ्र देनेकी आवश्यकता है। क्या इस अवसर पर हम चूक जावेंगे?

तनावमें कोई कमी नहीं—

अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिमें तनाव पहलेके समान बना हुआ है। पश्चिमी राष्ट्र पश्चिमी जर्मनीको सशस्त्र करनेको कृत संकल्प हैं। पेरिस-करारको सम्पुष्ट करनेके लिये वे व्यग्र हैं। सोवियत रूस चार राष्ट्रोंका सम्मेलन बुलानेको आतुर है। क्योंकि इंग्लैण्ड और फ्रांसको अमरीकासे अलग और दूर रखनेके प्रयत्नमें पेरिस-करार बाधक है। इंग्लैण्ड और फ्रांस दोनों यूरोपमें अमरीकाका बढ़ता हुआ प्रभाव देखना नहीं चाहते। जीनीवा-सम्मेलनने यह स्पष्ट कर दिया। अमरीकाको असन्तुष्ट करके भी हिन्दचीनमें युद्ध-विराम सन्धि की गई थी। परन्तु अमरीका पश्चिमी जर्मनीको एक शक्तिशाली राष्ट्र बनानेमें सहायता देकर यूरोपमें अपना प्रभाव स्थापित करनेका यत्न कर रहा है। इसलिये वह पश्चिमी जर्मनीको यूरोपियन राष्ट्रोंके मध्य सम्मानपूर्ण स्थान देने और उत्तरी अटलाण्टिक संधि-संघ (नाटो) का एक सभ्य बनानेके लिये प्रयत्नशील है। सोवियत रूसने जर्मनीको अमरीका की गोदमें जानेसे रोकनेके लिये जर्मन-एकताका नारा लगाया है। पश्चिमी राष्ट्र समझते हैं कि रूसका उद्देश्य संयुक्त जर्मनीकी स्थापना नहीं, प्रत्युत पेरिस-करारकी सम्पुष्टि और उसको क्रियान्वित करनेसे रोकना है। फलतः तनाव और शीत-युद्धमें कोई अन्तर नहीं आया है।

कोरिया-युद्ध-विरामसन्धि भी भयमें है। चीनने अमरीकाके ११ वैमानिकोंको गिरफ्तार कर लिया है। इसके उत्तरमें अमरीकाने अमरीकामें ठहरे चीनी छात्रोंको स्वदेश जानेसे रोक दिया था। अमरीकाने भारत और स्वीडनके परामर्शकी उपेक्षा करके संयुक्तराष्ट्र द्वारा चीनके विरुद्ध प्रस्ताव भी पास करा दिया। चीनी कार्रवाईकी एक पक्षीय निन्दासे चीन बहुत असन्तुष्ट हुआ है। किन्तु श्रीनेहरूके निवेदनको मानकर प्रधानमंत्री चू एन-लाईने 'यू. एन. के सेक्रेटरी जनरल डा० हैमर्क्सीस्डसे बात करना मान लिया है। डा० हैमर्क्सीस्ड नई दिल्ली होते हुए पेकिंग जावेंगे। यह घटना बताती है कि श्रीनेहरूकी चीन-यात्रा निष्फल नहीं गई और भारत तथा चीन एक दूसरेके बहुत निकट आ गये हैं।

युगोस्लेवियाके राष्ट्रपति मार्शल टीटोका भारत आना एक महत्त्वपूर्ण घटना है। यूरोपके किसी राज्यका प्रमुख व्यक्ति, राष्ट्रपति या राजा इससे पहले भारतमें नहीं आया। भारत और युगोस्लेविया दोनों राष्ट्र दो बड़े गुटोंसे अलग

[शेष पृष्ठ ४७ पर]

पुराणों पर आक्षेप

श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वतः, विद्यावागीशः, विद्याभूषणः, विद्यानिधिः

माननीय श्री सम्पूर्णानन्दजीने 'ब्राह्मण-सावधान' एक पुस्तिका निकाली थी, यह तो 'श्रीस्वाध्याय' पाठकों को हमारे निबन्धों से ज्ञात हो ही गया होगा। पहले हमारा विचार था कि—'श्रीस्वाध्याय' में उस पर क्रम से विचार प्रदर्शित किया जावे; पर पहले हमने उसमें आक्षिप्त पौराणिक देवचरित्र को लिया है। उसके समाप्त होने पर उनकी शेष बातों को भी आलोचित किया जाय—ऐसा हमारा विचार है। तदनुसार देवतावाद से जो उन्होंने पुराणों को कोसा है; उनके वे विचार तथा उनपर आलोचना देखिये—

आप कहते हैं—'शिक्षा ऐसी होनी चाहिये कि—साधारण श्रोता वक्ता भी उसको विकृत न कर सकें' परन्तु आप इसपर यह जानें कि—'परोक्षविषया देवा भवन्ति प्रत्यक्षविद्विषः' (गोपथ० १।१।७)। देवकल्प पुराणकार भी ऐसे (परोक्ष-प्रेमी) थे। यदि श्रीयुधिष्ठिरकी द्यूतक्रीड़ा महाभारतसे हटा दी जावे; तो 'महाभारत—युद्ध कैसे हुआ'—यह भी पता न लग सके। इस प्रकार आक्षिप्त देवचरित्र उनको भोगयोनि बता रहा है।

आगे आप वेदमें भी देवनिन्दा मानते हैं, पर भिन्न प्रकारसे। वह यह कि—'वेद आपके अनुसार देवत्वसुखको ब्रह्मानन्दके समक्ष नगण्य बताता है'। परन्तु वह देवत्व-सुख क्या है जो ब्रह्मानन्द के समक्ष नगण्य है;—उसीको तो पुराणोंने वेदका संकेत लेकर विवृत किया है। इस विषयमें वैदिकनिर्देश सूत्र है; और पौराणिक—निर्देश उनके भाष्य। आप लिखते हैं—'पुण्यके क्षीण होनेपर प्रायः सभी देवोंको फिरसे मर्त्यलोकमें आना पड़ता है—यहां ब्रह्मज्ञानकी गरिमा अभीष्ट है, देववादकी गर्हा तो प्रसङ्गवशात् करदी गई है'। इस प्रकार आप पुराणमें भी क्यों नहीं समझते? वहां भी कहीं सत्यका अर्थवाद है; कहीं कामसुखकी तुच्छताका अर्थवाद है।

फिर आप कहते हैं—'पुराणों की कथापद्धति हमारे मनमें देवोंके प्रति अश्रद्धा तो उत्पन्न कर देती है; पर मुमुक्षा उत्पन्न नहीं करती। उल्टे यह भाव उत्पन्न करती है—जब बड़े-बड़ोंमें भी यह सब दोष भरे पड़े हैं; तो हम क्या बुरे हैं। यह भी आपकी बात ठीक नहीं। पुराण ही तो वैसे चरित्रों का अनुकरण निषिद्ध करता है। और कहता है—

'तेजीयसां न दोषाय वन्हेः सर्वभुजो यथा'
(श्रीमद्भागवत १०।३३।३०)।
'तेषां तेजोविशेषेण प्रत्यवायो न विद्यते'
(आपस्तम्बधर्म. २।१३।८)।
नैतत् समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः।
विनश्यत्याचरन् मौढ्याद् यथा रुद्रोऽब्धिजं विषम्'
(श्रीमद्भा. १०।३३।३१)
तान् अन्वीक्ष्य प्रयुञ्जानः सीदत्यवरः'
(आप. २।१३।९)

अर्थात् देवादि उच्च योनियोंको तेजःशालिताके कारण विरुद्ध आचरणोंसे भी दोष नहीं होता; पर सर्वसाधारणको वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिये।

बल्कि—पौराणिक देवताओंकी कथाएँ तो हमारे भीतर यह भाव उत्पन्न करती हैं कि—देवता भोगयोनि हैं; वे चाहे अच्छे कर्म करें, वा बुरे, वे न उन्नत (मुक्त) हो हो सकते हैं; न अवनत (पशु) हो सकते हैं; उन्होंने अन्ततः मनुष्य ही बनना है, उनके उपभोग वा काम, परिणाममें दुःख देनेवाले हैं; क्योंकि—कामनाओंकी कभी पूर्ति नहीं होती—

'कामं कामयमानस्य यदा कामः समृध्यते।
अथैनमपरः कामः क्षिप्रमेव प्रबाधते॥'
अपि चेदुदनेमि समन्तात् भूमिमालभते सगवाश्वाम्,

न स तेन धनेन धनैषी तृप्यति किं नु सुखं धनकामे' (न्याय० ४।१।६७)।

'न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते' (मनु० २।६४)

देवभोगोंको विचारनेसे ये ही विचार उत्पन्न होते हैं। तब हम विचारते हैं कि—हम कर्मयोनि हैं, यदि हम भी भोगमें पड़ेंगे, तो कहींके भी न रहेंगे। यदि हम पशु होगये, तो चौरासी लाखका चक्र हमें घूमना पड़ेगा। इस कारण हमें मर्यादा-च्युत न होना चाहिये। बल्कि—हम तो कर्मयोनि होनेसे मुक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं, देवता भोग-योनि होनेसे नहीं। पुराणोंसे ही हमें यह मिलता है—

'यच्च कामसुखं लोके यच्चतृष्णासमुद्भवम्।
तृष्णाक्षयसुखस्यैते कलां नार्हन्ति षोडशीम्'

अर्थात् तृष्णाक्षयसुखके मुकाबलेमें तृष्णाका सुख कुछ भी वस्तु नहीं। इस प्रकार पुराणादिसे ही हमें दिव्य-सुखकी अनित्यता मिलती है। तभी विष्णुपुराणमें—

'गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्' (२।३।२४)

देवताओंकी भारतवर्षमें जन्मलेनेकी उत्सुकता बताकर हमारी कही बातको समर्थित किया है।

श्रीसम्पूर्णानन्दजी लिखते हैं—'आज जनसाधारणकी मनोवृत्ति कुछ ऐसी ही होगई है। व्यापक अश्रद्धा, अविश्वास, प्रमाद, अकर्मण्यता और दम्भने धर्ममें घर कर लिया है, इस भूमिकाको बान्धकर आप आगे कहते हैं—'देवतातत्त्व क्या है, विश्वचक्रप्रवर्तक देवताओंके साथ हमारा क्या सम्बन्ध है, हम उनके किस प्रकार सहायक होसकते हैं, और किस प्रकार अवरोधक हो रहे हैं, इन बातोंकी कहीं शिक्षा नहीं।

यह आप कैसे कहते हैं, क्या 'श्रीमद्भगवद्गीता' घर-घरमें नहीं बतला रही कि—

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यः, (३।१४)।

वही गीता तो सभी को सिखला रही है—

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
'अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्' (३।१०)

इसी की व्याख्या निम्न पद्यों में है—

देवान्-भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
'परस्परं भावयतः श्रेयः परमवाप्स्यथ' (३।११)
इष्टान् भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः' (३।१२)

'एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ! स जीवति' (३।१८)

यही मनुजीने कहा है—

'अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः' (३।७६)

तब आपका उलाहना कैसा? देवपूजा तथा यज्ञका प्रचार इसी बातको बताता था।

आगे आप पौराणिक देवतावादपर पुनः प्रहार करते हैं—'हमारी दुर्बलताओं और दुराकांक्षाओंको शक्तिमती बनाकर देवलोकमें बैठा दिया गया है, पर यह आपकी बात निर्मूल है। मन्त्रब्राह्मणात्मक वेदमें देवताओंके सम्बन्धमें जो बातें कही हैं, जिनका दर्शनोंने भी समर्थन किया है, पुराणोंने उन्हें ही अनूदित तथा विवृत किया है। उनमें कहीं अर्थवाद हो, कहीं विशेष रहस्य हो, कहीं विशेष परिणाम हो—यह तो ठीक है, परन्तु श्रीसम्पूर्णानन्दजीका तात्पर्य तो उनके हृदयके अन्तस्तलसे प्रकट हो गया है, जिनके मूलभूत अर्वाचीनजनोंके देवतावादसे विरुद्ध विषम उद्गार ही हैं। यह ठीक भी है, क्योंकि—

'मृदुना सलिलेन खन्यमानान्यवघृष्यन्ति गिरेरपि स्थलानि।
उपजापविदां च कर्णजापैः किमु चेतांसि मृदूनि मानवानाम्'।

कोमल भी पानीसे घिसे हुए पहाड़ोंके स्थल घिस जाया करते हैं; चुगलीखानेवालोंकी चुगलियोंसे मनुष्योंके कोमल चित्तोंका तो भला क्या कहना?

क्या पुराण आजसे पहले नहीं थे? लोग उनकी कथाओंको नहीं सुनते थे? उनपर उनका दुष्प्रभाव उस समय क्यों नहीं पड़ता था? आज यह क्यों होरहा है?

वस्तुतः आजके लोग चाहते हैं कि—जैसे देवताओंमें नैरङ्कुश्य प्राप्त है; वैसे हमें भी प्राप्त हो। जो देवताओंके दुश्चरित्रों को बताते रहते हैं; उनके चरित्र की यदि गम्भीर गवेषणा की जाए, तो जाना जा सकेगा कि—वे कैसे हैं? दोषदृष्टिवालोंको दोषके अतिरिक्त अन्य क्या दिखलाई पड़े?

अतिरमणीये वपुषि व्रणमेव मक्षिकानिकरः'।

'अवेक्षते केलिवनं प्रविष्टः क्रमेलकः कण्टकजालमेव'

बड़े सुन्दर शरीरमें भी मक्खियाँ व्रणको ही ढूंढ़ा करती हैं। सुन्दर वनमें घुसा हुआ भी ऊंट कांटोंको ही ढूंढ़ा करता है? पुराणरूप समुद्रका मन्थन करनेपर कहीं अमृत भी मिल सकता है, कहीं विष वा मद्य भी। कौन क्या चाहता है, यह उसकी प्रकृतिसे ही जाना जाता है। जोंक स्तनसे भी गन्दी लहू ही पीती है, दूध नहीं। महाशय! अपने दृष्टिकोणको यदि विशाल किया जाय; तो देवलोकमें अपनी दुर्बलताएं वा दुशंकाएं न दीखेंगी, किन्तु "कामसे सावधान रहो, स्त्रियोंसे तो बहुत ही सावधानीसे रहो, अति कहीं भी अच्छी नहीं होती" इत्यादि बड़ी शिक्षाएं मिलेंगी। मनको यदि निष्पाप रखा जावे; तब देवतावादरूप दहीसे माखन निकलेगा। पुराण किसीने बनाये नहीं हैं; वे तो मन्त्र ब्राह्मणात्मक वेदोंके अर्थवादरूप भाष्य हैं; उन्हींकी व्याख्याएं हैं जो वेदके अर्थवादात्मक ब्राह्मणभागके ही रूपान्तर हैं। अर्थवाद कहीं रोचक होते हैं, कहीं भयानक; कहीं अनुवाद-रूपसे यथार्थ होते हैं; उनका वास्तविक तात्पर्य दूरदर्शिनी बुद्धिसे निकल सकता है, आपाततः नहीं। उनमें हमारे ईर्ष्या, असत्य, छद्म, परदारहरणप्रवृत्ति तथा दम्भ नहीं हैं। अथवा आपकी बात टीक भी है। हम यदि अपने मनमें इन्हीं दम्भ आदिको रखते हैं; तो पुराणोंमें भी वैसा ही दीख सकता है। इस अर्थमें वे दर्पण (शीशा) हैं।

आगे आप लिखते हैं—'पुराण हमको बताते हैं कि—देवोंका यही स्वरूप है, हमको ऐसी शिक्षा देकर भी यह आक्षेप किया जाता है कि—आजकल कलिकाल है' यह आपका कथन ठीक नहीं। पुराण तो यह कहते हैं—न देवचरितं चरेत्'। पुराण—इतिहासका विषय प्रधानता-से लोकव्यवहारकी व्यवस्थापना नहीं; किन्तु लोक-वृत्तका प्रतिपादन ही उसका विषय है। लोकव्यवहारकी व्यवस्थापना तो धर्मशास्त्रका विषय है, जैसे कि—'न्यायदर्शन' के ४।१।६२ सूत्रके भाष्यमें लिखा है। 'व्यासस्मृति; भी यही कहती है—

'श्रुतिस्मृतिपुराणानां विरोधो यदि दृश्यते।
तत्र श्रौतं प्रमाणं तु द्वयोर्द्वैधे स्मृतिर्वरा॥

श्रुतिस्मृतिपुराणोंके विरोधमें श्रुति माननीय है। स्मृति और पुराणके विरोधमें स्मृति अधिक माननीय है। पुराणमें आपसे आक्षिप्त देवताओंकी कथाओंका उपसंहार भी हमें वैसा अनुकरण करनेके लिए प्रोत्साहित नहीं करता। 'यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः' (गीता ३।२१) इस वचनका उपवाद स्वयं ही गीतामें कहा है— तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यव-स्थितौ' (१६।२४)। तैत्तिरीयोपनिषद्में भी गुरुओंका यह उपदेश कहा गया है—'यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि' (१।११।२)। पुराण—इतिहासमें द्रौपदीके पांच पति होनेके उल्लेखसे क्या वह उसके पढ़नेवाली स्त्रियोंसे अनुकरणीय सिद्ध हो जावेगा? यदि नहीं; तब यदि कोई स्त्री वैसा करना आरम्भ कर दे; तो क्या यह कहना नहीं पड़ेगा कि—आजकल कलिकाल का जोर है। कथाएं पहले भी यही सुनते थे; उनका तो दुष्प्रभाव नहीं पड़ता था; अब लोग उन लोकविरुद्ध चरित्रोंका अनुकरण भी करने लग गये हैं। पुराणोंसे तो मानुषिक धर्मशास्त्रसम्मत चरित्र ही लेना चाहिये; उनसे अनधिकृत सारा चरित्र नहीं। तब इस स्त्री ने पांच पति क्यों बनाये—यहां कलिकी ही कृपा है—ऐसा कहना पड़ता ही है।

पुराण—इतिहासमें दुष्ट दुर्योधनके भी गुण दिखलाये गये हैं; सज्जन युधिष्ठिरके दोष भी। तो युधिष्ठिरके सत्पात्र होनेसे उसके उसमें वर्णित दोष भी क्या अनुसृत कर लिये जाएं? और दुर्योधनके असत्पात्र होनेसे उसके गुणोंको भी क्या छोड़ दिया जावे? वस्तुतः नाटकमें तो दृश्यकाव्य होनेसे नायकके सद्गुण ही दिखलाने पड़ते हैं; पर इतिहास वा जीवनचरित्रमें तो जिसके जो गुण वा दोष हैं; उन्हें दिखलाना पड़ता है, क्योंकि वह चरित्र अनुकरण के लिए उल्लिखित नहीं होता; किन्तु उसके

गुण—दोष लाभ—हानि दिखलानेके लिए रखने पड़ते हैं'। श्रीगान्धिजीके इतिहासमें दिखलाया गया है कि—'उनका विवाह १३ वर्षकी आयुमें हुआ, वे १६वें वर्षमें पिता बन बैठे' तो क्या यह उनके जीवन-चरित्र पढ़नेवालों के लिए अनुकरणीय हो जायगा ? नहीं। उनके जीवनचरित्रमें यह ऐसाका ऐसा रखना ही पड़ता है। परन्तु जब गान्धि-नाटक वा गान्धिकाव्य बनाना हो; उसमें यह नहीं दिखलाना पड़ता। अथवा दिखलाना भी हो तो अन्य ढंगसे दिखलाया जाता है, जैसे श्रीगान्धिजीके परमभक्त श्रीभगवदाचार्यस्वामीने अपने 'भारतपारिजात' महाकाव्यमें दिखलाया है; जिसका भाव यह है कि—छोटी आयुमें विवाह वा ब्रह्मचर्यभङ्ग बालकको क्या शारीरिक हानि पहुँचाता है, यह लोगोंको शिक्षा प्राप्त होजावे इससे श्रीगान्धिने छोटी आयुमें विवाह किया—' इत्यादि।

अब आप आगे उपसंहार करते हैं—"इसके कहनेका यह तात्पर्य नहीं है कि—मैं पुराणोंके पढ़ने—पढ़ानेका विरोधी हूं।" [इस बड़े आन्दोलनका अन्य क्या अर्थ है ?] पुराणोंमें हमारी अपार सांस्कृतिक निधि सुरक्षित है, उसमें धर्म और मोक्षसम्बन्धी अमूल्य उपदेशरत्नोंका भण्डार भरा पड़ा है"।

आप इसी बातका प्रचार क्यों नहीं करते ? अपने ही अनुसार क्यों नहीं विचारते कि—अग्निके साथ धुवां भी हुआ करता है, जो आंखोंमें आंसू ले आता है। वह भी आंखोंका मैल निकालनेके लिए ही होता है। गुलाबके फूलके साथ कांटा भी हुआ करता है, जो उसकी रक्षा करता है। चन्द्रमाके साथ कलङ्क भी होता है, जो उसकी शोभा वृद्ध्यर्थ होता है। परन्तु क्या आप लोग अग्निसे धुवां, गुलाबसे काण्टा, और चन्द्रमासे कलङ्क हटानेके अधिकारी हैं ? यदि नहीं; तब आप कैसे कहते हैं कि—"परन्तु इसके साथ ही बहुतसा कूड़ाकचरा भी मिल गया है। उनमें जो रत्न हैं, उनका संग्रह करना चाहिये, परन्तु कूड़ेका बहिष्कार भी करना चाहिये'।

आपको स्मरण रखना चाहिये कि—कूड़ेमें भी सूक्ष्म-रत्न छिपे रहते हैं। यदि बिना देखे—भाले वह कूड़ा फैंक दिया जाय; तो वहां सूक्ष्म रत्नोंसे भी हाथ धोना पड़े। इसके अतिरिक्त दृष्टिकी मन्दतासे भी सूक्ष्मरत्न-कणिकाको मन्ददृष्टिवाले कूड़ा समझ लिया करते हैं। वस्तुतः आक्षेप्ताओंकी आंखोंपर अंग्रेजी संस्कारकी मैल जमी होनेसे रत्नकणिका भी कूड़ा दीख पड़ती है; परन्तु जब उस मलको अपरेशनद्वारा हटाया जाता है, तब वही कूड़ा सुवर्णकी मट्टी दीख जाती है, जिसका गिराना ठीक सिद्ध नहीं होता; उसकी भी मूल्यवत्ता प्रतीत होती है; पर यह तब हो सकता है जब आक्षेप्तागण उस सोनेकी मट्टीके पहचाननेमें अधिकारी होवें।

श्रीसम्पूर्णानन्दजीका यह लेख—"यह मानना कि सारे पुराण व्यासजीके लिखे हैं वा कहे हैं—व्यासजीका उपहास करना है" अङ्ग्रेजी दृष्टिकोणके अनुसार है। हम भी यह नहीं कहते कि—पुराणोंको व्यासजीने बनाया है। जैसे उन्होंने वेदका व्यास किया है; निर्माण नहीं; वैसे अनादि सिद्ध पुराणज्ञानकाभी विभाग किया है। भगवद्-गीताके अध्याय भी उन्होंने १८ रखे। महाभारतके पर्व भी १८ रखे। इस प्रकार पुराण, उपपुराण और औप-पुराण भी १८ रखे। महाभारतीय सेनाकी संख्या भी रखी १८ अक्षौहिणी। युद्ध भी कराया १८ दिनों तक। यह व्यासजीकी शैली है। श्रीव्यास पुराणोंके सम्पादक और परिष्कारक हैं; निर्माता नहीं। निर्माता तो वे इस प्रकार कहे जाते हैं—जैसे सूत्रपाठ, वार्तिक, भाष्य आदिके यथास्थान निवेशकर्ता भी श्रीभट्टोजिदीक्षितको सिद्धान्त कौमुदीका कर्ता बताया जाता है। श्रीव्यास प्रत्येक द्वापर युगमें पुराणोंका संस्करण किया करते हैं, निर्माण नहीं।

स्वासा भरवौ करैं

ऐहो बंक लोचन विलोकन तिहारी तीखी
चुभी चित बीच कसक हरिवौ करैं।
अन्तर दरज धुकी धौंकनी धवनि
मानौ मदन सुनार घटराज गढ़वौ करैं॥
कहैं उर दाम तेरे गुनन समातहि
मेरे जान ताही के उफान परिवौ करैं।
मिल विछुरे हौ त्यों ही बिछुर मिलौगे
फिर याही एक आसापर स्वाँसा भरवौ करैं॥

—कुलशेखर

कैलाश मानसरोवर के सिद्ध योगियों से भेंट

एक सुप्रसिद्ध महात्मा की जबानी, आँखों देखी सत्य कहानी

(लेखक—भक्त श्रीरामशरणदास जी)

सारे विश्वमें यदि कोई सच्चा ईश्वरीय धर्म है तो बस वह एकमात्र सत्य सनातनधर्म है, वर्णाश्रमधर्म है इससे बढ़कर कोईभी धर्म नहीं है कि जो हमें ईश्वरका साक्षात्कार करा सके और हमें जन्म मरण के चक्करसे छुड़ा सके। भलेही कुछ दिन कुछ वर्ष कुछ जन्म इधर उधर टक्कर मारलो और मत, पंथ, मज़हब जो ईश्वरीय नहीं मनुष्यों के मनचले मस्तिष्कों की उपजहैं उनमें जा फँसो और भलेही आजके मनुष्योंकी बनाई पुस्तकों में मत्था खपालो पर अंतमें सबको हार मानकर सनातनधर्मकी शरणमें आना होगा और वेद शास्त्र, पुराणों की बातोंमें पूर्ण विश्वास कर शास्त्रानुसार चल अपना कल्याण करना होगा तभी वास्तविक सच्ची सुख शान्ति प्राप्त हो सकेगी अन्यथा नहीं। जो बात आज पुराणोंकी गप्पें बताई जातीहैं और जिन्हें पोपोंकी बनाई बताई जाती हैं एक दिन, एक समय ऐसा अवश्य ही आता है कि जब यह बातें अक्षर अक्षर सत्य माननी पड़ती हैं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमने अभी सन् १६५४ के अक्तूबरमें देखा है। भगवान् श्री श्यामसुन्दरकी असीम कृपासे जहाँ पिलखुवा हमारे स्थानपर जगद्गुरु शंकराचार्य, जगद्गुरुरामानुजाचार्य आदि धर्माचार्य और पूज्य करपात्रीजी, ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी, उड़ियास्वामी, महामंडलेश्वर गंगेश्वरानंद, परमहंस रामदेव आदि संत महन्त विद्वान् पधारे हैं वहाँ कभी-कभी जैनमुनी बौद्धलामा, आर्यसंन्यासी भी पधार जाया करतेहैं। अभी अक्तूबर सन् १६५४ में हमारे स्थान पर सुप्रसिद्ध आर्यनेता व आर्यसन्यासी महात्मा श्रीआनंदस्वामी सरस्वती जी महाराज! भूतपूर्व महाशय खुशहालचन्दजी मिलापवाले, पधारे थे। आप कैलाश मानसरोवरकी यात्रा करके अभी-अभी लौटे हैं और पिलखुवामें आपके तीन चार दिन तक गोवधके तथा हिन्दूकोडके विरोधमें तथा कैलाश मानसरोवर की यात्राके सम्बन्धमें बड़े ही महत्त्वपूर्ण भाषण हुये हैं जिन्हें सुनकर जनता गद्‌गद् हो गई। आपने कैलाश मानसरोवरकी यात्रामें बड़े-बड़े योगियों से जो भेंटकी और जो जो योगके अद्‌भुत चमत्कार देखे वह उन्होंने जहाँ हमें बताये वहाँ उन्होंने हज़ारों मनुष्योंके बीच सभामें अपने भाषणोंमें भी सुनाये और हमें कृपा करके लिखाये वह हम यहाँ पर दे रहे हैं। आशा है पाठक इन्हें ध्यानसे पढ़ने की कृपा करेंगे और इसमें जो गलती रह गई हो उसके लिये हमें क्षमा करेंगे और इन्हें पढ़कर पुराणोंकी सनातनधर्मकी बातों में विश्वास करेंगे। पूज्य महात्मा आनंदस्वामी सरस्वतीजी महाराज का सुनाया हुआ—

मानसरोवर की यात्रा का अद्‌भुत आनंद

मैंने अभी अभी कैलाश मानसरोवरकी यात्राकी है और मैं वहाँ से अभी लौट करके आया हूँ। कैलाशमानसरोवर में जाना मृत्युके साथ खिलवाड़ करना है। वहाँ पर ऐसी बरफ पड़ती है कि शरीर ठंडसे जम गया सा प्रतीत होताहै। मैं जब मानसरोवर और श्रीगौरीकुंड पर पहुँचा तो मेरे साथियोंने तो वहाँ पर जाकर स्नान नहीं किया और उनकी बरफमें ठंड अधिक होनेके कारण स्नान करनेकी हिम्मतही नहीं पड़ी पर मैं नहीं माना मुझे सबने मना कियाकि तुम भी स्नान मत करो नहीं तो आपको नमोनिया हो जायगा, मर जाओगे इसपर मैंने उनसे कहाकि जब यहाँ पर मेरी पार्वती माता ने, मेरी गौरीमाता ने इसमें स्नान किया है तो भला मैं इसमें स्नान क्यों नहीं करूँ? भलेही मैं यहाँ पर मर जाऊँ, मरूँगा तो पवित्र स्थानपर मरूँगा इससे बढ़ कर क्या सौभाग्य प्राप्त होगा पर मैं स्नान अवश्य ही करूँगा। मैंने अपने हाथसे बरफ हटाकर जब अपने कमंडलु से बरफ तोड़कर जल भरकर अपने एक हाथकी ओर डाला तो ऐसा ठंडा लगाकि मानों हाथही नहीं है और जब दूसरी ओर जल डालकर स्नान किया तो ऐसा प्रतीत हुआ

कि अब यह भी नहीं रहा है और जब अपने सर पर डाला तो सारा शरीर ही जैसे न रहा हो। मैं जब अपना कम्बल ओढ़कर वहाँ पर ध्यान करने बैठ गया तो मुझे बैठे ६-७ घण्टे हो गए ऐसा अद्भुत आनंद आया कि मुझे भान ही नहीं रहा कि मैं यहाँ पर कबका बैठा हूँ और मेरा मन एक दम एकाग्र होगया और जो सुख और आनंद मैंने सारे जीवनमें आज पाया ऐसा जीवनभर कभी नहीं पाया। तीर्थयात्रासे क्या लाभ है और क्यों की जाती है और स्थान का क्या प्रभाव पड़ता है यह मुझे आज अनुभव हुआ! गाईडने आकर जब मुझे अपने हाथोंसे झकोरा तब मुझे होश हुआ। मैंने गाईडसे कहाकि तूने मुझे क्यों छेड़ा मैं तो ऐसे आनंद में बैठा हुआ था कि जो कभी मुझे जीवन भर प्राप्त नहीं हुआ तूने यह विघ्न डाला? गाईडने कहा कि महाराज आपको बैठे ६-७ घंटे से भी अधिक होगये हैं अब दिन छिपने वाला है और बरफ भी पड़नी प्रारम्भ हो गई है अब और अधिक बैठे तो जम जाओगे और मारे जाओगे। मैंने कहाकि मुझे भलेही मर जाने दो पर ऐसा सुख कहाँ मिलेगा? उसने कहा महाराज! यहाँ पर मत मरो मेरी जिम्मेदारी है इसलिये उठो। मैं तब उठा। मैंने सारे पहाड़की ओर दृष्टि डाली देखा तो चारों ओर बस बरफ ही बरफ जमा हुआ था और वह शंकर का मन्दिर जैसा प्रतीत होता था। प्रतीत होता है कि यहाँके मंदिर वहीं की नकल करके बनाये गये हैं। मैंने वहाँ पर एक बड़ा ही दिव्य अद्भुत स्थान भी देखा कि जहाँ पर सारा पहाड़ तो बरफसे जमा है वहीं पर एक चारों ओर बरफके बीच ऐसा स्थान है कि जहाँ पर कुछ स्थानमें बिल्कुल ही बरफ नहीं है और वहाँ पर उतनीही जगहमें कभी बरफ नहीं जमता, यह वही स्थान है कि जहाँ पर श्रीशिवजी महाराज ने पार्वतीजी महारानी को बैठ अमरकथा सुनाई थी। मैंने अपने गाईडसे कहाकि तू मुझे वहाँ पर ले चल जहाँ पर शंकरजी महाराज ने पार्वतीजी को अमरकथा सुनाई है। उसने मुझसे कहाकि महाराज वहाँ पर कोई नहीं जाता है बहुत ज़्यादा बरफ है और वहाँ पर जानेका कोई रास्ता भी नहीं है। वह बहुत मना करता रहा पर मैं नहीं माना मैंने कहाकि मैं तो वहाँ पर अवश्य ही जाऊँगा। मैं वहाँ पर गया पर बड़े ही कष्ट से गया, कहीं बरफ से गिरा तो कहीं पैर फिसला, तो कहीं चोट लगी अन्तमें मैं जैसे तैसे करके वहाँ पर पहुँचही गया और मैं उस स्थान पर बैठकर आया कि जहाँ पर मेरी माता पार्वती बैठा करती थीं। वहाँ पर बैठतेही मेरा मन एकदम शांत होगया और एक प्रकार की समाधीसी लगने लगी। वहाँ से उतरने पर मैंने देखा कि एक मद्रासका साधु जो मद्रास से पैदल चलकर आया था, वह नहीं माना उसने कुंडमें स्नानके लिये छलांग लगा दी इससे वह ठंडके मारे बेहोश होगया और वह बेहोशीकी हालतमें वहाँ किनारे पर मुर्दा जैसा पड़ा हुआ था और उसके बचनेकी अब कोई आशा नहीं रह गई थी। हमने गाईडसे कहा और उस साधुको झब्बू पर लदवाया और उससे रस्सीसे बाँधकर बेहोशी की हालतमें ही नीचे लाया गया और तब उसे अग्निसे तपाया गया तब जाकर उसे कुछ होश हुआ। वहाँ पर लकड़ी जलाने को बिल्कुल भी नहीं मिलतीं वृक्षोंका भला वहाँ पर क्या काम? बकरियों की मैंगनीही वहाँ पर जलाई जाती हैं।

योगी प्रणवानंदजी महाराज का दर्शन और योग का अद्भुत चमत्कार

योगी श्री स्वामी प्रणवानंदजी महाराज मानसरोवरमें २० वर्षसे रहते हैं। मैं जब मानसरोवर पहुँचा और उनकी कुटियामें उनके दर्शन करनेके लिये घुसा तो मैंने देखा कि यह तो कोई मेरे पहिले देखे हुये पूर्वपरिचित से मालूम पड़ते हैं। मैंने एकदम कहा सोमयाजी! सोमयाजी! वह भी मेरी ओर देखने लगे। वह २० वर्ष पहिले जब लाहौर में रहते थे तब उस समय कुछ दिन तक मेरे पासमें रहे थे और वह राजनीतिमें भाग लिया करते थे। मैंने उन्हें जब इस बातका स्मरण कराया तो उन्हें भी याद आगया और उन्होंने मुझे बताया कि मैं २० वर्ष पहिले राजनीतिमें भाग लेता था और राजनैतिक नेताओंके साथ मिलकर काम करता था पर जब मैंने देखा कि राजनीतिमें भाग लेने वाले सभी नेताओं के चरित्र भ्रष्ट हैं तो मेरे मनमें उनके प्रति बड़ी ग्लानि हुई और मैं एकदम उनसे हटकर यहाँ पर चला आया तथा यहाँ पर रहकर योगाभ्यास करने लगा। जबसे बराबर यहीं पर रहता हूँ। मैंने जब उनसे पूँछा कि आपने योग में क्या क्या सीखा है और कहाँ तक आपकी गति

है ? तो उन्होंने मुझे दिखाया कि उन्होंने प्राणायाम द्वारा लम्बे लम्बे स्वांस लिये और पेट, छाती, टाँग, बाँह, सर सभी फुटबालकी तरह स्वाँस द्वारा फुला लिये और एकदम बैठे बैठे उनका आसन पृथ्वीसे अधर ऊपर उठ गया और ऊपर छत तक लग गया और फिर नीचे आ गया। यह उनके योगका चमत्कार मैंने अपनी आँखों से देखा है। और भी उन्होंने योगकी बहुत सी बातें बताईं जो सर्व साधारण के सामने नहीं बताई जा सकतीं।

प्रश्न—महाराज ! श्री स्वामी प्रणवानंदजी महाराज का यह कहना ठीक है कि राजनैतिक नेताओं के चरित्रभ्रष्ट हैं इसीसे मुझे इनसे घृणा हुई ?

उत्तर—क्या यह गलत है ? इनके चरित्रभ्रष्ट हैं इसमें क्या संदेह है ? जब एकबार लाहौर में पं० मोतीलाल नेहरू आये थे तो उस समय उनके साथ बड़ा सामान आया था। कितने ही साथमें ट्रन्क थे बिस्तरे थे, बड़े बड़े सामान थे। जब उनका सामान उतारा जा रहा था तो एक बिस्तरा खुल गया तो उसमें से शराबकी बोतलें निकल पड़ीं यह सब भ्रष्टता नहीं तो क्या थी ? आजके यह नेता लोग कहते हैं कि चाहे मनुष्यका व्यक्तिगत जीवन कैसा भी हो इससे क्या है हम देशकी सेवा करते हैं। यदि हम विषय भोग न करे तो हमारा मन कैसे बहले ? ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें हैं जो यह कहते हैं। भला जिसका चरित्र स्वयं ठीक नहीं वह भला दूसरों का क्या उद्धार करेगा और देश का क्या भला करेगा ?

देखते देखते अदृश्य होजानेवाले योगी का दर्शन।

मुझे यात्रामें लौटतीबार एक दूसरे सिद्धयोगी मिले और उनका जहाँ मुझे दर्शन हुआ वहाँ उनसे मेरी खूब बातें भी हुईं। संध्या का समय था और बरफ भी पड़ रही थी। सब साथी अपने-अपने तम्बुओं में बैठे हुये थे। मैं अपने तम्बू से बाहर निकला और कहने लगा कि सुना करतेथे कि कैलाश में बड़े-बड़े सिद्ध योगी महात्मा रहते हैं पर यहाँ पर तो हमें कोई मिला नहीं। इतने में मैं क्या देखता हूँ कि वहाँ पर मेरे देखते देखते मेरे सामने एक सिद्धयोगी प्रकट हुये और मेरे सामने खड़े होगये। इनके सारे शरीर पर भस्म लगी हुई थी और बड़े ही सुन्दर प्रतीत होते थे। मैंने उन्हें नमस्कार किया उन्होंने मुझे अपनी छाती से अपने हृदयसे लगा लिया और मुझसे कहा कि तुम जो कहते थे कि यहाँ पर कोई योगी नहीं मिलते सो योगी मिलें कहाँसे योगी की कोई खोज भी तो नहीं करता ? इतने में मैंने देखा कि वह देखते देखते एकदम अदृश्य होगये। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसे पहाड़ोंपर जहाँ कि बरफ पड़ रही है और वृक्षों का नाम भी नहीं और कोई मनुष्य भी नहीं रहता यह यहाँपर कैसे रहते हैं ? मुझे लगा कि कहीं मैंने यह स्वप्न तो नहीं देखा है ? मैंने अन्दर अपने तम्बू में आकर टार्च जलाकर रोशनी करके देखा तो सचमुच मेरे कपड़ोंपर योगीके शरीर की भस्म लगी हुई थी जिससे मुझे निश्चय होगया कि यह स्वप्न नहीं था वरन् यह बिलकुल सत्य घटना थी।

दूसरे दिनकी योगीसे भेंटवाली घटना।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने अपने गाईड शीश खम्भाजी से कहा कि शीशखम्भाजी क्या यहाँ पर कोई योगी महात्मा रहते हैं ? शीशखम्भाजी ने कहा कि एक योगी रहते तो हैं। मैंने कहा कि मुझे उनका दर्शन कराओ। शीशखम्भाजीने कहा कि महाराज वह जो उनके पास जाता है उसे खाजाते हैं। मैंने कहा कि भले ही खाजाँय पर तुम हमें उनका दर्शन कराओ। उसने कहा कि महाराज मेरी हिम्मत नहीं है कि मैं वहाँ पर जाऊँ वह मुझे जाते ही खा जायगा। मैंने कहा कि तुम मुझे वहाँ का रास्ता बताओ मैं स्वयं वहाँ पर चला जाऊंगा। वह बहुत मना करता रहा और अंत में मेरे बार बार आग्रह करनेपर वह कुछ दूरी पर दूरसे ही रास्ता बताने को तैयार होगया। मेरे साथ वह कुछ दूर चला और बोला कि महाराज ! वह यदि तुम्हें खागया तो हम जिम्मेदार नहीं हैं। मैंने कहा कि वह चाहे मुझे भले ही खा जाय तुम इस बात की चिन्ता मत करो मुझे उनके स्थान की पहिचान बताओ। उसने दूरसे हाथ का निशाना करके बताया कि सीधे कुछ दूरीपर चलनेपर नीचे की ओर एक इस प्रकार का पत्थर आयगा उसके पास एक और पत्थर है उसे हटा

देना उसी गुफा में अन्दर योगी रहता है। वह ऐसा बताकर पीछे हट गया। मैं धीरेधीरे वहीं पर पहुँच गया और मैंने जाकर वह पत्थर हटाया और देखा तो वह रात्रीको दर्शन देनेवाले योगी भस्म रमाये हुये बैठे हुये हैं। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझे अन्दर गुफा में बुला लिया। अबतो मेरी उनसे खूब बातें हुईं। मैंने उनसे पूँछा कि महाराज क्या यह बात सत्य है कि आप जो आपसे मिलने आता है उसे खाजाते हैं? उत्तरमें उन्होंने मुझसे हंसते हुये कहा कि क्या मैं राक्षस हूँ कि जो मनुष्य को खाजाता हूँ? कोई मनुष्य हमारेपास न आने पाये इसीलिये यह डर दिखाया हुआ है और कोई बात नहीं है। इधर तो हमारी उनसे योग के सम्बन्ध में बातें होती रहीं और बहुतसी ऐसी भी बातें हुईं कि जिन्हें उन योगीने किसी दूसरे मनुष्यको बतानेसे मनाकर दिया इसलिये हम वह बातें बतानेसे मज़बूर हैं किसीको भी हम बता नहीं सकते कि उनकी हमारी क्या बातें हुईं गुप्त बातें हैं? और उधर दूसरी ओर बहुत देरी होनेके कारण हमारे साथियोंमें हमारे न आनेके कारण चिन्ता सवार हुई कि हो न हो इन्हें योगीने खालिया होगा। वह दूरसे हमारा नाम ले लेकर आवाज़ दे रहे थे उनकी इतनी हिम्मत नहीं कि जो पासमें आसकें। हमें इसका कुछ भी पता नहीं था। योगीने वहीं बैठे बैठे हमसे कहा कि अच्छा तुम जाओ तुम्हें तुम्हारे साथी बहुत याद कर रहे हैं और तुम्हारे न जाने के कारण बड़ी चिन्तामें हैं और बड़े परेशान होरहे हैं, व्याकुल होरहे हैं। मैंने कहा कि महाराज! आपको कैसे मालूम आप तो यहाँ पर बैठे हुए हैं? उन्होंने कहा कि मुझे यह कैसे मालूम पड़ गया था कि रात्रि को जब तुमने यह कहा था कि यहाँ पर योगी नहीं मिले कोई योगी नहीं रहते मैंने उसी समय प्रकट होकर तुम्हें दर्शन दिये थे। हमें भूत, भविष्य, वर्तमान सबका ज्ञान है और हमें अमरीका, इग्लैण्ड, रूस, हिन्दुस्थान में क्या होरहा है इसका भी सब पता है? मैं उन्हें नमस्कार करके अपने स्थन पर आया तो आकर मैंने देखा तो मेरे साथी वास्तवमें मेरे कारण बड़े घबड़ाये हुये हैं और बड़े ही चिन्तित हैं। मुझे जिन्दा वापिस आया हुवा देखकर वह बड़े ही प्रसन्न हुये। मैंने इन योगी से भेंट करके अपने जन्म को सफल माना और मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

जीवात्मा का दर्शन करानेवाले लामायोगी से भेंट।

मैंने वहाँपर बहुतसे बौद्ध तामसिक सिद्धिवाले साधु भी देखे कि जो कच्चा मांस तक खाजाते हैं वह तामसिक होते हैं और उन्हें तामसिक सिद्धियां होती हैं। मुझे वहाँ पर ऐसे ऐसे बौद्धलामा योगी भी मिले कि जो मांस बिल्कुल भी नहीं खाते और बहुत बड़े योगी हैं। मैं एक बहुत बड़े बौद्ध लामा योगी के पास दर्शन करने गया। वह बौद्धलामायोगी न तो हमारी भाषा जानते हैं और न समझते हैं और न हम उनकी भाषा जानते हैं, समझते हैं। बातें हों तो कैसे हों यह समस्या हमारे सामने आई। एक दुभाषिया बुलाया गया जिसने हमारी बातें उनको उनकी भाषामें करके और उनकी बातें हमको हमारीभाषा में करके बताई इस प्रकार उनकी हमारी खूब बातें हुईं। हमने जब उनसे कुछ योग के सम्बन्ध की गुप्त बातें पूँछी तो उन योगीने कहा कि यह दुभाषिया अनधिकारी है इसके सामने यह बातें नहीं बताई जा सकतीं इसलिये इसे यहाँ से हटादो। हमने उसे वहाँसे हटा दिया। अब जो बातें बताना चाहते थे वह कैसे बतायें भाषा तो एक दूसरे की समझते नहीं। हमने फिर दुभाषिये को बुलाकर कहाकि इनसे कहो कि वह हमसे यौगिक भाषा में बातें करें जिससे हम एक दूसरे की बातें अच्छी तरह से समझ सकेंगे। उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया इसलिये दुभाषिये को वहाँ से पुनः हटा दिया गया और फिर उनकी हमारी यौगिक भाषा में बातें होती रहीं। उन्होंने प्राणायाम द्वारा अपने शरीर और छाती को फुलाया और हृदय स्थानके पास चमकती जलती मणिके रूपमें अंगूठे के बराबर जीवात्मा का दर्शन कराया जिसका दर्शन करके बड़ा ही आनंद प्राप्त हुआ।

और भी बहुतसे योगी मिले पर उन्होंने अपने सम्बन्ध में किसीको भी कुछ भी बतानेसे मना कर दिया इसलिये हम उनके सम्बन्ध में किसीको भी कुछ नहीं बता सकते।

४–उत्तर काशी के एक योगी से भेंट।

उत्तरकाशी में मैं प्रतिवर्ष चार महीने पाँच महीने जाकर रहा करता हूँ। वहाँ पर बड़ा जाड़ा पड़ता है, बरफ पड़ती है पर फिर भी वहाँ पर कई ऐसे महात्मा रहते हैं कि जो सर्दी की, बरफ की तनिक भी परवाह न करके बिल्कुल नग्न रहते हैं और लंगोटी तक भी नहीं बाँधते। श्रीस्वामी कृष्णाश्रमजी महाराज, श्रीस्वामी रामानंदजी महाराज, दूसरे रामानंदजी महाराज ऐसे कई महात्माओं को हमने देखा है कि जो सर्दी में बरफ में भी नग्न रहते हैं। एक बार एक अँग्रेज़ और उसकी पत्नि दोनों उत्तरकाशी में आये हुये थे और मुझे मिले थे उन्होंने मुझसे उत्तरकाशी के किसी योगी का दर्शन कराने को कहा। मैं उन्हें अपने पास स्वामी श्री रामानंद जी महाराज के पास ले गया। उस दिन जाड़ा भी खूब पड़ रहा था और बरफ भी खूब पड़ रही थी। इतने जाड़े में, बरफ में भी श्रीस्वामी रामानंदजी महाराज बिल्कुल नग्न एक पत्थर पर बैठे हुये थे और वह उस दिन मौन भी थे। उस अँग्रेज़ पति पत्नीने जब स्वामीजीका दर्शन किया और उन्हें ऐसे जाड़ेमें, बरफमें भी बिल्कुल नग्न बैठे हुए देखा तो वह आश्चर्य-चकित होगये। वह दोनों पतिपत्नी खूब ऊनी कोट, बूट डाटे हुये थे पर तब भी वह जाड़े से ठिठुर रहे थे और इधर स्वामी रामानंदजी के वस्त्रों का नाम भी नहीं तब भी वह प्रसन्नता से बैठे हुये थे। उन अँग्रेज़ पतिपत्नीने स्वामीजी महाराजसे प्रश्न किया कि महाराज क्या कारण है कि जो आपको इतनी सर्दी में भी सर्दी नहीं लगती? श्रीस्वामी रामानंदजी महाराजने देखते देखते भद्रा प्राणायाम किया तो सबने क्या देखा कि आपके शरीरसे इतनी ठंडमें भी पसीने चू रहे हैं। उन्होंने कहा कि तुम ठंड बता रहे हो यहाँ गर्मी मालूम पड़ती है देखो मेरे सारे शरीरसे पसीने चू रहे हैं। यह योग का अद्‌भुत चमत्कार देखकर सभी चकित होगये और वह अँग्रेज़ दम्पति दोनों ही बड़े प्रभावित हुए।

सन् १९५७ में विश्वव्यापी युद्ध होने की भविष्यवाणी

प्रश्न— महाराजजी आज चारों ओर पाप ही पाप हो रहा है क्या होगा?

उत्तर—सारे विश्व का विनाश होगा और खूब मारकाट होगी। मैं प्रतिवर्ष जाकर उत्तरकाशीमें ९ महीने रहा करता हूँ, गंगोत्रीमें रहा करता हूँ और मैं वहाँके सभी प्रसिद्ध प्रसिद्ध योगियोंसे, संत महात्माओंसे मिला करता हूँ। मुझे एक ऐसे महात्मा भी मिले थे कि जो १९-२० वर्षके पश्चात् हिमालयके पहाड़ोंसे तपस्या करके नीचे उतरे थे। सभीने मुझे यह बताया कि सन् १९५७ से विश्व व्यापी युद्ध प्रारम्भ होगा, विश्वका विनाश होना प्रारम्भ होगा और खूब मारकाट होगी और संवत् २०१८ तक बड़ा ही घोर भयानक समय रहेगा। बादमें जाकर तब कुछ शान्ति होगी। अब पापका घड़ा पूरा पूरा भरने ही वाला है बस यह एक दम फूटेगा और प्रलय जैसा दृश्य उपस्थित कर देगा। आज जो चारों ओर कहींपर गोवध होरहे हैं, तो कहींपर बंदर मारे जारहे हैं, तो कहीं अण्डे मांस मछली खानेके प्रचार होरहे हैं, तो कहीं हिन्दू-कोडबिल, तलाकबिल बनाये जारहे हैं बस अब पापका घड़ा भरने ही वाला है। कलियुग का समय है जो भी अनर्थ होजायँ थोड़े हैं।

प्रश्न—महाराजजी कोई शान्ति का ऐसा उपाय नहीं है कि जो शान्ति हो?

उत्तर—पहाड़ोंसे जो १९-२० वर्षके पश्चात् एक महात्माजी नीचे उतरे थे उन्होंने मुझे यह बताया था कि सारे विश्व का विनाश होनेवाला है और सब जगह मार-काट और हाहाकार मचनेवाला है। यदि यज्ञमें पौने दो करोड़ मंत्र की आहूती दी जाय तो भारत की किसी अंशमें रक्षा हो सकती है। श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराज शायद् ७९ लाख के लगभग यज्ञोंमें आहूती डलवा चुके हैं और ८१ लाख आहुती देहरादून के तपोवन आश्रमके अधिष्ठाता बाबा श्रीगुरुमुखसिंहजी डलवा चुके हैं। अब जो पौने दो करोड़ में से बाकी बची हैं यदि वह भी डलवा दी गई तो भारतकी कुछ अंशमें रक्षा होजायगी नहीं तो सब देशों की भाँति इसका भी विनाश हो जायगा।

योग का विज्ञान-साइन्स-ही पूर्ण है और नहीं।

यह हमारे लाहौर की आँखोंदेखी बिल्कुल सत्य घटना

है। एक योगी तथा लाहौरके एक अच्छे प्रसिद्ध ऐलोपैथीके डाक्टरमें जो बातचीत हुई वह सब इस प्रकार से है—

डाक्टर योगीसे कहनेलगा कि आपका योग तो एक ढ़कोसलामात्र है और यह हमारी मैडिकलसाइन्स पूर्ण है। इसपर योगीने कहा—

योगी—मैं आपके मैडिकलसाईन्सके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहता परन्तु यह जानता हूँ कि योग की साइन्स जैसी पूर्ण साइन्स आजतक कहींपर भी तो दिखलाई नहीं दी। और योगकी साईन्स के समक्ष आधुनिककाल की मैडिकल साइन्स अधूरी है।

डाक्टर—कैसे?

योगी—सुनिये आपकी मैडिकल साइन्स यह कहती है कि जब मनुष्य की नाड़ी बंद होजाती है तो मनुष्य मर जाता है क्या यह ठीक है?

डाक्टर—जीहाँ यह तो सत्य है कि नाड़ी बंद होनेपर मनुष्य मर जाता है।

योगी—परन्तु हमारी योगकी साइन्स यह कहती है कि वह नहीं मरता।

डाक्टर—कैसे?

योगी—देखिये अच्छीतरहसे देखिये।

डाक्टर—दिखाइये।

योगीने अपनी नाड़ी डाक्टरसाहबके हाथमें देदी और डाक्टरसाहब से कहा कि देखिये डाक्टरसाहब हमारीनाड़ी चलती है या बंद है?

डाक्टर—चल रही है।

योगी—हमारी नाड़ीपर हाथ रक्खे रहिये और जब नाड़ी बंद होजाय तब हमें बतला दीजिये।

डाक्टर—बहुत अच्छा महाराज।

आधेही सेकेन्ड के पश्चात् डाक्टरसाहब कहनेलगे कि महाराज नाड़ी बंद होगई है।

योगी—अब डाक्टरसाहब बताइये कि मैं अब मर गया हूँ या मैं अब जीता हूँ?

डाक्टर आश्चर्यचकित होकर—महाराज यह क्या बात है?

योगी—यह वही बात है कि जहाँ पर आपकी मैडिकल साइन्स समाप्त होती है वहाँ पर हमारी योगकी साइन्स प्रारम्भ होती है।

डाक्टर—ठीक महाराज बिल्कुल ठीक।

योगी—डाक्टरसाहब बतलाइये कि हृदयकी गति बंद होजाने पर मनुष्य फिर जीवित रहता है या वह फिर मृत्यु का ग्रास बन जाता है।

डाक्टर—महाराज हृदयकी गति बंद होनेपर तो मृत्यु आही जाती है तब भला मनुष्य जीवित कैसे रह सकता है?

योगी—नहीं हृदयकी गति बंद होनेपर भी मनुष्य जीवित रह सकता है। आओजी मैं आपको यह भी करके दिखाता हूँ।

डाक्टर—दिखाइये महाराज!

योगीने सबके सामने डाक्टर साहब के ऑपरेशनटेबिल पर लेटते हुये कहा कि डाक्टरसाहब १५ मिनिट तक मुझे अपनी क्रियायें करने देना और तत्पश्चात् ललाटचक्र (मस्तिष्क) से नीचे नीचे शरीर को देखना कि इसमें जीवन है या नहीं।

डाक्टर—बहुत अच्छा महाराज!

१५-१६ मिनिट के पश्चात् डाक्टरने अपनी हृदयकी गति को देखनेवाला यंत्र निकाला और उस योगीके सारे शरीर की उसने परीक्षा ली। डाक्टरसाहबने कहींपर भी उनमें जीवन का कोई भी चिन्ह नहीं पाया। अंत में डाक्टरसाहबने योगी की आँखों की पलकें हटाकरके भी देखा कि आँखों की पुतलियाँ भी घूम चुकी थीं। यह देखकर डाक्टर बड़ी जोरसे सहसा पुकार उठा सर्वथा मुर्दा शरीर अब इसमें जान नहीं है।

इतनेमें ही योगीने अपनी आँखें खोलदीं और डाक्टर-साहब से कहा—

योगी—देखिये डाक्टरसाहब अब आपके सामने यह मुर्दा शरीर बोल रहा है कहिये क्या कहते हो? कहाँ गई तुम्हारी साईन्स?

अब तो यह देखकर डाक्टर चकित होगया और कहने लगा कि यह क्या बात है? योगी बैठ गया और मुस्कराकर कहने लगा कि जिसे आपने मुर्दा सिद्ध किया था वही मुर्दा आपसे बोल रहा है। सुनिये आपने पूछा

कि यह क्या बात है सो यह वही बात है कि जहाँ आपकी मैडिकल साइन्स समाप्त होती है वहाँ हमारे योग की साइन्स प्रारम्भ होती है। योगदर्शन और हठयोग प्रदीपिका-योग इतना पूर्ण है कि जिन बातों को संसारीलोग असम्भव समझते हैं और जिन बातोंको आजके अँग्रेज़ साइन्सवाले नामुमकिन बतलाते हैं राज तथा हठयोग के योगी उसे सबके सामने सत्य सिद्ध कर देते हैं।

डाक्टर को श्रद्धासे अपना सर झुकाकर योगीके श्री-चरणोंमें झुकना पड़ा और शास्त्रों की बातें अक्षर अक्षर सत्य हैं यह मानना पड़ा।

पाठको यह सब घटनायें पूज्य आनंदस्वामी सरस्वतीजी महाराजके मुखसे सुनकर ही हमने लिखी हैं, होसकता है कि कोई भूल रहगई हो उसके लिये हम क्षमा चाहते हैं। यह सब सत्य घटनायें आर्यसमाज के प्रमुख मान्यनेता भूतपूर्व महाशय खुशालचंदके मुखसे सुनकर भी क्या आप अब भी पुराणों को पोपों की बात बताने धृष्टता करेंगे ? और भी बड़ी बड़ी विचित्र घटनायें आपने बताई हैं, जो आगामी अंकों में दी जायेंगी।

ज्योतिष में मूल्यवान् रत्नों का महत्त्व

[लेखक—श्री बी० वी० रमन डी. एस. सी. एफ. आर. ए. एस. सम्पादक–'दी एस्ट्रालाजिकल मेगजीन']

विश्वके विभिन्न भागोंसे हमारे पास इस आशयके प्रश्न उत्तर देनेके लिए आते हैं, क्या मूल्यवान रत्नों, जैसे, हीरा, माणिक्य, मरकत, आदि का इनके पहनने वालों पर कोई प्रभाव पड़ता है, क्या वे किसी विशेष ग्रह के अधीन होते हैं; क्या इन रत्नोंसे जड़ी अंगूठी पहननी चाहिए, और रत्न अंगूठीके किस भागमें किस ओर जड़ना चाहिए ? रत्न केवल आभूषणके रूप में ही नहीं, वरन् ग्रहोंके कुप्रभावके निवारणार्थ भी पहने जाते हैं। सौर शक्तिके महान् दबावके नीचे मूल्यवान रत्नोंका निर्माण होता है। (सौर-शक्ति=शब्द, ताप, प्रकाश, चुम्बक, विद्युत आदि)। ये बहुत सूक्ष्म हैं पर हैं ये अत्यधिक शक्ति-शाली और उग्र। वैज्ञानिक रत्नोंमें सूर्य द्वारा निर्मित धात्वीय और अधात्वीय तत्वों को रंगों द्वारा पहचानते हैं और यह उनका एकमात्र सच्चा और अभ्रामक साधन है। चूंकि रत्नोंका निर्माण सौर-शक्तिके भारी दबावके नीचे होता है, अतः इनमें विभिन्न ग्रहोंकी शक्ति निहित रहती है। यथाः—यह माना जाता है कि शनि 'नीलम' का अधिपति है। इसका अर्थ है कि शनिकी शक्ति रत्नमें संगृहीत या केन्द्रित हैं, और जब उस रत्नको अंग पर धारण किया जाता है, तब कुछ निश्चित व विशेष परि-स्थितियों में वह अपने में निहित शक्ति को मुक्त करता है। इस प्रकारके बहुत से विचार हमको विचित्र प्रतीत होते हैं, किन्तु उनका विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इसका मूल रत्नके आन्तरिक गुणमें, या उसके प्रतीकात्मक महत्त्व की सहज अनुभूति में है; और विभिन्न एवं विविध परिवर्तनोंके होने पर भी आज यह प्रतीकता विद्यमान है।

हम सब यह जानते हैं कि छायाका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है, यह किसी वास्तविक वस्तु द्वारा डाली जाती है। इसलिए रत्नोंके तिलस्मी प्रभावके विषयमें फैला विश्वास कितना ही विचित्र और मूर्खतापूर्ण प्रतीत हो, यह तो स्वीकार करना ही होगा कि इस प्रकारके विश्वासके लिए एक निश्चित आधार है। यथा–प्राचीन-काल में 'पुष्पराग' के बड़े बड़े खण्डों को गरम किया जाता था और प्रसूतिके समय स्त्रियोंको वह दिया जाता था। प्राचीन लेखोंमें लिखा विद्यमान है कि 'पुष्पराग' रत्नके

सेवन से प्रसूतिके समय अनेक स्त्रियोंके प्राण बचे। इसका एक स्पष्ट कारण है। 'पुष्पराग' रत्न को जब गरम किया जाता है, तब वह निरन्तर विद्युत लहर को छोड़ता है। प्राचीन लोग इस बात को जानते थे कि मानवके लाभके वास्ते विद्युतका कैसे व्यवहार करना चाहिए। साधारण इस प्रकारके वैज्ञानिक महत्त्व को नहीं समझ सकते। अतः काव्यमयी भाषा का प्रयोग किया गया है। प्राचीन हिन्दू, बैबीलोनी आदि स्वास्थ्य रक्षाके लिए वैदूर्य मणि को तावीजके रूप में बाँधते थे। उनका विश्वास था कि यह मणि आनेवाले रोगकी पहले से सूचना दे देती है। वैदूर्य मणिके रंगोंके बदलने से यह जाना जाता था कि कौनसा रोग अब आनेवाला है। प्रत्येक व्यक्ति यह मानेगा कि त्वचा (साधारणतः तावीज (यंत्र) यही बाँधा जाता है) से बीमारीके पहले दिनोंमें प्रभूतमात्रा में विष निकलता है। त्वचा सूख जाती है, जैसे ज्वरमें, या त्वचा आर्द्र हो जाती है, जैसा कि श्लेष्मा (जुकाम) में होता है। वैदूर्य मणि सछिद्र होता है, अतः उस पर इन परिवर्तनों की क्रिया-प्रतिक्रिया होती है। शरीरके तापमान या शरीर की आर्द्रताके परिवर्तनके साथ इसका रंग और वर्णभी निश्चित रूपसे बदलता है। प्राचीन लोगोंको वैदूर्यमणि के सछिद्र और झरझरा होने का पता था।

इस उदाहरण से यह प्रकट है कि बहुतसे पुराने विश्वासों का कोई न कोई आधार है। हमें पता है कि कुछ रत्नोंके रंगका ही उसको पहननेवाले की त्वचा पर शान्ति-दायक प्रभाव पड़ता है। दैवीय स्रोतोंसे प्राप्त शक्तिको मूल्यवान रत्न अपनेमें संचित रखते हैं और उसको कायम रखते हैं। रत्नोंमें यह धारणाशक्ति होती है, अतः वे ईथर-कम्पन उत्पन्न करते हैं और लाभदायक एवं गुणकारी शक्तियोंके प्रेषणके अच्छे माध्यम होते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि उपयुक्त रत्न धारण करने से, जो जन्मका अधिपति हो, या उस ग्रह से सम्बन्धित हो जिसकी 'दशा' चल रही है, के कुप्रभाव और अशुभका प्रतिकार होता है और शुभ एवं मंगलकी वृद्धि होती है। सूक्ष्म शक्ति जन्म-राशि से निकलकर रत्नमें जाती है और फिर वहाँसे प्रकाशकी किरणें निकलती हैं।

'रस जयनिधि' नामक ग्रन्थ हिन्दू रसायन शास्त्रका एक अनमोल ग्रन्थ है। इसमें विभिन्न रत्नों, उनकी शुद्धि करने, उनका संस्कार करने और उनका चुनाव करने के विषयमें विस्तार से वर्णन दिया गया है। इस महान् ग्रन्थ के रचयिता की विद्वत्ता और उसके अगाध ज्ञानसे पाठक विस्मय विमुग्ध हो जायेंगे। इस ग्रन्थको ध्यानसे अवलोकन करने पर आधुनिक वैज्ञानिकों (विशेषतः भारतीय वैज्ञानिकों) के भारी अज्ञानका प्रमाण मिल जाता है। साथ ही इस बातका भी ज्ञान होता है कि प्राचीन हिन्दुओं ने रसायनशास्त्र में कितनी अधिक उन्नति की थी। रत्नों के विषय में विस्तृत वर्णन इन ग्रन्थों में भी उपलब्ध होता है—(१) बृहत् संहिता, वराहमिहिर; (२) युक्तिकल्पतरु, भोजराज; (३) विष्णुधर्मोत्तर पुराण (४) अग्निपुराणम् और (५) रत्न शास्त्रम्, ऋषि अगस्त्य।

शुभ रत्न समृद्धि प्रदान करता है और अशुभ रत्न दुःख और शोक लाता है। अतः इस विज्ञानके पण्डित का रत्नों के चयन में परामर्श लेना चाहिए। ज्ञात रत्नोंमें से निम्न रत्न उच्चकोटि के माने जाते हैं:—
(१) पद्मराज, (२) इन्दुनील, (३) मरकत, (४) पुष्पराग और (५) हीरक।

निम्न रत्न ग्रहोंको प्रिय हैं और समृद्धि प्राप्त करने और ग्रहोंके प्रभावका विरोध करनेके लिए इनको ही धारण करना चाहिए—

ग्रह	रत्न	अंग्रेजी नाम
सूर्य	माणिक्य	रूबी
चन्द्र	मुक्ता	पर्ल
मंगल	प्रवाल	कोरल
बुध	मरकत	एमेराल्ड
बृहस्पति	पुष्पराग	टोपाज
शुक्र	हीरक	डायमंड
शनि	नीलमणि	सैफायर
राहू	गोमेदम्	जीरकान
केतु	वैदूर्यम्	कैट्सआई

'रसराज निधि' में इस प्रकार कहा गया है:—पारद की वस्तुयें बनाने में सर्वोत्तम तथा सर्वोच्चकोटिके रत्नों

का व्यवहार करना चाहिए, औषधिमें रोग-निवृत्ति, रोग निवारण और शनैः शनैः क्षयके लिए इसका व्यवहार किया जाता है, इनका भेंट देने और दान देने (पुरोहितों, ज्योतिषियों आदि) और स्वतः आभूषणके रूपमें स्वास्थ्य और समृद्धि प्राप्तिके लिए उपयोग किया जाता है और भगवान् को भेंट में अर्पित किया जाता है। हीन कोटिके रत्न इन कामोंके लिए निरुपयोगी हैं।

हीरक-डायमंड

इसका अधिपति शुक्र है। लग्नाधिपति यदि शुक्र हो, या आपकी कुण्डलीमें शुक्र सर्वाधिक शक्तिशाली ग्रह है तो हीरक धारण करिये। हीरक धारण करने से मनुष्य दीर्घजीवी होता है। इसके शुभ गुणोंका प्रभाव शीघ्र दिखाई देता है। यह पुष्टिकर है, त्रिदोषशामक है, और सब रोगोंका निवारण करता है। वृष राशिके लग्नमें उत्पन्न व्यक्ति प्रबल संकल्पका होता है। हीरक धारण करने से व्यक्तिका संकल्प अपनी योजनाओं को पूरा करनेके लिए और दृढ़ हो जाता है और कठिनाइयाँ और बाधाओं से विचलित न होकर उनको वह अवश्य पूरा करता है। ये लोग उस समय तक सुखी या सफल नहीं होते जब तक उनकी आध्यात्मिक प्रकृति सन्तुष्ट नहीं होती और निरन्तर हीरा पहनने से उनको आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त होता है और वे जीवनके उच्च शिखर पर पहुँच जाते हैं। हीरक धारण करनेवाला शत्रु पर विजयी होता है (जहाँ पक्ष न्यायपूर्ण होता है, और सुखी रहता है।

हीरक तीन प्रकारके होते हैं। ये हैं—(१) पुल्लिंग (२) स्त्रीलिंग और (३) नपुंसक। नर हीरकके छः या अष्ट कोण होते हैं। ये अत्यन्त भास्कर और चमकदार होते हैं। इन्द्र धनुष निकलने के समय वर्षा की बूंदे जैसी सुन्दर और उज्वल दिखाई देती हैं, वैसे ही इनकी चमक होती है। ये भिन्न-भिन्न आकारके होते हैं। कोई चपटे कोई वृत्ताकार। इनका आकार अपेक्षाकृत बड़ा होता है और इनमें रेखायें और धब्बे नहीं होते। नरहीरक सर्वोत्तम होता है और धातुओंका रूप और प्रकृति बदलनेमें सहायक होता है। स्त्री हीरक बेलनाकार होता है और दोनों छोरों पर दबा पिटा होता है और कुछ भारी होता है। यह षट्कोण होता है। इसमें धारियाँ और धब्बे खूब होते हैं। नपुंसक हीरक त्रिकोण होता है। यह पतला और फैला हुआ होता है। नर हीरक कोई भी व्यक्ति धारण कर सकता है। स्त्री हीरक स्त्रियाँ धारण करती हैं और इससे उनके सौन्दर्य और सौभाग्य की अभिवृद्धि होती है। नपुंसक निरर्थक और सारहीन होता है।

अच्छे हीरक की विशेषतायें

रत्नोंमें भारीपन होना साधारणतः अधिक मूल्यवान होने का लक्षण माना जाता है। किन्तु हीरक की बात इससे विपरीत है। यदि इसके स्तरको किसी कठोर कसौटी से भी रगड़ा जाय तब भी यह घिसेगा नहीं। यह सरलता से किसी दूसरी वस्तुमें दरार डाल सकता है। निम्न प्रकार के हीरक अशुभ होते हैं :—

(१) जो भस्म रंगके हैं, (२) जिनमें कौए के पांवके आकारके धब्बे होते हैं, (३) जिनमें रेखायें अंकित होती हैं, (४) जो बेलनाकार हैं, (५) जिनमें धब्बे होते हैं, (६) जो नीले रंगके हैं और खुरदरे हैं। इन हीरकों को नहीं धारण करना चाहिए। उचित रीतिसे शुद्ध और संस्कृत न किए गए और जलाये गए हीरक धारण करने से कोढ़, पसलियों में दर्द, रक्त क्षय, शोथ और अंगोंका भारीपन ये रोग हो जाते हैं। 'रसराजनिधि' में हीरक का संस्कार करने और जलानेकी अनेक प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है। लेखकका कहना है :—भस्मीकृत हीरक को, इसके तीन गुण भारी पारदके साथ रगड़कर उसकी गोली बनाने से हिलता दाँत भी मजबूत हो जाता है और पक्का हो जाता है।

मरकत-एमेराल्ड

यदि लग्नाधिपति बुध हो या जन्मकुण्डलीमें सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रह हो तो यह रत्न धारण करना चाहिए। मरकतमणि का रंग तीसरे पहरके सूर्यके प्रकाशमें पहाड़ी पर लगे अंगूरके बागके चमकते हरे रंगके पत्तोंके समान गहरा हरा होता है यह कामवासना का शत्रु माना जाता है। प्रबल बुध ग्रहमें उत्पन्न लोग असाधारण रूपसे सुन्दर होते हैं, ये शीघ्र ही लोगों को अपना मित्र बना

लेते हैं और स्वभावतः अपने से भिन्न लिंगको अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। मरकतमणि धारण करने से उनको सच्चा और स्थायी प्रेम पानेका विश्वास रहता है। ईरानी लोग विश्वास करते थे कि जिसके पास मरकतमणि होती है उसकी देवता रक्षा करते हैं।

शुभ मरकतमणि के निम्न लक्षण हैं:—(१) हरा रंग, (२) भारीपन, (३) मृदुता, (४) प्रकाश विकीर्ण करती किरणें, (५) चिकनापन, (६) भास्वरता और (७) घनता अशुभ मरकत भूरा, खुरदरा, नीला, पीला-काला, हल्का, चपटे आकारका, भद्दा, काला और रुक्ष एवं असम होता है। श्रेष्ठ और उच्चकोटि का मरकत बहुत अधिक हरा, कोमल और बाहरी किरणों के प्रवेश करनेके कारण चमक में मिश्रित रंगका होता है। रंगोंकी एकरूपता और बनावट की सुन्दरता इसकी अपनी एक अपूर्व विशेषता है। सूर्य की किरणें जब इसमें प्रतिक्षिप्त होती हैं, तो सारा कमरा जगमगा उठता है। विद्युतप्रकाश में चमकती हरी घासके समान इसकी चमक होती है और इसका वर्ण गाढ़े हरे रंगका होता है। इसकी उपस्थितिमात्र से मन प्रसन्न हो जाता है। सच्चे और शुद्ध मरकतमणि की परीक्षाके लिए प्राचीन विद्वानों ने यह कसौटी बताई है :—(क) पाषाण के एक खण्ड से मरकतमणि को रगड़ो। यदि यह शीशा होगा तो यह दो टुकड़ों में विभक्त हो जायगा। सच्चा मरकत ऐसा करने से कभी न टूटेगा। (ख) मरकतकी इस रीतिसे भी परीक्षाकी जा सकती है कि लोहेकी छड़ से उसको खरोंचा जाय और फिर वहाँ चूना मिलाया जाय। इस प्रकार करनेसे सच्चा मरकत और अधिक चमकसे चमकेगा। इसके विपरीत नकली अपनी प्रभा खो देगा।

माणिक्य-रूबी

यदि कुण्डली में सूर्य शक्तिशाली ग्रह हो, या यदि सिंह लग्न हो तो माणिक्य धारण करना चाहिए। 'रूबी' अंग्रेजी का शब्द संस्कृत 'रविरत्न' का अपभ्रंश है। माणिक्य का मूल लालरंग बैंजनीरंग से मिला होता है। लालमिर्च से इसका रंग मिलता-जुलता है। यह मसाला जैसे उत्तेजक होता है, वैसे ही माणिक्य भी चेतनाशक्ति और बुद्धि को उत्तेजित करता है। सिंह लग्न में उत्पन्न व्यक्ति जब तक माणिक्य धारण करेंगे, तब तक वे शत्रुओं के मध्य निर्भय होकर रह सकेंगे और शत्रुपक्षसे उनका अनिष्ट करनेके लिए जो कोई विरोधी कार्रवाई की जायगी उससे उनकी बराबर रक्षा होती रहेगी। माणिक्य के बारे में कहा जाता है कि यह शरीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करता है। इस लग्नके लोग अत्यन्त भावुक होते हैं, इस कारण उनका मानसिक सन्तुलन हर समय बिगड़ने का भय रहता है। अतः इनको सदा माणिक्य धारण करना चाहिए।

प्रकार—माणिक्य चार प्रकार का होता है:—(१) पद्मराज, (२) कुरुविंडज्, (३) सौगन्धिक और (४) नीलगन्धी, पद्मराज कमलके रंग (लाल-श्वेत) का होता है। यह पारदर्शक, आँखों को आल्हाददायक, गोल आकार का चिकना और भारी होता है। 'कुरुविंडज' यह कुरुविंडम (कोरनुडम) नामक पत्थरसे उत्पन्न होता है। यह अत्यधिक लाल और सुन्दर होता है। सौगन्धिक सुगन्धिका से उत्पन्न होता है और पीला लिये हुए लाल रंग का होता है। नीलगन्धी साधारणतः नीलगंगा नदीसे मिलता है। (यह गंगानदी की एक शाखा है और यह हरद्वारके पास गंगानदी में मिलती है।) अच्छे माणिक्य की विशेषता यह है कि यह भारी, चिकना, धब्बारहित, पारदर्शक, कोमल, और सम होता है। इसमें लाली की अधिकता होती है, इसकी बनावट में एकरूपता और आकार वृत्ताकार होता है। खराब माणिक्य सछिद्र, चमक रहित, विषम, अपारदर्शक, चपटे, हलके और विकृत आकार-परिमाण के होते हैं। सच्चे माणिक्य की प्रभा कभी कम नहीं होती। और न इसका भार कम होता है, चाहे इसको कठोर पत्थर से ही क्यों न रगड़ा जाय। सर्वोत्तम माणिक्य वह है, जो अंधेरेमें रखनेपर अपनी किरणोंसे चारोंओर के स्थान को प्रकाशित करदे; और जब इस पर सूर्यकिरणें प्रक्षिप्त हों तो यह आसपास को अपनी उज्ज्वल प्रभासे भास्वर करदे।

मुक्ता-पर्ल

यदि जन्म कर्कट लग्न में हुआ हो, या जन्मकुण्डलीमें चन्द्र शक्तिशाली हो तो मुक्ता धारण करना चाहिए।

मुक्ता यशप्रद है और सुख सफलता और सुन्दरता का प्रतीक है। यह आर्थिक संकट से भी बचाता है। रोमांस को आकर्षण और कवित्व साहचर्य के साथ विमल सौन्दर्य का मुक्ता धारण करनेसे वैवाहिक जीवनके संकटों से व्यक्ति बचा रहता है। मुक्ता पवित्रता, शुद्धता और विनम्रता का सूचक है और यदि इसको उचितरूप से धारण किया जाय तो यह सुख और आनन्द प्रदान करता है।

'रसजलनिधि' के अनुसार मुक्ता हाथी, मेंढ़क, शंख, मछली, सुअर, सीप और बांस में मिलता है।

गज-मुक्ता—रवि या सोमवार को उत्पन्न हुआ गज उच्चवंश का माना जाता है, जबकि चन्द्रमा पुष्य या श्रवण में हो, सूर्य मकर और कर्कट के मध्य हो और सूर्य या चन्द्र ग्रहण का समय हो। इस प्रकार के हाथीके मस्तक या हाथीदांत की जड़में बड़े आकारकी बहुतसी मुक्तायें निकलती हैं। ये मोती विजयदाता और रोगनिवारक होते हैं और राजाओं को यह धारण करना चाहिए। सर्प-मुक्ता सुन्दर, नीलीचमक की ओर अत्यन्त चमकीली होती है। सच्चे सर्प-मुक्ता की पहचान यह है कि उसको स्वच्छ और खुली जमीन के एक भाग पर यदि रख दें तो अकस्मात् आकाशसे वर्षा होने लगेगी।

मत्स्य-मुक्ता—गहरे समुद्रमें रहनेवाली ह्वेल मछलियों से मिलती है, और इनका आकार मछली की आंख के समान होता है। सुअर-मुक्ता कुछ सुअरों की दांत की जड़ में पैदा होती है। यह चन्द्रकिरणों के समान चमकीली होती है। वंश-मुक्ता बांसके पौधेके अन्दर उत्पन्न होता है और चन्द्रकिरणोंके समान चमकीला होती है। इसका रंग हरीतमायुक्त श्वेत होता है। शंख-मुक्ता गोल होती है और शंखके खोलमें पैदा होती है। यह चन्द्रमाके समान श्वेत होती है। मेंडक-मुक्ता मेंडकके सिरमें उत्पन्न होती है और सर्प-मुक्ताके समान होती है। सूर्य 'स्वाती' नक्षत्रमें हो और इस समय वर्षा हो, और वर्षाके बिन्दु सीपी यदि पीले तो खोलके अन्दर मुक्ता उत्पन्न होकर बढ़ती रहती है। सब मुक्ताओंमें शंख-मुक्ता और सीपी-मुक्ता घटिया और हीन कोटि की होती है। अच्छी मुक्ता आंखोंको भली मालूम देती है, प्रतीत होता है कि इस पर तेल लगाया गया है, सूर्यकिरणोंके समान चमकीली, आकारमें बड़ी, दर्शकों द्वारा प्रशंसित जलके समान विमल और स्पष्ट, और गोल होती है। खराब मुक्ता नहीं धारण करनी चाहिए और वह भद्दी मोटी चमकरहित अर्द्ध-श्वेत और गाठोंसे पूर्ण होती है। इसका रूप नमक सदृश होता है। सीपीमें उत्पन्न मुक्ताको छोड़कर अन्यों को नहीं बेधना चाहिए।

नीलम-सेफ़ायर

जिनका लग्नाधिपति शनि हो उनको यह रत्न धारण करना चाहिए। नीलके समान नीलेवर्ण का नीलरत्न स्थिरता का प्रतीक है और शनिके अनिष्ट प्रभाव को यह दूर करता है। नील धारण करनेसे उदारप्रवृत्तियों को उत्तेजन मिलता है, और विचार और कार्योंमें उदार होनेमें यह सहायता करता है।

यह रत्न प्राचीनकालमें कलिंग (उड़ीसा) और सीलोन में मिलता था। यह दो प्रकारका होता है; (१) जलनील, और (२) इन्द्रनील। इन दोनोंमें इन्द्रनील श्रेष्ठतर होता है। जलनील अपेक्षाकृत हल्का होता है और इसके अन्दर श्वेतचमक निकलती है। इन्द्रनील अपेक्षाकृत भारी होता है और इसके अन्दरसे काली चमक निकलती है। जिस 'जलनील' के अन्दरसे लालचमक निकलती है, उसको 'रक्तगंधी' कहते हैं। यह सर्वोत्तम होता है। श्रेष्ठ इन्द्रनील की चमक और उसके प्रकाशमें एक रूपता होती है। यह भारी होता है और प्रतीत होता है कि यह किसी तेलवाली चीजसे पोता हुआ है। यह पारदर्शक गोलाकृति का और मुलायम होता है। ताम्रवर्ण के नीलरत्न को फेंकना न चाहिए।

प्रवाल-कोरल

मंगल जिनका शक्तिशाली हो या जिनका जन्म लग्नेश मंगल हो, उनको प्रवाल धारण करना चाहिए। मंगल जब लग्नाधिपति होगा तो इसका निवासि आक्रामक, उत्तेजनाशील, प्रेरक, और तुनुक मिजाज होता है। प्रवाल धारण करनेसे क्रोध शान्त रहता है, और भावात्मक प्रतिक्रिया मन्द होजाती है। प्रवाल धारण करनेसे नासासे बहता रक्त बन्द होजाता है। इस रत्नको धारण करनेवाला

सम्मान और प्रतिष्ठा पाता है और उसके सहयोगी उसका ख्याल रखते हैं।

उत्तम प्रवालकी विशेषतायें—प्रवाल लाली लिए हुए और प्रतीत होता है कि इसपर तेल लगा हुआ है, यह वेधा जा सकता है, वर्त्तुलाकृति का और इसका तल घनत्वमय और चिकना होता है। खराब प्रवाल पीत-श्वेत, भूरे रंगके छोटे विषम तलवाले ताम्रवर्ण और सछिद्र होते हैं। सब रत्नोंमें से प्रवाल और मुक्ता ही केवल लोह-शलाकासे खुरचे जासकते हैं।

गोमेदम्-जीरकॉन

यदि राहू लग्नमें हो तो यह रत्न धारण करना चाहिए। गोमेद चमक, अभेद्यता, भास्वरता, अत्यधिक पारदर्शकतामें हीरक के बाद सर्वोपरि हैं। प्राचीनलोग इसको बहुत पसन्द करते थे। इसका धारण करना कुलीनता का शकुन है और इसके धारण करनेवाले का अन्यलोग सम्मान करते हैं। गोमेद का रंग जैसाकि इसके नामसे स्पष्ट है, गौ की चर्बी जैसा होता है। इसका शब्दार्थ है गौ की बसा। यह रंग लाली लिए हुए पीला होता है। गोमेद हिमालय में पाया जाता है। सिन्ध नदी में भी यह मिलता है। निम्न प्रकार का गोमेद अच्छा माना जाता है :—गोमूत्र का सा जिसका रंग हो, पारदर्शक हो, देखनेसे प्रतीत हो कि इसपर तेल लगाया हुआ है, स्तर सम हो, भारी हो, परतें (तहें) न हों, चिकना और चमकीला हो। खराब गोमेद इस प्रकार का होता है :—इसमें दोहरे रंग का अभाव होता है। यह हल्का, विषम स्तर व चपटे आकार का होता है। इसमें चमक का अभाव और यह पीले रंग के समान प्रतीत होता है। यह श्लेष्मा और पित्त की अधिकता को दूर करता है। रोगोंके निवारण और रक्त की कमी में इसका धारण करना लाभदायक है।

वैदूर्य—कैट्स आई

लग्नमें यदि केतु हो तो वैदूर्य रत्न धारण करना चाहिए। 'रसजलनिधिमें कहा गया है कि यह रत्न 'विदुर' पर्वतके सर्वोच्च शिखिर के समीपस्थ खानमें पाया जाता है। विदुर पर्वत की स्थिति कामभूति (कम्बोडिया ?) देश की सीमा पर बताई गई है। वैदूर्य का रंग मार्जार की आंखों के तारे के समान मधुके रंगका होता है। इस रत्न के विषयमें विश्वास किया जाता है कि यह अपने स्वामी की सम्पति की रक्षा करता है। यह भी माना जाता है कि इस रत्न में शुभ आत्मा निवास करती है, जो कि इस रत्न धारण करनेवाले के भाग्य पर दृष्टि रखती है, और सब दुर्भाग्यों से उसकी रक्षा करती है। तीन प्रकारके वैदूर्य पाये जाते हैं :—(१) पीत-कृष्ण, (२) लोहित-नील, और (३) श्वेत-कृष्ण। अच्छे वैदूर्य का रंग कालिमा लिए हुए श्वेत होता है। इसका तल चिकना होता है। यह पारदर्शक भारी और चमकीला होता है। इसको देखने से यह मालूम होता है कि इसके अन्दर झूलते रूमाल का चिन्ह है। काले रंगके वैदूर्य का आकार चपटा, रंग जल सदृश, हल्का विषम और प्रशंसनीय नहीं होता। कसौटीपर इस रत्नको रगड़ा जाय और इससे वह चमके तो समझना चाहिए कि यह सच्चा है। वैदूर्य अन्तः शिरा-रक्त स्राव को रोकता है। यह ज्ञानकी वृद्धि करता है, दीर्घायुष्य और शक्ति प्रदान करता है और रोगों का निवारण करता है।

ऊपर हमने विस्तार से इस बातका वर्णन किया है कि रत्न कितने प्रकारके होते हैं और जन्मकुण्डली में विभिन्न ग्रहोंके शक्तिशाली होने पर कौनसा रत्न धारण करना चाहिए।

हिन्दू शास्त्रोंका आदेश है कि हाथमें ऐसी अंगूठी पहननी चाहिए जिसमें नवों रत्न निम्न क्रम से लगे हैं:—

सूर्य (माणिक्य या रूबी का अधिपति) मध्य में; शुक्र (हीरक या डायमंड का अधिपति) पूर्व में, चन्द्र (मुक्ता या पर्लका अधिपति) आग्नेय दक्षिण-पूर्व में, मंगल (प्रवाल या कोरल का अधिपति) दक्षिण में; राहु (गोमेद या जीरकौन का अधिपति) नैऋत्य दक्षिण-पश्चिम; में; शनि (नीलमणि या सेफायर का अधिपति) पश्चिम में; केतु (वैदूर्य या कैट्स आई का अधिपति) उत्तर-पश्चिम में (वायव्यमें) बृहस्पति (पुष्पराग या टोपेज का अधिपति) उत्तर में, और बुध (मरकत या एसराल्ड

भाग्यफल

[ले० श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्यौतिषाचार्य]

भाद्र-पद मास में जन्मे व्यक्तियों का फलादेश

इस मासमें जन्मे हुए व्यक्ति विशाल-हृदय एवं उदार विचार वाले होते हैं। ये किसी वस्तु को छोटी मात्रामें लेना पसन्द नहीं करते; बृहद्रूपमें ही लेना चाहते हैं। अनेक कार्य्योंके जन्म दाता भी इस मासके जन्मे व्यक्ति होते हैं। संपादन शक्ति इनमें अधिक होती है; बड़े-बड़े व्यवसायोंके जन्म दाता भी ये लोग होते हैं; इनकी इच्छा-शक्ति प्रबल होती है, विचार इतने दृढ़ होते हैं कि एक बार किसी कार्य के संबन्धमें निश्चय करलेने पर फिर वे उसे बदलना नहीं चाहते, अनेक विघ्न,बाधाओं के आने पर भी अपने लक्ष्य तक ये पहुँच ही जाते हैं। इनमें आकर्षण इतना अधिक होता है कि दूसरे व्यक्ति इनकी ओर विना किसी प्रलोभनके आकृष्ट हो जाते हैं और इनके प्रभावमें आकर अनुयायी बन जाते हैं।

स्वभावतः ये बड़े विश्वसनीय होते हैं, कभी किसीको धोखा नहीं देते। इनका लक्ष्य बहुत ऊंचा रहता है और अनेक कष्ट सह कर भी अपने लक्ष्य स्थानको प्राप्त करना ये अपना प्रधान कर्त्तव्य समझते हैं। प्रायः स्वभावसे घमंडी और लालची होते हैं। उदार होते हुए भी स्वार्थकी पूर्तिमें कोई त्रुटि नहीं आने देते। इस मासमें जन्मे व्यक्ति प्रायः देश-भक्त और राज-भक्त होते हैं, इनका हृदय अत्यन्त कोमल होता है, कुसमयमें अन्य व्यक्तियोंके ये काम आते हैं। जहाँ तक संभव होता है ये अन्य व्यक्तियोंकी सहायता करते हैं। स्वभावसे कृपण होते हुए भी अवसर आने पर सहस्रों खर्च कर सकते हैं। ये अवसरवादी होते हैं; जैसा अवसर आता है वैसे ही बन जाते हैं। अपनी मान-मर्यादाकी रक्षा के लिये ये सब कुछ करने को तैयार रहते हैं। नीच-से-नीच और ऊंच-से-ऊंच सभी प्रकार के काम ये कर सकते हैं।

व्यवसायकी दृष्टिसे इस मासवाले व्यक्ति प्रायः ऊंचे व्यापार करने वाले होते हैं। चोर, डाकू, अध्यापक, किसान, डाक्टर, जहाजसंचालक, वैज्ञानिक और लाइब्रेरियन होते हैं। यद्यपि शिक्षकके समस्त-गुण नैतिकता आदि इनमें नहीं होते; फिर भी इस क्षेत्रमें कुछ कार्य कर सकते हैं। पाश्चात्य ज्योतिषियोंका मत है कि भाद्रपदमास में जन्मे व्यक्ति व्यापार में अधिक उन्नति कर सकते हैं। लक्ष्मी इनकी दासी होकर रहती है और आर्थिक संकट का सामना इन्हें नहीं करना पड़ता, किन्तु ऐसे भी दुर्भाग्यशाली व्यक्ति होते हैं जो सदा अन्न-वस्त्र के लिए तरसते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जन्म २१ घटी ३६ पल इष्टकालके आस-पास होता है तथा शनि और मंगल गोचरसे अष्टम में रहते हैं। इसीलिए इन लोगों को प्रायः सर्वदा कष्ट उठाना पड़ता है। इस मास में जन्मे व्यक्तियोंकी पूर्ण सफलता किसी वस्तुके स्वामी होने पर ही निर्भर करती है, जब ये किसी काम के मैनेजर या संचालक बन जाते हैं तो उस कामकी चरम-उन्नति करके ही सुखकी सांस लेते हैं। गायन और वाद्य से भी इन्हें प्रेम होता है, मनोरंजन कि सामग्री सदा ढूँढते रहते हैं।

का अधिपति) ईशान—(उत्तर-पूर्व में)।

बहुमूल्य रत्नों का चुनाव करने में बहुत सावधानी और सतर्कता से काम लेना चाहिए, अन्यथा वे दुर्भाग्य के कारण हो सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति ऐसी अंगूठी पहने जिस में नौ रत्न (नवरत्न) जड़े हैं (पूर्वोक्त क्रम में) तो उसका धारण करनेवाला सुखी समृद्धिपूर्ण और शान्त जीवन व्यतीत करेगा।

इस लेख में संगृहीत सूचनायें और जानकारी अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थोंसे एकत्रित की गई हैं। इस कला के आलोचकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

चरित्र इनका दृढ़ नहीं होता है, किसी को सच्चरित्र पाइयेगा तो किसी को दुश्चरित्र। पर इतना सुनिश्चित है कि इनका जीवन प्रायः वासनात्मक होता है, वासनाकी पूर्तिके लिए ये सब प्रकारके काम करनेको प्रस्तुत हो जाते हैं। ये अपने उद्योग और अध्यवसायसे प्रधान सेनापति, और शिक्षा-मंत्री तक हो जाते हैं। अर्थमंत्रीके कार्यमें इन्हें पूर्ण सफलता मिलती है, अर्थ-शास्त्रके ज्ञाता भी ये होते हैं। अन्य कार्यों की अपेक्षा ये इस महत्त्वपूर्ण कार्यको बड़ी योग्यताके साथ सम्पन्न करते हैं। इनके स्वभावमें विशेषता यह होती है कि ये विचारोंको बड़ा महत्त्व देते हैं। प्रत्येक लौकिक-कार्य को सोच समझकर करते हैं और जब तक साधक, बाधक कारणोंका समुचित विचार नहीं कर लेते, तब तक आगे नहीं बढ़ते। कभी-कभी इनके स्वभावमें झक्कीपना भी पाया जाता है और ये अपनी सनकमें आकर असाध्य कार्योंको भी आरम्भ कर देते हैं।

भाद्रपद मासके प्रथम सप्ताहमें जिन व्यक्तियोंका जन्म होता है वे प्रायः परिश्रमी, विचारवान् और विवेक-शील होते हैं। इस सप्ताहके सभी व्यक्ति शिक्षित और कर्त्तव्य-परायण बताये जाते हैं। परन्तु जिनका जन्म उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र के तृतीय चरणमें तृतीया तिथि को होता है वे अत्यन्त भाग्यशाली होते हैं, उनके आश्रित अनेक व्यक्ति काम करते रहते हैं, तथा ये बड़े बड़े व्यापारोंमें खूब सफलता प्राप्त करते हैं। देश, समाज और जातिकी उन्नतिके लिये बहुत कार्य करते हैं, इनका जीवन अच्छे कार्योंमें व्यतीत होता है। इसी तिथिको ४१ घटी २७ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है वे तपस्वी और संसारके लिये मान्य होते हैं, तथा इसी तिथिको जिनका १४ घटी २७ पल इष्ट काल पर होता है वे फक्कड़, मस्तमौला और अनुत्तरदायी होते हैं। इस समयके जन्मे व्यक्ति भिक्षुक, दरिद्री और मंगते होते हैं। २१ घटी ३६ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है वे अपने परिश्रमसे धनार्जन कर सुखसे जीवन व्यतीत करते हैं, इनकी आधी अवस्था दुःख-मय व्यतीत होती है शेष आधीमें ये चैनके दिन बिताते हैं।

द्वितीय सप्ताहमें जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः विचारक होते हैं। अनुकूल साधनोंके मिलने पर इनका अच्छा विकास होता है। कृष्ण-पक्ष की ११ और १३ तिथियों को आश्लेषा और मघा नक्षत्रमें ३६ घटी ४१ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है वे राजमान्य या पुलिस अफसर होते हैं। यदि त्यागकी ओर इनका जीवन झुका तो वे सच्चे त्यागी होते हैं। इस समयके जन्मे व्यक्ति कृषिविज्ञानके सुन्दर ज्ञाता और सफल प्रचारक होते हैं। जिनका जन्म मघा नक्षत्रके प्रथम चरणमें ११ घटी १३ पल इष्टकाल पर होता है वे सफल शिक्षक और शिक्षा-क्षेत्रके प्रचारक होते हैं। साधारणतया इस मासमें जन्म ग्रहण करने वाले सुधार का कार्य भी करते हैं, क्रान्तिकी लहरके एक किनारे से दूसरे तक पहुँचा देना भी इनका मुख्य कार्य होता है। इनमें कार्य करनेकी अपूर्व क्षमता होती है, काम करना ही इनका व्यसन हो जाता है। शान्ति और विवेक के साथ काम करने से इन्हें अच्छी सफलता मिलती है।

इस मास के तीसरे सप्ताहमें जिन व्यक्तियोंका जन्म होता है वे साहसी, शूरवीर और परिश्रमी होते हैं। प्रायः ये शारीरिक श्रम द्वारा ही जीविका अर्जन करते हैं, इन्हें मानसिक क्षेत्रमें कम सफलता मिलती है। इस सप्ताहके व्यक्तियोंमेंसे ८० प्रतिशत शिक्षित और शेष अशिक्षित होते हैं। पर इतनी विशेषता इस मासके व्यक्तियोंमें होती है कि ये लौकिक कार्य्योंमें अधिक निपुण होनेसे अपने कार्य्य शिक्षितों से भी उत्तमरूपसे करते हैं। ईमानदारी और शालीनता इस सप्ताहके व्यक्तियोंमें विशेषरूपसे पाई जाती है।

जिनका जन्म शुक्ल-पक्षकी २ और ८ तिथियोंको उत्तरा-फाल्गुनी और अनुराधा नक्षत्रमें होता है, वे भाग्य-शाली और राज्याधिकारी होते हैं। इन दिनोंमें १८ घटी ४६ पल इष्टकाल पर जन्म ग्रहण करनेवाले व्यक्ति सह-कारी कारणोंके मिलने पर अन्तिम जीवनमें विरक्त हो जाते हैं। ये अत्यन्त धर्म-प्रेमी, उदार-चरित्र और सहनशील होते हैं। सेवा-वृत्ति इनमें मुख्य रूपसे पायी जाती है। इस मासके चतुर्थ सप्ताहमें जन्म लेनेवाले यशस्वी और महापुरुष होते हैं। इनकी प्रकृति अत्यन्त मधुर और ये संसारसे उदासीन होते हैं।

शनिवार और मंगलवार को इस सप्ताहमें जन्म लेने-

वाले व्यक्तियोंका स्वभाव उद्दण्ड और झक्की होता है, वैसे तो सहानुभूतिकी मात्रा इनमें भी अत्यधिक होती है, परंतु कभी कभी अपने झक्कीपनेमें आकर ये अनुचित कार्य्य भी कर डालते हैं। ४३ वर्षकी आयुमें इन लोगोंको संकटोंका सामना करना पड़ता है। इनका मस्तिष्क बहुत बड़ा होता है और ये अपने व्यवसायमें पूर्ण सफल होते हैं।

प्रायः इस मास वाले व्यक्तियोंका स्वभाव विभिन्न प्रकारका होता है; सहानुभूति, उदारता, अभिमान, शालीनता, प्रेम और दया आदि गुण न्यूनाधिक रूपसे सभीमें पाये जाते हैं।

विवाह और मित्रता

भाद्रपद मासमें जन्मे व्यक्तियोंका विवाह ८, ६, १०, १२, १४, १६, १७, १८, २२, २३, २५, २७, २६, ३२ और ४२ वर्षकी आयुमें होता है। इस मासकी १, २, ३, ५, ६, ८, ६, १०, ११, १३, १४, तिथियोंमें जन्म लेनेवाले व्यक्ति प्रायः दो तीन विवाह करते हैं। इनका ग्रहयोग दो तीन स्त्रियोंके साथ समागम करनेका होता है। प्रायः ये व्यक्ति अपने प्रेमसे आकृष्ट कर विवाह करते हैं।

किसी किसी का मत है कि जिनका जन्म शुक्ल-पक्ष की २, ५, ८, ११, १२, १३ और १५ को होता है उनके दो विवाह होते हैं तथा इनका दाम्पत्य जीवन सुख-मय बीतता है। २४ वर्षकी आयु में इन व्यक्तियोंके दाम्पत्य जीवनमें कुछ मलिनता आती है पर वह शीघ्र दूर हो जाती है। जिन व्यक्तियोंका जन्म रविवारको पुष्य नक्षत्रमें होता है उनसे प्रेम करने वाली अनेक नारियां होती हैं तथा ऐसे व्यक्ति अपने सदाचारसे सबके ऊपर विजय प्राप्त करते हैं। भाद्रपद शुक्ला १३ को जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति अधिक भावुक होते हैं, ये व्यक्ति अपनी भावुकताके कारण दुराचारिणी नारियोंके जालमें फंस जाते हैं, प्रारंभिक जीवन इनका गन्दा होता है, परन्तु प्रौढ़ अवस्थामें पहुँचने पर ये अपनी कोरी भावुकताको छोड़कर वास्तविक जगत् में प्रविष्ट हो जाते हैं।

इनका स्वभाव प्रेमी होता है। मित्रता करनेके लिये सदा इच्छुक रहते हैं, इनके मित्रोंकी संख्या अधिक न होने पर सच्चे मित्र इन्हें मिल ही जाते हैं। इनसे जो एक बार मित्रता कर लेता है, फिर छोड़नेका नाम नहीं लेता। जिनका जन्म भाद्रपद कृष्णा २, ३, ४, ६, ८, १०, ११ और १४ को होता है वे अपनी व्यवहार पटुताके कारण जहां रहते हैं, वहीं अपने मित्रोंका एक खासा वातावरण तैयार किये रहते हैं।

जिनका जन्म कृष्ण-पक्षकी १३ और ३० को होता है वे व्यक्ति मित्रोंसे रहित होते हैं; सच्चे मित्र उन्हें नहीं मिलते। शत्रु संख्या भी अधिक नहीं होती। हां, कुछ लोग इनकी उन्नति देखकर डरते रहते हैं और बिना प्रयोजन ही इनसे ईर्ष्या करने लगते हैं। इनके मिलने-जुलने वाले अधिक रहते हैं, भाई-बन्धु भी हृदयमें इनसे द्वेष रखते हैं और अवसर मिलने पर इनका अनिष्ट करनेको तैयार रहते हैं साधारण जनतामें इनकी प्रतिष्ठा अच्छी रहती है, जिससे सब लोग प्रायः प्रेमका व्यवहार करते हैं।

जिन व्यक्तियोंका जन्म इस मासके अन्तमें होता है वे अपने मित्रोंसे शंकित रहते हैं तथा मित्रोंके द्वारा ही व्यसनोंमें फंसते हैं, इनके ऐसे मित्र बहुत कम होते हैं जो समय पर काम आ सकें।

अच्छा और बुरा समय

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंकी १६, १८, १६, २१, २३, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, ३२, ३४, ३८, ४५, ४६, ५३, ६७ और ६६ वें वर्षोंमें विशेष उन्नति होती है और इन्हीं वर्षोंमें आर्थिक सुख प्राप्त होता है। जिन व्यक्तियोंकी सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ और मीन राशियां होती हैं उन्हें २७, २८, ३०, ३१ वें वर्षमें कुछ संकटका सामना करना पड़ता है, आर्थिक कष्ट भी प्रायः इन वर्षों में होता है और मानसिक चिन्ताएँ रहती हैं।

घातक वर्ष

भाद्रपद मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको जन्मसे १, २, ३, ४, ८, ६, ११, १४, १५, १६, २४, २६, २८, ३२, ४२, ५२, ५५, ५६, ५८, ५६, ६२, ६३, ६५ और ६७ वें वर्षमें रोगग्रस्त होते हैं। हृदय रोग और गलेके रोग अधिकतर होते हैं; रक्तचापका प्रकोप ४२ वें वर्षसे प्रारम्भ होता है। किसी किसीको लकवा और अपस्मारकी व्याधि

भी होती है दमा तथा शीत जन्य और भी अनेक व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। इस मास वालोंको असाध्य रोग प्रायः नहीं होते हैं। २८ वर्षकी आयुसे लेकर ३२ वर्षकी आयुके बीचमें कोई व्याधि अवश्य आती है।

अनकूल समय

शुक्र और बुध ये वार इनके लिये अच्छे होते हैं, इन दिनोंमें कार्य्य करनेसे विशेष सफलता मिलती है। फाल्गुन, श्रावण, आषाढ़ और माघ ये मास भी इस मासके जन्मे व्यक्तियोंके लिये अच्छे होते हैं, कार्त्तिकका महीना अनिष्ट-कारक होता है, पौष भी इनके लिये अच्छा नहीं होता, शेष मास साधारण होते हैं। तिथियोंमें २, ३, ८, ९, १३, १४, १५ उत्तम होती हैं; ४, ५, ६ अनिष्टकारक होती हैं और अवशेष तिथियां मध्यम होती हैं।

सन्तान सुख

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको संतान सुख मध्यम श्रेणीका होता है। रविवारको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको अधिक संतान, सोमवारको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको अल्प संतान या कन्याएँ अधिक, मंगल और शनिवारको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको अधिक संतान या अधिक पुत्र एवं बुध और शुक्रको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको प्रायः संतानभाव या कन्याएँ अधिक होती हैं।

जिनका जन्म इस मासकी २, ३, ४, ५, ६, १०, १३, १४ तिथियों में होता है उन्हें संतान-सुख मध्यम श्रेणीका होता है। जिनका जन्म किसी भी तिथिको इस मासमें ५१ घटी १४ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें प्रायः संतान नहीं होती। इस समय जन्में व्यक्तियोंको दूसरा विवाह करने पर संतान हो सकती है। १६ घटी ४८ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है उन्हें भी प्रायः संतान नहीं होती इन्हें दत्तक पुत्र ही लेना पड़ता है।

भाद्रपद कृष्णा ६ को ४८ घटी ४७ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म हुआ हो उन्हें १२ सन्तानें होती हैं तथा अधिकांश पुत्र ही होते हैं। भाद्रपद शुक्ला ७ को १८ घटी २१ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म हुआ हो उन्हें भी प्रायः ८ सन्तानें होती हैं।

भाद्रपद मासमें उत्पन्न हुई नारियोंका फलादेश

इस मासमें जन्म लेनेवाली स्त्रियां बच्चोंके लिये अत्यन्त इच्छुक रहती हैं। ये एक आदर्श गृहिणी होती हैं। प्रबन्ध करनेमें अत्यन्त पटु होती हैं। इनकी आज्ञाकी अवहेलना होनेसे इन्हें अधिक कष्ट होता है, सम्मानका इन्हें अधिक ध्यान रहता है, जरा भी सम्मानमें बाधा आनेसे इन्हें अपार क्रोध आता है और हिताहितका बिना विचार किये अनर्थ कर डालती हैं।

इनका स्वभाव साधारणतया अच्छा होता है, संयोगी कारणोंके मिलनेसे इनमें सहसा परिवर्त्तन देखा जाता है। इस मासमें जन्म लेनेवाली नारियां अच्छी गायिका, लेखिका और क्रयविक्रयमें निपुण होती हैं। इनका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहता है। ये दुबली-पतली और सुन्दरी होती हैं। जिनका जन्म विषम संख्यक तिथियोंमें होता है वे प्रायः स्थूल शरीर वाली होती हैं, इनमें भोग-लिप्सा भी अधिक होती है, पर ये प्रायः सच्चरित्र होती हैं, पतिकी सेवा शुश्रूषा करनेमें इन्हें अपरिमित आनन्द आता है, इनके स्वास्थ्यके लिये गर्म वस्तुएँ हानिकारक होती हैं, अतएव इन वस्तुओंसे बचना चाहिए स्निग्ध और शीतल वस्तुएँ इनके लिए विशेष लाभदायक हैं।

प्रायः इस मासवाली नारियोंमें क्रोधकी मात्रा अधिक पाई जाती है। इनमें एक यह त्रुटि होती है कि ये अधीर अधिक होती हैं, इनका चित्त स्थिर नहीं रहता तथा विचारोंमें एकता नहीं होती और न इनमें आत्म-विश्वास ही पूर्णरूपसे रहता है। इन्हें विनोद-मय वाता-वरण अधिक पसन्द होता है, इनके बिना इनका मन स्थिर नहीं होता। इन्हें प्रदर, हिस्टीरिया, चेचक, अपस्मार, योनिदाह एवं गठिया-वात आदि व्याधियां हो जाती हैं।

भाद्रपद मासके प्रथम सप्ताह और चतुर्थ सप्ताहमें उत्पन्न हुई नारियां अधिक सुखी होती हैं, अपेक्षाकृत तृतीय और द्वितीय सप्ताहमें उत्पन्न होनेवाली नारियोंके। इस मासकी नारियों को २, ४, १०, ११, १७, १९, २०, २२, २४, २८, ३०, ३६, ४२, ४६, ५४, ५५, ५८, ६१, ६४ और ६८ वें वर्ष मृत्यु दायक हैं।

कुम्भलग्न जातक

[ले० श्री अम्बालाल गोविन्दराम दवे बी. एस. सी.]

राशि—कुम्भ; स्थिर; द्विपद, शीर्षोदय, नर; विषम; स्वामी शनि।

'कुम्भ' दूसरी वह राशि है जिसका स्वामी शनि है। मकर की भान्ति कुम्भकेन्द्र राशि नहीं होती, अतः कुम्भ लग्नवाले मकरवालों की मुख्यता प्राप्त नहीं करते। वे मकर लग्नवालों की भान्ति लम्बे नहीं होते, किन्तु उनका मस्तिष्क मकरलग्नवालों से कहीं अधिक तीव्रतासे काम करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शनि का प्रभाव जितना मकरराशि पर होता है कुम्भ पर नहीं होता। मकरवालों की योग्यता व सुन्दरता भी कुम्भवालोंमें नहीं होती। शनि की स्थिति यदि ठीक न हुई, तो वे कुरूप भी देखे जाते हैं। उनका शरीर स्वाभाविक डीलडौल का होता है, नेत्रोंमें तीक्ष्णता होती है, तुला लग्न वालोंकी भाँति प्रशान्तता नहीं होती, और उनकी चंचलता में एक बेचैनी का भाव होता है। फिर भी उनके जैसा आकर्षण किंचित् अन्य लग्नवालों में नहीं होता। और न उन जैसी प्रगतिशीलता ही किसी में होती है।

उनके व्यक्तित्व का खिंचाव कुछ ऐसी विशेष विचित्रता रखता है, कि उनका मित्र मण्डल शीघ्र ही अति विस्तृत होजाता है। उनके मित्र उनकी महानता देखकर नहीं खिंचते, और न उनके किसी गुण पर ही मोहित होते हैं। वे केवल उनके व्यक्तित्वके विचित्र आकर्षण से ही खिंचे रहते हैं। यदि उनके किसी मित्र से पूछा जाय कि वे क्यों उनसे मित्रता रखते हैं, तो कोई मित्र भी इसका उत्तर न दे सकेगा। कोई उत्तर दे सके या नहीं यह सत्य है कि उनका जादू भरा व्यवहार शीघ्रही मित्रता उत्पन्न कर लेता है। किंचित् वे जीवनकी गहराइयोंको खूब समझते हैं; मनुष्यकी निर्बलताओंको और उसकी त्रुटियों को खूब समझते हैं, और उनसे सहानुभूति रख सकने की क्षमता रखते हैं। यह उनकी अनोखी और तेज़ सूझके कारण ही हो पाता है। इसीसे जब वे किसीके सम्पर्क में आते हैं, तो उसकी त्रुटियोंके प्रति सहानभूति रखकर उससे मिलते हैं। यह विशालता कुम्भ लग्न वालोंका अतिही विलक्षण लक्षण है। इस विशालताकी छाया में जो भी उनका मित्र आता है, बिना कुछ सोचे, परवश हुआ उनसे आकर्षित होजाता है। उनकी विस्तृत मित्र-मण्डली का किंचित् यही कारण है।

मकर लग्नवालों की भांति वे भी अतिशय धैर्यशाली होते हैं, और किसी स्थायी सफलता के लिये प्रयत्न करते रहते हैं! स्वभावतः उन्हें इतिहास से रुचि होती है। पिछली बातों का वे गम्भीरता से अध्ययन करते हैं, और फिर अपने तीव्र मस्तिष्क के बल पर उस अध्ययन को आधुनिक स्थिति से मिलाते हैं, आधुनिक प्रश्नों व समस्याओं का हल अपने अध्ययन व समझ के बल पर ढूंढते हैं। इस प्रयासमें वे अति प्रगतिशीलता से काम लेते हैं। वे रूढ़िवादी नहीं होते। किसी भी रूढ़ि वा रिवाज़ को अपनी प्रगतिशीलता के बल से उखाड़ फैंकना उनके लिये अति सुगम होता है। इस भाँति वे अति क्रान्तिकारी व्यक्ति होते हैं। कुम्भ क्रांतिकारियों की राशि है। कुम्भ लग्न वाले कब क्या करेंगे, कोई नहीं जान सकता। वे अपने किसी भी चोले को उतारकर कभी भी फैंक सकते हैं, और कोई सा नया चोला धारण कर सकते हैं।

वे अधिक धार्मिक व्यक्ति नहीं होते धार्मिक रूढ़ियों पर उन्हें हँसी आती है। बड़े महन्तों व विद्वानोंके भाषणों को सुनकर भी वे एक शून्यता की हँसी हँसकर चलते होते हैं। किंचित् उनकी दृष्टि इतनी गुणों पर नहीं जाती, जितनी त्रुटियों पर और यह त्रुटियों का भाव ही उन्हें हँसा देता है। कोई भी अपनी विद्वत्ता के बल पर वा भाषणों के बल पर उन्हें अपने प्रवाहमें बहाकर नहीं ले जा सकता।

वे अतिशय विस्तृत अध्ययन के व्यक्ति होते हैं। और इससे उनका दृष्टिकोण अति विशाल होता है। किन्तु

भी होती है दमा तथा शीत जन्य और भी अनेक व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। इस मास वालोंको असाध्य रोग प्रायः नहीं होते हैं। २८ वर्षकी आयुसे लेकर ३२ वर्षकी आयुके बीचमें कोई व्याधि अवश्य आती है।

अनकूल समय

शुक्र और बुध ये वार इनके लिये अच्छे होते हैं, इन दिनोंमें कार्य्य करनेसे विशेष सफलता मिलती है। फाल्गुन, श्रावण, आषाढ़ और माघ ये मास भी इस मासके जन्मे व्यक्तियोंके लिये अच्छे होते हैं, कार्त्तिकका महीना अनिष्ट-कारक होता है, पौष भी इनके लिये अच्छा नहीं होता, शेष मास साधारण होते हैं। तिथियोंमें २, ३, ८, ९, १३, १४, १५ उत्तम होती हैं; ४, ५, ६ अनिष्टकारक होती हैं और अवशेष तिथियां मध्यम होती हैं।

सन्तान सुख

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंको संतान सुख मध्यम श्रेणीका होता है। रविवारको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको अधिक संतान, सोमवारको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको अल्प संतान या कन्याएँ अधिक, मंगल और शनिवारको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको अधिक संतान या अधिक पुत्र एवं बुध और शुक्रको जन्म लेनेवाले व्यक्तियोंको प्रायः संतानभाव या कन्याएँ अधिक होती हैं।

जिनका जन्म इस मासकी २, ३, ४, ५, ६, १०, १३, १४ तिथियों में होता है उन्हें संतान-सुख मध्यम श्रेणीका होता है। जिनका जन्म किसी भी तिथिको इस मासमें ५१ घटी १४ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें प्रायः संतान नहीं होती। इस समय जन्में व्यक्तियोंको दूसरा विवाह करने पर संतान हो सकती है। १६ घटी ४८ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है उन्हें भी प्रायः संतान नहीं होती इन्हें दत्तक पुत्र ही लेना पड़ता है।

भाद्रपद कृष्णा ६ को ४८ घटी ४७ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म हुआ हो उन्हें १२ सन्तानें होती हैं तथा अधिकांश पुत्र ही होते हैं। भाद्रपद शुक्ला ७ को १८ घटी २१ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म हुआ हो उन्हें भी प्रायः ८ सन्तानें होती हैं।

भाद्रपद मासमें उत्पन्न हुई नारियोंका फलादेश

इस मासमें जन्म लेनेवाली स्त्रियां बच्चोंके लिये अत्यन्त इच्छुक रहती हैं। ये एक आदर्श गृहिणी होती हैं। प्रबन्ध करनेमें अत्यन्त पटु होती हैं। इनकी आज्ञाकी अवहेलना होनेसे इन्हें अधिक कष्ट होता है, सम्मानका इन्हें अधिक ध्यान रहता है, जरा भी सम्मानमें बाधा आनेसे इन्हें अपार क्रोध आता है और हिताहितका बिना विचार किये अनर्थ कर डालती हैं।

इनका स्वभाव साधारणतया अच्छा होता है, संयोगी कारणोंके मिलनेसे इनमें सहसा परिवर्त्तन देखा जाता है। इस मासमें जन्म लेनेवाली नारियां अच्छी गायिका, लेखिका और क्रयविक्रयमें निपुण होती हैं। इनका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहता है। ये दुबली-पतली और सुन्दरी होती हैं। जिनका जन्म विषम संख्यक तिथियोंमें होता है वे प्रायः स्थूल शरीर वाली होती हैं, इनमें भोग-लिप्सा भी अधिक होती है, पर ये प्रायः सच्चरित्र होती हैं, पतिकी सेवा शुश्रूषा करनेमें इन्हें अपरिमित आनन्द आता है, इनके स्वास्थ्यके लिये गर्म वस्तुएँ हानिकारक होती हैं, अतएव इन वस्तुओंसे बचना चाहिए स्निग्ध और शीतल वस्तुएँ इनके लिए विशेष लाभदायक हैं।

प्रायः इस मासवाली नारियोंमें क्रोधकी मात्रा अधिक पाई जाती है। इनमें एक यह त्रुटि होती है कि ये अधीर अधिक होती हैं, इनका चित्त स्थिर नहीं रहता तथा विचारोंमें एकता नहीं होती और न इनमें आत्म-विश्वास ही पूर्णरूपसे रहता है। इन्हें विनोद-मय वाता-वरण अधिक पसन्द होता है, इनके बिना इनका मन स्थिर नहीं होता। इन्हें प्रदर, हिस्टीरिया, चेचक, अपस्मार, योनिदाह एवं गठिया-वात आदि व्याधियां हो जाती हैं।

भाद्रपद मासके प्रथम सप्ताह और चतुर्थ सप्ताहमें उत्पन्न हुई नारियां अधिक सुखी होती हैं, अपेक्षाकृत तृतीय और द्वितीय सप्ताहमें उत्पन्न होनेवाली नारियोंके। इस मासकी नारियों को २, ४, १०, ११, १७, १९, २०, २२, २४, २८, ३०, ३६, ४२, ४६, ५४, ५५, ५८, ६१, ६४ और ६८ वें वर्ष मृत्यु दायक हैं।

कुम्भलग्न जातक

[ले० श्री अम्बालाल गोविन्दराम दवे बी. एस. सी.]

राशि—कुम्भ; स्थिर; द्विपद, शीर्षोदय, नर; विषम; स्वामी शनि।

'कुम्भ' दूसरी वह राशि है जिसका स्वामी शनि है। मकर की भान्ति कुम्भकेन्द्र राशि नहीं होती, अतः कुम्भ लग्नवाले मकरवालों की मुख्यता प्राप्त नहीं करते। वे मकर लग्नवालों की भान्ति लम्बे नहीं होते, किन्तु उनका मस्तिष्क मकरलग्नवालों से कहीं अधिक तीव्रतासे काम करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शनि का प्रभाव जितना मकरराशि पर होता है कुम्भ पर नहीं होता। मकरवालों की योग्यता व सुन्दरता भी कुम्भवालोंमें नहीं होती। शनि की स्थिति यदि ठीक न हुई, तो वे कुरूप भी देखे जाते हैं। उनका शरीर स्वाभाविक डीलडौल का होता है, नेत्रोंमें तीक्ष्णता होती है, तुला लग्न वालोंकी भाँति प्रशान्तता नहीं होती, और उनकी चंचलता में एक बेचैनी का भाव होता है। फिर भी उनके जैसा आकर्षण किंचित् अन्य लग्नवालों में नहीं होता। और न उन जैसी प्रगतिशीलता ही किसी में होती है।

उनके व्यक्तित्व का खिंचाव कुछ ऐसी विशेष विचित्रता रखता है, कि उनका मित्र मण्डल शीघ्र ही अति विस्तृत होजाता है। उनके मित्र उनकी महानता देखकर नहीं खिंचते, और न उनके किसी गुण पर ही मोहित होते हैं। वे केवल उनके व्यक्तित्वके विचित्र आकर्षण से ही खिंचे रहते हैं। यदि उनके किसी मित्र से पूछा जाय कि वे क्यों उनसे मित्रता रखते हैं, तो कोई मित्र भी इसका उत्तर न दे सकेगा। कोई उत्तर दे सके या नहीं यह सत्य है कि उनका जादू भरा व्यवहार शीघ्रही मित्रता उत्पन्न कर लेता है। किंचित् वे जीवनकी गहराइयोंको खूब समझते हैं; मनुष्यकी निर्बलताओंको और उसकी त्रुटियों को खूब समझते हैं, और उनसे सहानुभूति रख सकने की क्षमता रखते हैं। यह उनकी अनोखी और तेज़ सूझके कारण ही हो पाता है। इसीसे जब वे किसीके सम्पर्क में आते हैं, तो उसकी त्रुटियोंके प्रति सहानभूति रखकर उससे मिलते हैं। यह विशालता कुम्भ लग्न वालोंका अतिही विलक्षण लक्षण है। इस विशालताकी छाया में जो भी उनका मित्र आता है, विना कुछ सोचे, परवश हुआ उनसे आकर्षित होजाता है। उनकी विस्तृत मित्र-मण्डली का किंचित् यही कारण है।

मकर लग्नवालों की भांति वे भी अतिशय धैर्यशाली होते हैं, और किसी स्थायी सफलता के लिये प्रयत्न करते रहते हैं! स्वभावतः उन्हें इतिहास से रुचि होती है। पिछली बातों का वे गम्भीरता से अध्ययन करते हैं, और फिर अपने तीव्र मस्तिष्क के बल पर उस अध्ययन को आधुनिक स्थिति से मिलाते हैं, आधुनिक प्रश्नों व समस्याओं का हल अपने अध्ययन व समझ के बल पर ढूंढते हैं। इस प्रयासमें वे अति प्रगतिशीलता से काम लेते हैं। वे रूढ़िवादी नहीं होते। किसी भी रूढ़ि वा रिवाज़ को अपनी प्रगतिशीलता के बल से उखाड़ फैंकना उनके लिये अति सुगम होता है। इस भाँति वे अति क्रान्तिकारी व्यक्ति होते हैं। कुम्भ क्रांतिकारियों की राशि है। कुम्भ लग्न वाले कब क्या करेंगे, कोई नहीं जान सकता। वे अपने किसी भी चोले को उतारकर कभी भी फैंक सकते हैं, और कोई सा नया चोला धारण कर सकते हैं।

वे अधिक धार्मिक व्यक्ति नहीं होते धार्मिक रूढ़ियों पर उन्हें हँसी आती है। बड़े महन्तों व विद्वानोंके भाषणों को सुनकर भी वे एक शून्यता की हँसी हँसकर चलते होते हैं। किंचित् उनकी दृष्टि इतनी गुणों पर नहीं जाती, जितनी त्रुटियों पर और यह त्रुटियों का भाव ही उन्हें हँसा देता है। कोई भी अपनी विद्वत्ता के बल पर वा भाषणों के बल पर उन्हें अपने प्रवाहमें बहाकर नहीं ले जा सकता।

वे अतिशय विस्तृत अध्ययन के व्यक्ति होते हैं। और इससे उनका दृष्टिकोण अति विशाल होता है। किन्तु

इन गुणों के लिये शनि की प्रबलता आवश्यक है। अपने अति विशाल अध्ययनके बल पर कभी कभी वे अपना व्यक्तित्व भी अति विशाल कर लेते हैं। समाजवादके जन्मदाता कार्लमार्क्सका जन्म इसी लग्नके अन्तर्गत हुआ है। इन लग्न वालोंके विचार, और उनकी सूक्ष्म दृष्टि विस्फोट पैदा कर सकती है, और वे एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर सकते हैं। मनुष्यकी दुर्बलताओंको जितना वे अधिक समझते हैं, उतना और कोई नहीं समझ पाता। हवाई किले न बान्धकर वे इन्हीं दुर्बलताओंका हल ढूंढते हैं और उनकी सूक्ष्मदृष्टि नया मार्ग निकाल ही लेती है और वे मार्गप्रदर्शकके रूपमें सामने आते हैं। मुस्लिमलीग के नेता मि० जिन्ना इसी लग्नसे प्रभावित थे, और जैसा स्पष्ट है उन्होंने भी मनुष्यकी दुर्बलताओंसे खिलवाड़ करके तथा क्रूर धर्मान्धताके नग्न-ताण्डव द्वारा साम्प्रदायिक पाकिस्तान स्थापित किया। जिन्नामें मार्क्सकी विशालता नहीं आई, यतः दोनोंके साथ शनिकी स्थिति एक सी नहीं थी, फिर मार्क्सका अध्ययन भी अधिक विस्तृत था और उसके अन्य ग्रह कहीं अधिक बली थे।

शनिकी दुर्बलतामें वे निधड़क झूठ बोल सकते हैं, बड़ोंके अपमानकी उद्दण्डता अति निर्लज्जता पर कर सकते हैं और निस्संकोच किसी भी निकृष्टताको कर सकते हैं। वे नहीं समझ पाते कि समाज अपनी ही दुर्बलताओं पर क्यों नेत्र मूंद लेना चाहता है, और भेड़चालकी भाँति उनके मूर्खानुयाई भी उनका अन्धाधुन्धानुकरण कर पाप के गर्त्तमें पतित हो जाते हैं। और "मस्जिदमें बैठकर शराब पीनेवाले" दुर्भाव को नहीं समझ पाते।

वे इतने मर्यादाविहीन होते हैं, कि उन्हें समझ सकना नितान्त असम्भव होता है। उनमें भावुकता तो होती नहीं, किन्तु जब वे कोई क्रान्ति उत्पन्न करके मानवताको नया चोला पहनानेका प्रयास करते हैं, तब उनके सभी गुण उच्चस्तर पर देखे जाते हैं, उस समय वे भावुक भी प्रतीत होते हैं, और ऐसे अवसरों पर वे जनताका नेतृत्व भी कर सकनेकी क्षमता रखते हैं और उनकी सूक्ष्मदृष्टि किंचित् उस उठते हुए तूफानमेंसे किसी वास्तविकता अथवा सत्यके निकलने की आशा लिये देखती है। शान्ति उनके लिये आशाविहीन मृतक वस्तु है। रूस देशकी जन्मकुण्डलीमें कुम्भ लग्न है क्रान्ति चिरजीवी हो (Long-live revolution) का घोष वहीं से निकला था।

संक्षेपमें वे अति क्रान्तिकारी, अध्ययनशील, मननशील और सूक्ष्मदृष्टा होते हैं।

सूर्य सप्तमेश होनेसे शुभ होता है।

चन्द्रमा षष्ठेश होनेसे अशुभ होता है।

मंगल तृतीयेश और दशमेश होनेसे सम होता है।

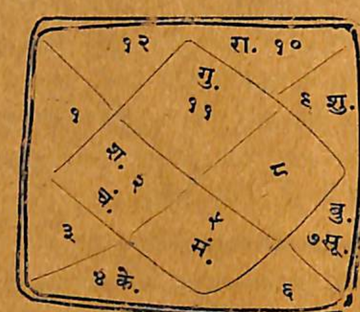
बुध पंचमेश और अष्टमेश होनेसे सम होता है।

बृहस्पति द्वितीयेश और एकादशेश होनेसे सम होता है।

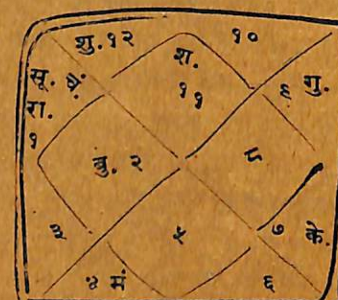
शुक्र नवमेश और चतुर्थेश होनेसे अति शुभ होता है। शनि द्वादशेश है, किन्तु लग्नेश होनेसे शुभ होता है।

नीचे धर्मान्ध सम्राट् औरंगज़ेब और कार्लमार्क्स की कुण्डलियां दी जाती हैं।

औरंगजेब



कार्लमार्क्स



"एक झलक दशाकी ओर"

[ले० श्री पं० चिमनलालजी शर्मा ज्योतिषी गणितमार्तण्ड]

एक लेख 'श्रीस्वाध्याय' शरदङ्क सं० २०११ वि० के आश्विन मासमें जिसका शीर्षक था 'एक झलक दशाकी ओर' जिसके लेखक श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य थे दृष्टिगोचर हुआ। जिसमें ज्योतिषाचार्यजीने विंशोत्तरी दशा विषयमें अपना नवीन मत दर्शाया है, जिसमें यह सिद्धान्त माना है कि अक्षांश २६।४० पर जो बालक पैदा हो उस पर तो कृत्तिकादि क्रमसे विंशोत्तरी दशाका भुक्त भोग्य पूर्ण रूपसे ठीक है जो प्रथा चल रही है, परन्तु जो अक्षांश २७-२८-२९-३०-३१ आदिमें उत्पन्न हो उसमें भोग्य दशाका भेद होना चाहिये क्योंकि विंशोत्तरीके रचयिता श्रीपाराशरजी हैं, उन्होंने जयपुर वा कानपुर प्रदेशमें स्थित होकर दशाके क्रमका निर्माण किया है तथा उसी अक्षांश २६।४० के क्रमानुसार नाक्षत्रिक (अश्विनी भरणीको त्यागकर कृत्तिकासे प्रारम्भ) दशाका आरंभ करना पड़ा। जैसा कि किसीका जन्म स्वाति नक्षत्र और अक्षांश ३१।३० पर है तो उसको जन्म दशा राहुकी प्रारंभ हुई और भयात भभोगानुसार १४।७।१९ वर्षादि भोग्य हुए। यह भोग्य वर्ष २६।४० अक्षांशके मानने चाहिएँ परन्तु जन्म ३१।३० अक्षांशका है जोकि २६।४० से ४।५० अधिक है। इसलिये ३।२० (एक पादके) के राहुके ४ व० ६ मास और १।३० (९० कला) के २।०।१९ वर्षादि और मिले दोनोंका योग किया तो ६ वर्ष ६ मास ९ दिन हुए इसको राहुकी भोग्य दशासे घटाने पर ९ वर्ष १ मास शेष भोग रहे। राहु दशाके इसके उपरान्त जीवादिकी दशा अंकित कर दी जाय इस क्रमसे भोग्य दशानुसार फल स्पष्ट मिलता है। और साथ ही लिखते हैं कि 'अश्विनी भरणी' इन दो नक्षत्रोंका परित्याग करके नवका भाग देकर दशाके जाननेका क्रम कहा है। भला सोचिये तो सही कि इन बेचारे दो नक्षत्रोंने किस जन्म का अपराध किया है? जिनको कि नक्षत्र पंक्तिसे इस प्रकार बाहर निकाल दिया जाता है, जिस प्रकार कि किसी ऋषि पंक्तिमें गुप्त रूपेण प्रविष्ट दो अस्पृश्य जनोंका बहिष्कार हो।

(१) ज्योतिषशास्त्रमें २८ नक्षत्र ही माने हैं प्रारंभ कृत्तिकासे ही है श्रुति भगवती इसकी पुष्टि करती है यथा—"यानि नक्षत्राणि दिव्यान्तरिक्षे अप्सु भूमौ.........अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सहयोगं भजन्तु मे"। इति अथर्ववेदे ॥

याज्ञवल्क्यस्मृतौ—"कृत्तिकादिभरण्यंतं स कामानाप्नुयादिमान्" याज्ञवल्क्यजीने भी कृत्तिकाको पहिला और भरणीको अंतिम नक्षत्र माना है। मनुस्मृतिके टीकाकार कुल्लूक भट्टजीने भी "नक्षत्राणि ग्रहास्तथा" की टीकामें कृत्तिकादिनि नक्षत्राणि लिखा है, इन्होंने भी कृत्तिका नक्षत्र प्रथम माना है। महाभारत, अग्निपुराण, गरुड़पुराण, मार्कण्डेयपुराणादिमें भी कृत्तिकाको प्रथम और भरणीको अंतिम लिखा है, और हैमाद्रिकृत चतुर्वर्ग-चिन्तामणिमें विष्णुधर्मोत्तरका आर्ष प्रमाण भी उपरोक्त बातकी पुष्टि करता है। यथा—

"कृत्तिकादिभरण्यन्ते क्रमादुडुगणो नरः"

वेदभगवान् कृत्तिका नक्षत्रको प्रथम और भरणीको अंतिम मानता है यथा—

"सुहवमाने कृत्तिकारोहिणी चास्तु.........
मघाभे ॥१॥ पुण्यं पूर्वाफाल्गुन्यौ.........मूलम् ॥२॥
अन्नं पूर्वा रासतां मे.........अभिजिन्मे रासतां
पुण्यमेव श्रवणः......सुपुष्टिम् ॥३॥ आमे सहच्छ-
तभिषग्......भरण्य आवहन्तु ॥४॥ इति अथर्ववेदे ॥

इस पर तो अब विशेष लिखनेकी आवश्यकता नहीं क्योंकि वेद स्मृति पुराण और महाभारतादिके प्रमाणोंसे यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि कृत्तिका नक्षत्र ही प्रथम नक्षत्र है।

(२) पंचशलाका, सप्तशलाका, और सर्वतोभद्रवेधमें भी कृत्तिकाको ही प्रथम मानकर वेध देखा जाता है। यदि अन्य नक्षत्रको ही प्रथम मान लो तो फलादेश कभी भी सत्य नहीं

होता और ज्योतिषके आर्षग्रन्थोंका निरादर भी साथ होता है। नारद ऋषिने भी वेधज्ञानके वास्ते कृत्तिका नक्षत्रको प्रथम माना है। यथा—"तिर्यक् पंचोर्ध्वगः पंच रेखे द्वे द्वे च कोणयोः। द्वितीयं शंभुकोणेऽग्नि भचक्रंतत्र विन्यसेत्"।

(३) कृत्तिका नक्षत्र प्रथम क्यों इस पर यथा मति अपने विचार संक्षेप से लिखता हूं। ऋग्वेद सबसे प्रथम प्रकट हुआ, इस बात को आज के वैज्ञानिक इतिहासकार और अनुसंधानकर्त्ता मान चुके हैं कि संसार में सब से प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद है। श्रुतिभगवती कहती है "अग्ने-ऋग्वेदो" इसकी व्याख्या मनुस्मृतिमें है।

"अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनं········ सामलक्षणं"।

संसार में सबसे प्रथम ईश्वरीय ज्ञान ऋग्वेद द्वारा हुआ ऋग्वेद और अग्निका सम्बन्ध है और कृत्तिका नक्षत्र का अधिपति भी अग्नि ही है अतएव वेदमें कृत्तिका नक्षत्र ही प्रथम माना है। कृत्तिका नक्षत्र के मध्यमें जो चार अक्षर आते हैं अ, ई, उ, ए यह चारों अक्षर स्वर हैं, शेष नक्षत्रों में व्यंजन आते हैं। स्वर अक्षरों की स्वतंत्रता है व्यंजनों की नहीं है। स्वतंत्रकी विशेष महिमा होती है यथा—भारतवर्ष अंग्रेजों के पराधीन होने पर भारतवर्ष की कोई बात अन्य देशोंमें नहीं सुनी जाती थी, आज स्वतंत्र है तो देखलो कि कितना मान है भारतवर्ष का। यही बात कृत्तिका नक्षत्र पर भी घटित होती है क्योंकि वह स्वतंत्र अक्षरों का स्वामी है शेष नक्षत्रोंमें यह विशेषता नहीं है। व्याकरण शास्त्रके सूत्रोंमें भी प्रथम अ अक्षरका उच्चारण है। ओम् शब्द ही परब्रह्म है, वेद ओम् की व्याख्या हैं ओम् शब्दमें भी अ अक्षर प्रथम आता है और कृत्तिका नक्षत्रमें भी अ अक्षर प्रथम है इसलिये भी कृत्तिका नक्षत्र की गणना प्रथम है।

(४) यदि कोई बालक ८-१०-१२ अक्षांशपर पैदा हो अथवा १४=१६=१८ आदि पर उत्पन्न होतो आपके लेखानुसार पराशरजी का लिखा हुआ विंशोत्तरी क्रम सारा ही अस्तव्यस्त हो जाता है अतएव आपका जो मत है वह निर्मूल है। कृत्तिकाको प्रथम नक्षत्र मानना वेदाज्ञा है क्योंकि वेदने कृत्तिकाको प्रथम और भरणीको अंतिम माना है। पराशरजी वेद विरुद्ध किस तरह लिखते उन्होंने तो वेदानुसार ही कृत्तिका को प्रथम मानकर विंशोत्तरी दशाका क्रम जो लिखा है वह ही ठीक है अक्षांशों के अधार पर न्यूनाधिकता नहीं होती वेद स्वतः प्रमाण हैं।

"श्रुतिस्मृतिविरोधे श्रुतिरेवबलीयसी स्मृतिपुराणयोर्विरोधे स्मृतिरेवबलवती"। "श्रुतिस्मृतिपुराणांनां-विरोधो········तत्र श्रौतप्रमाणां तु तयोर्द्वैधेस्मृतिर्वरा" इति व्यासस्मृतौ ॥ "श्रुतिर्यत्रप्रमाणस्यात्युक्तिका तत्रनारद" एतदर्थ कृत्तिकासे जो विंशोत्तरी क्रम है वही उचित है अतएव आपका मत हेय है। अलमितिविस्तारेण ॥

सतके पंथ प्रवासी रे !

जो सतके पन्थ प्रवासी रे,
　　　तिन भय चिन्ता न उदासी ॥
जिहि घट में ज्ञान उजारे,
　　　सोहिय नित आनंद धारे।
कबहू नहिं धीरज हारे,
　　　जब अन्तर ज्योति प्रकाशी रे ॥१॥
जिहि नयन होय विकारा,
　　　तिहि दृष्ठी में कछु न्यारा।
अन्धे को है अन्धियारा,
　　　सो बंधे करम की फांसी रे ॥२॥
सज्जन दुरजन जग सारे,
　　　सब निज मम अन्य को धारे।
संसय तज कुटिल मना रे,
　　　छूटे बन्धन चौरासी रे ॥३॥
जब सत की पड़े पिछाना,
　　　हिय शत्रु मित्र नहिं जाना।
निन्दा स्तुति तिहि को समाना,
　　　सब माने प्रसंसा हांसी रे ॥४॥
ऐसी हरि ठगनी लाग,
　　　लज्जा संशय सब त्यागी।
निर्भय निश्चिन्त विरागी,
　　　आनन्द स्वरूप अविनाशी रे ॥५॥

विंशोत्तरीदशापर अनुभव सिद्ध मन्तव्यालोचना

[ले० श्री पं० त्रिभुवननाथ मिश्र शास्त्री]

संसार परिवर्तनशील है। उच्चताकी पराकाष्ठासे अधःपतन तथा पुनर्निर्माण अभ्युत्थानादि क्रम ही संसारका स्वरूप प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। आर्यावर्त तथा इसकी संस्कृति ही वर्तमान समयमें प्रमाण है। इसी तरहसे हमारे ज्योतिशशास्त्रका विगत वीशियोंमें इतना ह्रास हुआ है कि आधुनिक ज्योतिषियोंका किसी भी महान् व्यक्तिके समक्ष एक शब्द भी मुखसे निकालनेका साहस नहीं होता। महामन्त्री पं० जवाहरलालजी नेहरूके कटाक्ष ज्योतिषियों के प्रति समाचारपत्रोंमें आते ही रहते हैं।

इसका एकमात्र कारण ज्योतिषशास्त्रोंका फलादेश समुचितरूपसे न घटित होना ही है। ठोकरें लगने पर आँख खुलना स्वाभाविक है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आधुनिक ज्योतिष विशेषज्ञ अब ज्योतिषके मर्मस्थलोंकी अन्वेषणा पूर्णरूपसे तनमन धन लगाकर परिश्रम करते हुए सफलता प्राप्त कर रहे हैं। ऐसे ज्योतिषी महानुभावों के लिए कोटिशः धन्यवाद है।

मानवीय ज्योतिर्विज्ञान कुण्डली प्रकरणमें दशाप्रकरण ही प्राणस्वरूप है। इसके मर्मस्थलकी त्रुटियोंसे ही आज ज्योतिषियोंकी वाणी असफल हो रही है। ज्योतिष आर्ष-ग्रन्थों में :—

कृते तु मानवं शास्त्रं त्रेतायां वादरायणिः।
द्वापरे शङ्खलिखितौ कलौ पाराशरः स्मृतः॥

इत्यादि वचनोंसे आधुनिक युगमें भगवान् पाराशर प्रणीत ज्योतिषशास्त्र ही फलादेशके लिए रामबाण सिद्ध हो रहा है।

'कलौ विंशोत्तरी तस्माद् दशामुख्या द्विजोत्तम॥'

आदि वचनोंसे तथा दशाफलदर्पण फलविभाग श्लोक १ से ६ तक में कई प्रमाणोंसे निश्चित हो चुका है कि इस युगमें विंशोत्तरीदशा ही ग्राह्य है। अब तक कृत्तिकादित से विंशोत्तरीदशा को लोग लेते आ रहे हैं। परन्तु ध्यान से देखा जाय तो विंशोत्तरीमहादशाको कृत्तिकादितसे ही समस्त कुण्डलियोंमें फलादेश करनेके लिए स्वयं महर्षि पाराशरजीने ही अनुमति नहीं दी है। उनके "कृष्णे तु रविहोरायां चन्द्रहोरागते सिते" इत्यादि वाक्यविशेष प्रमाण हैं। वास्तवमें उपरोक्त भगवान् पाराशरके सूत्रसे विपरीत जितने जन्मसमय तथा जन्मपत्रिकाएँ हैं उन्हींमें विशेषरूपसे ज्योतिषियोंकी वाणियाँ तथा उक्तियाँ असफलसी प्रतीत होती हैं। ऐसे समय पर "जन्मसमयमें त्रुटि होगी" आदि वाक्योंको कहकर ज्योतिषियोंको अपनी प्रतिष्ठा सुरक्षित रखनी पड़ती है। षोडशोत्तरीदशा आधुनिक समयमें मिलान करने पर घटित ही नहीं हो रही है, उसका फलादेश बिलकुल असंगत पड़ता है। फिर 'कृष्णे तु रविहोरायाम्' आदि वचनोंसे विपरीत जन्माङ्कोंका फलादेश कैसे किया जाय। ऐसे स्थलों पर कुछ लोग फलादेश कृत्तिकादित विंशोत्तरीके न घटने पर हताश होकर आर्द्रादित अष्टोत्तरीदशा को लेने लगे, किन्तु फलादेश उससे भी सन्तोषजनक नहीं मिल सका। अन्वेषण करने पर दशाफल-दर्पणमें गणित विभाग पृष्ठ ३ श्लोक २२ को देखनेसे [उपरोक्त शङ्का सरिताकी प्रखर धारामें हताश होकर बहनेवालों में से] सर्वप्रथम ज्योतिर्भूषण श्रीमान् पं० रामचन्द्रजी गौड़को तिनकेका सहारा मिला। प्रथम तो वह आर्द्रादित शब्द तिनकेके स्वरूपमें ही देख पड़ा, परन्तु उसका अवलम्बन करनेसे वही आर्द्रादित शब्द हृष्टपुष्ट नौकास्वरूप सिद्ध हो गया।

ज्योतिषशास्त्रके फलादेश पर बहुत दिनोंसे लगती हुई कालिमा को धोनेके विचारसे अथवा ज्योतिषशास्त्र तथा ज्योतिषियोंके परोपकारार्थ श्री पं० रामचन्द्रजी शर्मा गौड़ ने आजसे एक वर्ष पूर्व ही चिन्ताहरण—जन्त्री इत्यादिक स्थलोंमें शीघ्रातिशीघ्र उपरोक्त विषयको प्रकाशित किया। हम ज्योतिषीके नाते ऐसी अपूर्व अन्वेषणा करनेवाले ज्योतिषरत्न श्री गौड़जीके लिए परमपितासे अमरत्व दीर्घायु के लिए सदैव विनीत हैं, तथा उनसे आशा रखते

हैं कि भविष्यमें और मर्मस्थलों पर अन्वेषण करके हम सब ज्योतिषियोंके उपकारार्थ प्रकाशनमें तत्पर रहेंगे।

इसके पहले उपरोक्त पाराशरजीके वचनोंसे विभिन्न बहुतसे जन्माङ्कोंका फलादेश अतिशय प्रयत्न करने पर भी समुचित रूपसे नहीं घटित कर सके थे, और अब उन जन्माङ्कोंका आर्द्रादित विंशोत्तरीदशाके द्वारा समुचित रूप से फलादेश घटित होते हुए देखकर हम लोग अत्यन्त हर्षित और प्रतिष्ठित हुए।

'श्रीस्वाध्याय' के गतांकमें ज्योतिभूषण श्री बद्रीप्रसाद जी गुप्तने सम्भव है विशेष मिलान तथा अनुभव नहीं किया, जोकि अपनी अनुमति आर्द्रादित विंशोत्तरीदशासे विपरीत प्रकट की है। उदाहरणार्थ श्री गंगवालजी इन्दौर के जन्माङ्क चक्रादिमें उन्होंने चन्द्रकुण्डलीसे कारक ग्रह भौम तथा चन्द्रको मानकर कृत्तिकादित विंशोत्तरीसे ही ठीक-ठीक फल प्राप्तिका अनुमोदन किया है। वह पुनर्विचारणीय है। शास्त्रमें अनफा-सुनफा अधियोगादिक अन्यान्य योगोंको चन्द्रकुंडलीसे विचार करनेका आदेश मिला है, किन्तु कारक प्रकरणमें चन्द्रकुण्डलीसे भी कारक निश्चत करनेका प्रमाण और दशाप्रकरणमें उसका शुभत्व मान लेने के लिए कहीं भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यदि जन्माङ्क तथा चन्द्राङ्क दोनों चक्रोंसे कारक ग्रहोंको निर्धारित किया जायगा तो प्रत्येक कुण्डलियोंमें लगभग एक दो ग्रहोंको छोड़कर शेष सब ग्रह कारक सिद्ध हो जायँगे, फिर तो उनकी दशाका फल श्रेष्ठ होना ही चाहिए। इस तरहसे मानवीय जीवनका अधिकांश समय सुखमय सिद्ध होगा। वर्तमान हाहाकार युक्त परिस्थितियोंका वातावरण ही बहुत न्यून दृष्टिगोचर होना चाहिए, जोकि आधुनिक रूपसे असंगत है।

आज वर्षोंसे मैंने आर्द्रादित विंशोत्तरीके फलादेश को श्रेष्ठ घटते हुए देखकर बम्बई कलकत्ता इन्दौर तथा रायपुर इलाहाबाद इत्यादि स्थानोंपर स्पष्ट घोषणा कर दी है कि जिन व्यक्तियोंको जन्मपत्रीके विषयमें फलादेश न घटनेसे ज्योतिष शास्त्रपर अश्रद्धा उत्पन्न होगई हो वे मुझसे अपना ठीक-ठीक फलादेश जानकर अपनी शङ्काओंका निवारण कर सकते हैं। उपरोक्त शास्त्र युक्तियोंके द्वारा बहुतसे लक्षाधीश तथा कोट्यधीश बड़े-बड़े महानुभावों की कुण्डलीके अघटित फलादेशको शुद्ध करके उन लोगों की ज्योतिषशास्त्र पर पुनः श्रद्धा उत्पन्न कर सका हूँ। अतः उपरोक्त आर्द्रादित विंशोत्तरी दशासे शङ्कित महानुभावोंको मैं अनुभव सिद्ध विश्वास दिलाता हूँ कि जिन जन्माङ्कोंका उपरोक्त नियमसे फलादेश नहीं मिलता हो उनका आर्द्रादित विंशोत्तरी दशासे फलादेश करके ज्योतिष शास्त्रकी आस्था बढ़ानेमें प्रयत्नशील बनें।

मन कैसी चाल चलावे रे।

मन कैसी चाल चलावे रे,
सब ज्ञान ध्यान भुलि जावे रे।
जब मोह पाश नहिं टूटे,
षड्रिपु मन मन्दिर लूटे।
घट पाप भरे तब फूटे,
उपहास पात्र बनिजावे रे ॥१॥
निशदिन लागी विषयाशा,
सब प्रकार मनको दासा।
तन मन धन होत विनाशा,
फिर पाछे क्यों पछतावे रे ॥२॥
श्रद्धा न प्रेम हिय लेशा,
औरन को दे उपदेशा।
हिय और बाह्य कछु वेषा,
सो शीघ्र पतनको पावे रे ॥३॥
जब सूक्ष्महि अंकुर विषयन को,
सो लागहि के न दिखावनको।
तरुवर होइ जावे बीजनको,
तप संयम योग नशावे रे ॥४॥
मन औरन की मत ध्यान धरे,
अब निज सुधारकी लगन धरी।
साधन सत्संग विराग धरे,
'आनन्दस्वरूप' समझावे रे ॥५॥

ज्योतिश्शास्त्रानुशीलन

[ले० ज्योतिर्भूषण श्री बद्रीप्रसादजी गुप्त ब्यानिया गणकचूड़ामणि]

जन्मपत्र, वर्षपत्र तथा प्रश्नादिकालमें ग्रह स्पष्ट आधार अधिकतर प्राचीन करणग्रंथ (रामविनोद, मकरंद तथा चंडु आदि) पर और कुछ दृश्यगणित पर चल रहा है। जबसे ग्रीन्विच आदि वेधशाला द्वारा ग्रहगतिसे शोधन होकर ग्रीन्विच, भारत आदिसे जो पंचांग प्रचलित हुए हैं तबसे यही वादविवाद चल रहा है। कुछ विद्वान् प्राचीनगणितको और कुछ नवीन पद्धतिके दृश्यगणितको ठीक मानते हैं, किंतु अभी तक यह निश्चय न हो पाया कि किस पद्धतिके ग्रह माननीय हैं।

महर्षि पाराशरने बृहत्पाराशर होराशास्त्रमें कहा है किः—

यस्मिन्काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
ततएव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ च स्फुटौ विदा ॥१॥

जिस समय जिस प्रकारसे ग्रहोंमें दृग्गणितैक्य हो उसी प्रकारसे ग्रहस्पष्टके कार्य करने चाहिये।

दामोदरपद्धतिमें भी यही दिया है कि :—

यान्ति संसाधिताः खेटा येन दृग्गणितैक्यताम्।
तेन पक्षेण ते कार्याः स्फुटास्तत्समयोद्भवाः ॥२॥

और प्राचीन सिद्धांतों में भी कहा है किः—

शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः।
युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलम् ॥
इत्थं भाण्डव्य संक्षेपादुक्तं शास्त्रं मयोदितम्।
विस्तरत्री रविचंद्राद्यैर्भविष्यति युगेयुगे ॥
(वशिष्ठसिद्धान्त)

मुनिप्रणीते मनुजैः क्वचिच्च दृश्यतेऽन्तरम्।
तदा तदेव संसाध्यं न कार्यं सर्वमन्यथा ॥ (सि.सु.)
संसाध्यं स्पष्टतरं बीजं नालिकादियंत्रेभ्यः।
तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ ॥ (ब्रह्मसि.)

और इन्हीं वाक्योंके अनुसार ब्रह्मगुप्त, मकरंदमिश्र तथा गणेश दैवज्ञ आदिने अपने-अपने समय में नलिका-बंधन आदि द्वारा ग्रहोंकी गति आदिको संशोधन करके करणग्रंथ बनाये हैं, और शक १४४२ में ग्रहलाघवकारने भी ग्रहशोधन करके ग्रहलाघव बनाया है। इनसे भी यही स्पष्ट है कि कुछ न कुछ अंतरग्रहोंकी गतिमें अवश्य होता है।

मेरे विचारमें जिस सिद्धांतके ग्रहोंसे व्यक्तियोंके जन्मादि फल ठीक मिलें, वास्तविकतः वह ही माननीय हैं और वही जन्मपत्रादिमें लगाने चाहिएँ, क्योंकि मनुष्य फल न मिलने पर दिन दिन ज्योतिष की ओर अविश्वास करते चले जा रहे हैं और उसके आक्षेप का भंडा उच्च श्रेणीके विद्वजनों पर भी फोड़ा जाता है।

इसका निश्चय कि कौन कौन ग्रह किस किस सिद्धांत से मिलते हैं? मेरी दृष्टिमें सिवाय इस आधार के कि व्यक्तियोंकी आयुमें जो घटनाएँ हो चुकी हों, उन घटनाओंका ब्यौरा समय सहित लेकर उन घटनाओंके योग उनकी जन्मकुंडली पर घटाकर देखे जावें और विशेषकर उन घटनाओंके योगोंको जिनका सम्बंध ग्रहोंके षड्वर्ग, दशवर्ग आदिसे हो देखा जावे क्योंकि दशवर्गादिके अंतर्गत न्यूनांशान्तर पर ही वर्ग बदल जाते हैं। मेरे विचारमें ऐसा होना असंभव तो नहीं है, किंतु कठिन परिश्रमाश्रयभूत अवश्य है और साधारणतया इतना समय किसके पास हो सकता है।

मुझको लगभग १७, १८ वर्षसे इस शास्त्रमें रुचि उत्पन्न हुई है। तभीसे मैं उपरोक्त विषयका अन्वेषण तथा प्रयास कर रहा हूँ और ऋषि तथा आचार्योंके दिये

हुए योगों को घटना व्यतीत जन्मकुंडलियों से पुष्ट कर रहा हूँ। मेरे पास इस समय तक लगभग ६०० जन्म-कुंडलियां एकत्रित हैं, जिनको शीघ्र प्रकाशित करनेकी चेष्टामें हूँ। उन कुंडलियोंमें घटनाओंके योगों द्वारा अनुभव करनेपर मैं अब तक इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि:—

(१) सूर्य, चन्द्रमा तथा राहु, केतु सूर्यसिद्धांतानुसार और शेष पंचतारा नवीनपद्धतिके अनुसार मिलते हैं।

(२) प्राचीन श्लोकोंमें जिनमें युक्त, समन्वित, अन्वित, संयुक्त, स, सहित शब्द दिये हैं वहां पर पाराशर तथा अन्य आचार्योक्त चार प्रकारके सम्बंध ग्रहण करनेका आशय है और जहां युत, संयुत शब्द दिये हैं वहां साथ बैठनेका आशय है।

(३) ग्रहों की दृष्टिमें चर स्थिरादि स्थित दृष्टियां भी दृष्टिगोचर रखकर सम्बंध लेना परम आवश्यकीय है।

(४) श्लोकोंमें धनेश, सहजेश, सुखेश आदि द्वारा ज्योतिषमें जितने भी योग ऋषि तथा आचार्यों ने कथन किये हैं वह द्वादशभाव स्पष्ट करनेपर जिस जिस तनु धन आदि भाव में जो राशि आवे उनसे धनेश आदि मानकर जन्म लग्न और चंद्रलग्न दोनोंसे उस योग को देखकर फल निकालने चाहिये।

इस समय मैं केवल ग्रहों की गति का विषय उदाहरण देकर लिख रहा हूं:—

उदाहरण—जन्म सं० १९९७ शक १८६२ आश्विन शुक्ला १ बुधेष्टम् ६।५२ सूर्य ५।१५ लग्न ६।२१।३०।५६ दशमभाव ३।२५।२७।२२।

जन्मलग्नम्



प्राचीन गणितानुसार स्पष्ट ग्रह

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
५	५	५	६	०	४	०	५	११
१५	२३	३	६	२२	२	१६	१७	१७
२१	३०	२८	८	१७	५७	५३	५७	५७
७	५३	१	२०	३५	४३	३४	५७	५७

विंशोत्तरीदशाभौम वर्षादि ६।१०।२५।४३।११

नवीनगणितानुसार शनिस्पष्ट रा. ०।२०।३८।३० वक्री।

इस बालककी मृत्यु पिताके कटुवाक्यों पर सं. २०१० तेरहवें वर्षमें जलमें डूबकर हुई है उस समय राहुकी दशामें शनिका अंतर था। नवीनपद्धतिसे शनि तुलाके नवांशकमें गुरुसे युत है इसलिये इस प्रमाण—

तुलांशकस्थिते मंदे जीवदृष्टिसमन्विते।
त्रयोदशाब्दे मरणं जातस्य पितृवैरिणः॥

के अनुसार १३वें वर्षमें मृत्युयोग होता है, प्राचीन गणित का शनि ०।१६।५३।३४ कन्याके नवांशकमें रहता है इसलिये शनि नवीन पद्धति गणितका मिलता है। जलमें डूबकर मृत्यु इस योगसे हुई है कि धनेश और लग्न नवांशेश मंगल, राहुसे युत है और शनिसे उसका पूर्णसम्बंध है जिसका योग यह दिया है कि—

भुक्त्यंशपौ भानुसुतेन युक्तौ दुःस्थानगौ वा विषभक्षणेन
सहाहिना वा शिखिना च तस्य मृत्युर्भवेद्रज्जुनिबन्धनेन
पिशाचपीडाऽग्निजले विपत्स्याद्धोमाहिमन्दान्यतमेन युक्ते

इस योगके अनुसार राहुदशामध्ये शनि अंतरमें मृत्युका योग हुआ। (क्रमशः)

सूक्ति-सुधा

सरस हँसन खुलत हिं अधर, दियत दसन छवि ऐन।
मनुमनि सम्पुट में जड़ी, मुतियन पाँती मैन॥
हाँ और ना के बीच ज्यों, बरनत ब्रह्म सुजान।
त्यों कामिनि कटिको करत, सतकवि सदा बखान॥
तिल प्रिय गोल कपोल लख, कहि है मुख सों आप।
मनों जलज पै मुदित मन, अड्यो मधुप मधुथाप॥

अनुभूतयोगमाला

[ले० राजगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

(गताङ्कसे आगे)

१ जिसके जन्म-समयमें लग्नेश और अष्टमेश चर-राशिमें होते हैं, उसकी आयु दीर्घ होती है।

२ जिसके जन्म-समयमें लग्नेश स्थिर राशिमें और अष्टमेश द्विस्वभाव राशिमें होता है, उसकी आयु दीर्घ होती है।

३ जिसके जन्म-समयमें लग्नेश द्विस्वभाव राशिमें और अष्टमेश स्थिर राशिमें होता है उसकी आयु दीर्घ होती है।

"आयुः पितृ दिनेशाभ्याम्। प्रथमयो रुत्तरयोर्वा दीर्घम्।" (जैमिनी सूत्र)

उपपत्तिः—लग्न शरीर-स्थान है। "लग्नाच्छरीरस्य सहाविर्भावात्" इस ज्यौतिष—मीमांसा—दर्शनके सूत्रमें लग्नसे शरीरके ज्ञानकी उपपत्ति स्पष्ट रूपसे प्रतिपादित है।

अष्टम—स्थान, आयुः स्थान है।

"अष्टममायुषः स्थानम्"। (उडुदाय प्रदीप) नवम-स्थान भाग्य-स्थानहै। नवमस्थानके भाग्य-स्थानत्वकी उपपत्ति "नवमैकादश द्वादशेभ्यो धर्मभाग्याय व्ययानां स दशम माविर्भाव पौर्वापर्य क्र ात्" इस 'ज्यौतिष मीमांसा दर्शन' के सूत्रमें स्पष्ट रूपसे प्रतिपादित है। पूर्व जन्म जनित कर्मका नाम भाग्य (दैव) है।

"पूर्वजन्म जनितं पुरा विदः कर्म दैवमिति संप्रचक्षत।" (शकुन वसन्त राज)

अष्टम-स्थान भाग्य-स्थानसे व्यय-स्थान है।

उत्पत्ति-समयसे भाग्य (पूर्वजन्मकृतकर्म) भोगसे क्षीण होने लगता है। इसलिए भाग्यका व्यय करना अष्टम-स्थान और आयुमें समान धर्म है। अतएव 'आनुकूल्यं धर्म सादृश्यात्' इस ज्यौतिष-मीमांसा-दर्शनके सूत्रसे अष्टम-स्थानसे आयुकी अनुकूलता सिद्ध हुई। अनुकूलताके सिद्ध होने पर 'स्वस्वानुकूलभ्यो व्यष्ट्या सर्वेषाम्' इस ज्यौतिष-मीमांसा-दर्शनके सूत्रसे अष्टम-स्थानसे आयुका ज्ञान उपपत्ति-सिद्ध हुआ।

इस प्रकार लग्नेश शरीर-स्थानका स्वामी होनेसे और अष्टमेश आयुः स्थानका स्वामी होनेसे जीवन-शक्तिका अधिष्ठाता सिद्ध होता है।

जब तक नासिका रन्ध्रोंसे वायुका बहिर्गमन और अन्तः प्रवेश होता रहता है तभी तक जीवन होता है। इस प्राण-संचारके बंद होनेपर मृत्यु हो जाती है। यदि लग्नेश-अष्टमेश चरराशि में होते हैं तब चरत्वके प्रभावसे बहुत समय तक प्राण-संचार होता रहता है और रक्तादि-संचार भी होता रहता है। अतएव उस समयमें उत्पन्न व्यक्तिकी आयु दीर्घ होती है।

लग्नके उदयके साथ ही शरीरका आविर्भाव होता है। इसलिए लग्न उत्पत्ति-स्थान भी है। अतएव लग्नेश रसोत्पादन द्वारा शरीर-पोषणकर जीवन-रक्षा करनेवाली शक्तियोंका अधिष्ठाता है। अष्टम-स्थान गुद-लिङ्ग-स्थान है। इसलिए अष्टमेश गुद-लिङ्ग द्वारा मलोत्सर्जन कर जीवन-रक्षा करने वाली शक्तियोंका अधिष्ठाता है। नासिकारन्ध्र द्वारा शुद्ध वायुके अन्तः प्रवेशसे जीवन-रक्षा करना भी लग्नेशका कार्य है। अशुद्ध वायुको नासिका-रन्ध्रसे बाहर निकालकर जीवन-रक्षा करना मलोत्सर्जनेन्द्रिय गुद-लिङ्गके अधिष्ठाता अष्टमेशका कार्य है।

जिस व्यक्तिके जन्म-समयमें अव्यवहित राशियोंमें स्थित लग्नेश-अष्टमेश वा उनकी व्याप्त शक्तियोंके साथ वे अव्यवहित राशियोंमें चर राशियोंके मध्यमें होते हैं, उसकी जीवन-शक्तियाँ भी उस व्यक्तिकी जिसके जन्म-समयमें

लग्नेश-अष्टमेश चर राशिमें होते हैं जीवन-शक्तियोंके समान दीर्घ काल तक कार्य करती हैं। इसलिए उसकी आयु भी दीर्घ होती है।

उदाहरणः—किसी व्यक्तिके जन्म-समयमें लग्नेश वृष राशिमें और अष्टमेश मिथुन राशिमें है। इसलिए लग्नेश और अष्टमेश मेष-कर्क रूप चर राशियोंके मध्यमें अव्यवहित राशियोंमें हैं। इस प्रकार इस व्यक्तिका दीर्घायुर्योग सिद्ध हुआ।

दो शुभ ग्रहोंके मध्यमें ग्रह शुभ युक्त ग्रहके समान शुभ फल और दो अशुभ ग्रहोंके मध्यमें ग्रह अशुभयुक्त ग्रहके समान अशुभ फल देता है। इसी अभिप्रायसे "शुक्रः खलान्तर गतः खल संयुतो वा" इत्यादि उक्तियाँ हैं। इसी प्रकार दो चर राशियोंके मध्यमें लग्नेश-अष्टमेश चर राशिस्थ लग्नेश-अष्टमेशके समान फल देते हैं।

उदाहरणः—किसी व्यक्तिके जन्म-समयमें लग्नेश वृष-राशिमें और अष्टमेश कन्या-राशिमें है।

जाति-साम्यसे चर राशिस्थ ग्रहकी शक्तियाँ अन्य सब चर राशियोंमें, स्थिर राशिस्थ ग्रहकी शक्तियाँ अन्य सब स्थिर राशियोंमें और द्विस्वभाव राशिस्थ ग्रहकी शक्तियाँ अन्य सब द्विस्वभाव राशियोंमें व्याप्त होती हैं।

इसलिए वृष राशिस्थ लग्नेशकी शक्तियाँ सिंह-वृश्चिक-कुम्भ राशियोंमें और कन्या राशिस्थ अष्टमेशकी शक्तियाँ मिथुन-धनुः-मीन राशियोंमें व्याप्त होती हैं।

इस प्रकार वृष राशिमें लग्नेश और मिथुन राशिमें कन्या राशिस्थ अष्टमेशकी व्याप्त शक्तियाँ मेष-कर्करूप चर राशियोंके मध्यमें हें। कन्या राशिमें अष्टमेश और सिंह राशिमें वृष राशिस्थ लग्नेशकी व्याप्त शक्तियाँ कर्क-तुला रूप चर राशियोंके मध्यमें हैं।

चर स्थिर और द्विस्वभाव राशियोंकी व्याप्त शक्तियाँ भी क्रमशः चरस्थिर और द्विस्वभाव राशियोंके समान फलोत्पादन करती हैं।

इस प्रकार इस व्यक्तिका दीर्घायुर्योग सिद्ध हुआ। इस लेखके सार रूप स्वनिर्मित दो श्लोक :—

देहाधीशः पितृपतिरायुरधीशो दिनाधीशः।
यस्मात् तस्मादायुः पितृ दिनेशाभ्यामिति प्राहुः॥
यदि पितृ दिनेशौ चरभे तौ शक्ती चरान्तरे च दीर्घायुः।
प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घमिति प्रोच्यते तस्मात्॥

यदि पितृ दिनेशौ लग्नेशाष्टमेशौ चरभे चर राशौ भवतो। वा तौ लग्नेशाष्टमेशौ शक्ती तयोर्व्याप्ते शक्ती वा चर राश्योरन्तरे तदा दीर्घायुः।

हस्तरेखाका प्रारम्भिक ज्ञान

हथेलीकी परीक्षा करते हुए अंगुलियोंकी आकृतिसे मनुष्यकी योग्यता तथा गुणादिका विचार महत्व विषयोंके परिज्ञानके लिये विशेष रूपसे किया जाता है। अंगुलियाँ प्रत्येक हाथमें पांच होती हैं। कभी-कभी न्यून या पांचसे अधिक भी पाई जाती हैं और यह बात प्राचीन शास्त्रोंके अनुसार अशुभ मानी गई है। प्रथम अंगुलीको तर्जनी किंवा गुरुकी, दूसरी मध्यमा अथवा शनिकी, तीसरी अनमिका तथा रविकी, चौथीको कनिष्टिका किंवा बुधकी अंगुली कहते हैं। इनका नायक है—अंगूठा जिसको शुक्रकी अंगुली भी कहते हैं। कार्योत्पादन शक्तिको अंगुलियाँ सहायता देती हैं। इसलिये इनका स्थान महत्वपूर्ण है और इनका आकार समस्त क्षेत्रों पर गहन प्रभाव रखता है।

अंगुलियाँ लम्बी या छोटी, अधिक मोटी, बाँकी, टेढ़ी या चपटी नहीं होनी चाहियें और इनकी शरीरकी आकृति के अनुसार बनावट सुन्दर प्रतीत होनी चाहिए। हाथकी सब अंगुलियाँ सीधी भरी हुई तथा हाथकी अपेक्षा बड़ी अथवा छोटी न हों तो वे उत्तम समझी जाती हैं।

यदि अंगुलियोंका आधार सम धरातलमें होतो उनका प्रभाव शक्तिशाली तथा सफलता कारक होगा और उनके स्वयं गुण अधिक रूपमें पायें जायेंगे। जो अंगुली अपने

धरातल स्थानमें नीचे तथा दूसरी अंगुलीकी ओर झुकी होगी उसका प्रभाव कम होगा तथा गुणोंमें न्यूनता पाई जायेगी।

छोटी अंगुलियाँ

मुट्ठी बांधते समय यदि अंगुलियोंकी लम्बाई शुक्रके स्थानसे नीचे रहे तथा हाथकी आकृतिके अनुसार छोटी प्रतीत हों तो वे छोटी अंगुलियाँ कहाती हैं, कभी-कभी इसका आकार बहुत छोटा भी मिलता है और यदि ऐसा पाया जाये तो व्यक्तिगत जीवनमें लम्बी हथेली और इसके गुणों तथा दोषों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

छोटी अंगुलियों वाले व्यक्ति संकुचित स्वभावके, साहसी, तीव्र बुद्धिके और हरेक बातको शीघ्र समझने वाले तथा चतुरहोते हैं। प्रत्येक विषयको चित्तमें आतेही निभानेके लिये तत्त्वण तैयार हो जाते हैं। शीघ्रता स्वाभाविक बात है और विषयगत विस्तारको पसन्द नहीं करते हैं। इसी कारण यदि हाथमें मस्तक रेखा प्रभावशाली और सीधी होतो मानसिक सन्तुलन बढ़ जायेगा साथ ही हृदय रेखाका अध्ययन भी करना चाहिए। क्योंकि इसका प्रभाव मानसिक अस्थिरताको न्यून करेगा तथा भावुकता घटाकर चरित्रमें आत्मविश्वास बढ़ानेमें सहायता देगा। छोटी अंगुलियोंवालोंकी लेखन शैली संक्षिप्त किन्तु विस्तृत तात्पर्यको प्रकट करने वाली होती है। उनके विचारोंमें गम्भीरता आत्मानुभवके रूपमें पाई जाती है। ऐसे हाथों में हथेलीकी चौकोर रचना और मस्तिष्क रेखामें विस्तारका तत्त्व ऊंचे टेक्नीकल कार्यकर्ताओंके हाथोंमें वा वायुयान-चालकों और इंजिनियरोंमें देखा गया है।

रंग वा वर्णसे शुभाशुभत्व

हस्त परीक्षा करते समय अन्य विषयोंका अध्ययन करते हुए वर्णका विचार जो शारीरिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण है, करना चाहिये, क्योंकि इसका सम्बन्ध रक्त तथा इसकी संचालन क्रियासे है, जो हमारी मानसिक शक्तिको प्रभावित करती है।

हमारे पूर्व-आचार्योंने वर्णके विषयमें लिखा है कि यदि करतल सूर्यके उदय समय ताम्रके समान Red रंगका हो तो श्रीमंत होता है। इसके तीन भेद हैं। पहला गुलाबी तथा लाल रंग उत्तम है। दूसरा श्वेत तथा पीला रंग सामान्य है और तीसरा काला तथा नीला रंग अशुभ है। पीले रंगकी हथेली और रेखायें अपना प्राकृतिक प्रभाव विदित करनेमें मन्द होती हैं और यदि कोई रेखा शुभ आकार तथा उत्तम विचार प्रगट करती है तो प्रभावमें अन्तर होगा जो शुभ लक्षणोंके होते हुए भी प्रभावशाली नहीं सिद्ध होगा, क्योंकि उसका रंग दोषयुक्त है, इसके विपरीत दोषयुक्त रंगका प्रभाव अशुभ चिन्होंको अपने प्रभावमें निर्बल रखेगा। यदि इस विशेषताका अध्ययन आयु रेखासे किया जाये, तो शीघ्र ही ज्ञान होगा कि जहाँ आकृतिमें पीला या श्वेत रंग विद्यमान है, वहाँ जीवन रोगग्रस्त और जीव शक्ति दुर्बल होगी। परन्तु इसके विपरीत गुलाबी तथा स्वस्थ रंगकी रेखावाले व्यक्तियोंमें जीवन-शक्ति तथा शारीरिक बल सर्वदा स्थित रहेगा और वे शरीर का सुख पायेंगे।

(Recuperativ Energy) शारीरिक बलका मानसिक स्थितिसे गहन सम्बन्ध होनेके कारण यह विषय विचारणीय है।

यदि हाथमें रेखाओंकी संख्या अधिक है और करतल भाग पर एक जाल-सा बना हुआ दृष्टिगोचर होता है, तो जीवन अशान्त, अस्थिर तथा चिन्तायुक्त रहेगा और सुखका अभाव होगा। मानसिक दृष्टिकोण परिवर्तनशील और कई कामोंको एक ही समय पर समाप्त करनेकी इच्छा जो प्रत्येक कार्यकी राहमें बाधा-कारक होगी, पाई जायेगी। इसलिये ऐसी दशामें आत्मिक बलको संयममें रखनेकी अनुमति दी जाती है।

रेखाओंकी कम संख्या चरित्रमें स्थिरता और संयम उत्पन्न करती है और यदि यह रेखायें स्पष्ट तथा आदर्श रूपमें हों तो ऐसे व्यक्ति विचारशील, पराक्रमी तथा संयम का पालन करने वाले होते हैं। मानसिक दृष्टिसे चतुर और आशावादी होते हैं।

इन दोनों बातोंको विचारते हुए आपको रेखाओंमें गुण तथा दोष जिनका वर्णन किया जा चुका है ध्यानमें रखने चाहिएँ।

यदि हथेली चौड़ी और आकृतिमें बड़ी होतो ऐसे व्यक्तियोंमें साहस, पराक्रम तथा पुरुषार्थ उत्तम पाया जायगा और उन्हें जीवनमें खेलकूदसे रुचि होगी। वे गम्भीर घटनाओंका सामना होने पर घबरायेंगे नहीं और सामाजिक व्यवहारमें उत्साहित रहेंगे।

यदि करतल भाग छोटा और तंग है तो घरेलू वातावरणमें अधिक रुचि रहेगी और उनकी मानसिकवृत्तिका विकास सीमित रहेगा। ये लोग अपने जीवनमें आपत्तिके समय शीघ्र ही घबरा जायेंगे। इसी कारण इन्हें सामाजिक जीवनमें कम रुचि होगी और साधारणसे साधारण घटनाओंसे चित्तमें व्याकुलता तथा अशान्ति अनुभव करेंगे।

इन बातोंका सम्बन्ध हस्त परीक्षामें मानसिक तथा कार्योत्पादन शक्ति पर विशेष रूपसे प्रगट होता है। यहाँ उदाहरणके रूपमें यदि मस्तिष्क रेखाकी ओर विचार करें तो आपको ज्ञान होगा कि पहली दशामें रेखाके ऐसे गुणोंमें जिसका मानसिक विकाससे सम्बन्ध है वृद्धि होगी। आत्मिक विश्वास में उन्नति तथा शक्तिका विस्तार होगा और दूसरी दशा में (Narrow vision) प्रत्येक पहलूको विचारते समय दृष्टिकोण सीमित रहेगा। रेखाओं की व्याख्या करते समय इन बातों पर और अधिक विचार किया जायेगा।

रेखाओंकी स्थिति विचारनेसे पहले हमारे लिए यह आवश्यक है कि हथेलीकी रचना पर विचार करें, क्योंकि रेखाओंकी विशेषता करतल भाग पर निर्भर है।

मणिबन्ध स्थानसे अंगुलियोंके मूल तकके भागको हथेली कहते हैं। यह बीचमेंसे दबी हुई या बहुत ऊपरको उभरी हुई या एक समान न होतो दोषयुक्त होगी और रेखाओंको स्वाभाविक रूपसे प्रभावित करेगी। स्पर्श करनेसे गुदगुदा, कठोर, चिकना, रूक्ष और लचकदार होना प्रकृतिअनुसार गुण तथा दोष प्रगट करता है, इसलिए हाथकी परीक्षा और रेखाओंका प्रभाव वर्णन करते समय भलीभाँति विचार करना चाहिए। यदि करतलमें नसें उभरी हुई न दिखाई दें और प्रत्येक दृष्टिसे आकार सामान्य होतो अच्छा करतल समझा जाता है और इसका प्रभाव गुणोंमें वृद्धिकारक होता है, तथा व्यक्तिगत जीवनमें कठिनाइयों और रेखाओंके दोषोंको घटानेमें शक्ति प्रदान करता है।

—ग्रहविज्ञान

विंशोत्तरी दशामें आर्द्रादि की आवश्यकता

[ले० श्री पं० रामचन्द्रजी शर्मा ज्योतिषी]

गताङ्कमें श्रीबद्रीप्रसादजीगुप्तने मेरे दशाक्रमके प्रतिवादमें कुछ लिखा है अतः मैं ब्यानियाजी का आभार मानता हूँ कि आपने चर्चा प्रारम्भ करके इस ओर विद्वान् अन्वेषकों का ध्यान आकर्षित किया है।

गुप्तजी ! आपने मेरा लेख बराबर पढ़ा नहीं और प्रतिवाद किया है, कृपया पहले पढ़ें और समझें तो विशेष अच्छा होगा।

आप सबको विंशोत्तरी ही मानना चाहिये ऐसा स्पष्ट निर्णय पूर्वाचार्योंका बतलाते हैं और पाराशरीमें केवल कृष्णपक्षमें रविहोरा तथा शुक्लपक्षमें चंद्रहोरा को कृत्तिकासे मानना बताते हैं फिर शेष को क्या प्रमाण चाहिए ?

आप चंद्रसे ही योग मानकर विंशोत्तरीके फल बताने में पूर्वाचार्योंका प्रमाण कहते हैं परंतु कोई ग्रंथ या प्रमाण तो बताया ही नहीं। यदि लग्न और चंद्र दोनों से पाराशरी तत्वानुसार शुभाशुभ मूल देखने लगेंगे तो प्रायः अशुभ रहेगा ही नहीं। आजतक शास्त्रमें चन्द्रसे विंशोत्तरी देखनेमें योग मानना पाराशरीमें कहीं भी नहीं है, यह तो शायद वैसे ही ग्रंथोंमें हो सकता है जैसे आजकल तेजी मंदी बतानेमें कई पुस्तकें नई निकली हैं उनमें प्रायः सभीमें यह बताया है कि मंगल गुरु पश्चिममें उदय होवे या पूर्वमें अस्त हो तो इस प्रकार तेजीमंदी होगी। जबकि ये दोनों बातें कभी हुई नहीं न हो सकती हैं तथा होगी

भी नहीं, उसका फल बताना जैसे रातमें सूर्योदयका बताना है। मनमानी कल्पना तो शास्त्रके जानकारों को नहीं करनी चाहिये।

हमने पाराशरीमें आर्द्रा नहीं बताया, वहां यह कहा है कि यही पाराशरी ३५।१८ का श्लोक दशाफलदर्पणमें है वहां आधार की जगह आर्द्रा ही है, यदि पाराशरीमें भी आर्द्रा मान लिया जावे तो ३५।१३ वां श्लोक युक्ति संगत ठहरता है अन्यथा वह व्यर्थ रहता है, व्यर्थ पूर्वाचार्य लिख सकते नहीं। और पाराशरी ग्रंथ इधर उधरसे संग्रह किया हुआ है, कोई हस्त लिखित कभी भी प्राप्त नहीं है। ऐसा पहले ही पाराशरीमें स्पष्ट दिया है। ऐसी दशामें आधार (आर्द्रा) मिलता हुआ है और फलादेश (अनुभव) द्वारा सिद्ध होता है। यह प्रेसकी भूल है जिसे सुधारना चाहिये।

योग बनाना और बात है, विंशोत्तरी दशाका शुभाशुभ मानना पृथक् है। जैसे केंद्रमें स्वगृही गुरु सर्वोत्तमयोग (शुभप्रद) है पर दशामें यदि सप्तमेश है तो मारक ही हो सकता है। तथा लाभेश पापप्रद माना है और ऐसे सभी ग्रह ११वें शुभप्रद रहते ही हैं। चन्द्रसे सुनफा या अधियोग होनेपर भी यदि विंशोत्तरीके शुभाशुभत्वमें पाराशरी तत्वानुसार शुभ नहीं हैं तो शुभफल दशामें नहीं होता ऐसा ही मानना युक्तियुक्त है।

आप पहले विद्वानोंसे सम्मति लें फिर चन्द्रसे योगकारकमें दशा श्रेष्ठ बताना समझें। विंशोत्तरी दशामें श्रीमान् सीतारामजी झाने भी अपनी पाराशरीमें या किसीने भी चन्द्रसे भी मानना बताया नहीं। यदि होता तो वे भी अवश्य लिखते।

कन्या लग्नकी कुण्डलीमें आपने शुक्रको बताया वह ठीक है परन्तु सर्वोत्तम तो शनि, बुध है फिर इसकी दशा जब कृत्तिकासे रही तब क्यों नहीं फल हुआ जो शुक्र के समय हुआ। केवल अपने मतको सिद्ध करना नहीं है, पूर्वापरमें सब प्रकारसे तुलना करके उदाहरण रखना चाहिये। हमने यही वहां दिया है कि सबसे उत्तम फलप्रद श० बु० है। कृत्तिकादिसे समय वहां मध्यम रहा है आर्द्रादिसे बराबर मिला है, हमारे पहले लेख पर ध्यान देंगे तो समझमें आयगा।

यह समय भी विद्याकी उपेक्षाका है, इसके कारण हम हैं, क्योंकि शास्त्र पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाता नहीं, जहां संशोधन चाहिए जो प्राप्त ग्रन्थोंसे ही स्पष्ट ज्ञात हो जाता है जैसे—

यदि ३५।१२ में आधार मानें तो ३५।१३ व्यर्थ रहता है, या सबके लिये विंशोत्तरी नहीं मानना सिद्ध होता है। यदि दशाफलदर्पणके माननेसे आर्द्रा ही माना जावे तो ३५।१३ में कृत्तिकासे शेष आर्द्रा मानना युक्ति संगत हो जाता है। आपके चन्द्र और लग्न दोनोंसे भी कारक होते हुए विरुद्ध फल हुआ है और आर्द्रासे फल मिला है, आप इसपर ध्यान दें जो 'श्रीस्वाध्याय' के वर्ष १३ अंक ३ में वृश्चिक लग्नकी कुण्डली है जिसमें चन्द्रमा (लग्न तथा चन्द्र) दोनों प्रकारसे कारक है फिर इसमें हानि क्यों हुई है? आप चाहें पत्रिका वाले माननीय श्रीमान् सेठ मदन लालजी रामरत्नजी तराना जि० उज्जैनसे मिलें और पत्रिका और उनके समय पर जो फलादेश हुआ है अनुभव करें।

प्रायः सभी विद्वानोंने अच्छा बताया है फिर शुभकी जगह अशुभ ही गया था।

आप चाहें तो कई प्रमाण मेरे पास हैं पर नाम नहीं दे सकता स्वयं मिला सकता हूँ।

मेरी नम्र प्रार्थना है कि शास्त्रके सही सिद्धांतोंको सबके सामने रखकर प्रायः सभी इसकी सत्यता देखकर भी अपने अभिमानमें सत्यकी उपेक्षा न करें सत्यको ग्रहण करें।

मन माना ढंग तो रखना नहीं शास्त्रमें उचित अन्वेषण संशोधन आवश्यक है।

आर्द्रादि गणना नयी नहीं, प्रेसकी भूल प्रतीत हो रही है उसे ही हम सुधारना चाहते हैं। आशा है सभी विद्वान् दैवज्ञ अपना-अपना अनुभव प्रकाशित कर अनुगृहीत करेंगे। हमें किसी प्रकारका अभिमान वा आग्रह नहीं है।

वस्तुस्थिति क्या है ?

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

ज्ञातृज्ञानज्ञेयभावो यदाऽऽयत्तः स्फुरेदयम् ।
तामात्मशक्तिं वन्देऽहं विज्ञानां महतीं हृदि ॥ (श्रीविंशतिकाशास्त्रम्)
सिद्धं समिद्धममितं हृदयेऽस्मदीये वाक्कायशक्तिजननीवरिवस्ययाऽऽप्तम् ।
नोद्घाटनीयमपि सम्प्रति योगिनीनामादेशतो विवृणुमोऽस्य महारहस्यम् ॥
तस्मात्सदैव समुपासितदैशिकेन्द्राः श्रीमण्डले विधिवदर्ज्जितसन्निवेशाः ।
शास्त्रं यथावदवगम्य समस्तमेतद् सच्छिष्यवृन्दहृदयेषु निवेशयन्तु ॥

आदि और अन्त कल्पित होते हैं, अथ च कल्पितके ही हो सकते हैं, अकाल्पितके नहीं । अकल्पित क्या है ? कैसा है ? कहाँ है ? कितना है ? किस कारण है ? किस लिये है ? किससे है ? किसका है ? इन सभी प्रश्नोंका अधिष्ठान तथा समाधानका अधिष्ठान एक ही है और वह भी स्वयं सिद्ध अपने आप । जो निरन्तर "अहम्महः" है । 'अस्ति' 'असि' तथा 'तत्' और 'त्वम्' का पर्यवसान 'अस्मि' और 'अहम्' में ही होता है, कारण कि आरम्भ स्थान जो यही है । आरम्भ तथा समाप्ति आत्मानन्दके उल्लासके लिये ही है । आत्मपदके वर्णनके लिये आत्मपद ध्वनिके जितने भी प्रकार कल्पित किये गये वे सब वर्ण कह लाये । आत्माका क्षरण कभी नहीं होता अतः उसे अक्षर कहा गया । अक्षरके वर्णनके लिये नाना प्रकारके उच्चारणोंका आविष्कार किया गया और उनको भी अक्षर नामसे व्यवहृत किया गया । इसको व्यवहारमें स्थायीरूप देनेके लिये लेखका रूप दिया गया तथा इसके समूहको वर्ण-माला और अक्षर-माला मान लिया गया । यह अक्षर समाम्नाय वा वर्ण समाम्नाय ही आत्म व्यवहारका साधन निश्चित किया गया, यह सब आत्मशक्ति है । यदि शक्ति न होती तो आत्माका वचन वा वाचन न हो सकता । अतः आत्मशक्ति ही वाक् है और उससे ओत-प्रोत व्यवहार वाङ्मय कहलाता है ।

'अस्मि' 'असि' और 'अस्ति' अथवा 'हूँ' 'हो' और 'है' ये सभी ज्ञान आधार हीन नहीं रह सकते, अतः इनका एक आधार स्वयं ही सिद्ध हो जाता है । आधारको भी आधारकी आवश्यकता तभी तक रहती है जब तक काल्प-निकता हो । अकल्पित आधार निरपेक्ष और परिपूर्ण होता है । परिपूर्णता निरपेक्षताके विना और निरपेक्षता परिपूर्णताके बिना उपपन्न नहीं होती । इस निरपेक्ष परि-पूर्ण स्वयं सिद्ध महाधारको महाविज्ञान कहा जाता है । यही महाविज्ञान महाप्रकाश और महाविमर्श है । यही महाविज्ञान आत्मस्वरूपको सर्वत्र 'अस्मि' रूपसे अप-रोक्ष, 'असि' रूपसे प्रत्यक्ष और 'अस्ति' रूपसे परोक्ष प्रकाशित करता है, तथा क्रमशः 'अहम्' रूपसे अपरोक्ष 'त्वम्' रूपसे प्रत्यक्ष और 'तत्' रूपसे परोक्ष विमृष्ट करता है । परोक्ष रूपोंमें भी प्रत्यक्षता तो रहती ही है । यदि परोक्ष रूपोंका पारोक्ष्य प्रत्यक्षतामें सर्वथा विलीन कर दिया जाय तो सभीका 'त्वमसि' रूपसे प्रत्यक्ष हो जाता है, क्योंकि परोक्ष कार्य है और प्रत्यक्ष कारण । कार्योंके रूपोंमें कारण ही विकसित होता है, वैसे ही कार्योंका समरसी भावापन्नरूप ही कारण वा संकुचित (संक्षिप्त) रूप है । जड़ताका अधिकाधिक अनुसन्धान परोक्षताका और चेतनताका अधिकाधिक अनुसन्धान प्रत्यक्षताका साक्षात्कार करानेमें समर्थ है । हाँ, पारक्यका अनुसन्धान वर्तमान हो, पारोक्ष्य सर्वथा लुप्त कर दिया हो और चेतनत्वका पूर्ण भान हो रहा हो तब सभी रूप और नाम 'त्वमसि' होते हैं । परोक्षतासे विकसितरूपोंमें जिज्ञासितके लिये 'किम्' । अजिज्ञासित भी हो, अति परोक्ष हो उसके लिये 'यत्' । प्रसिद्ध परोक्षके लिये 'तत्' प्रत्यक्षका आधिक्य हो चैतन्यसे पारोक्ष्य ढक सा दिया हो, ऐसे विप्रकृष्ट परोक्षके लिये

'अदः'। प्रत्यक्षका और भी आधिक्य हो तथा पारोक्ष्य जाड्यसे ढ़क दिया हो और निश्चित सन्निकृष्टके लिये 'इदम्'। तथा अति सन्निकृष्टके लिए 'एतत्' कहा जाता है। हाँ, इन सभीकी सम्भावना 'अस्ति' आदि प्रथम पुरुषके वचनोंसे ही की जाती है, यह जाड्यका सदुपयोग और सत्कार भारतीय महर्षियोंका आदर्श है। पारोक्ष्यका लेश भी जब नहीं रहता परन्तु पारक्य भी वर्तमान हो तब असि' आदि मध्यम पुरुषके वचनोंसे सभी रूपोंकी सम्भावना करनेका आदेश महर्षि देते हैं।

प्रत्यक्ष भाव हों अथवा परोक्ष भाव, इनकी 'भूः' तो 'महोऽस्म्यहम्' ही हैं। 'महः' को 'अस्मि' रूपसे प्रकाश का और 'अहम्' रूपसे विमर्शका अपरोक्ष साक्षात्कार निरन्तर रहता ही है। प्रकाशको ही विमर्श होता है और विमर्शका ही प्रकाश होता है। इसी लिये 'महः' ही महा प्रकाश है और 'महः'ही महा विमर्श है। 'अ' से 'ह' तक वर्णमाला बिन्दुकी विसर्गाऽभिधान शक्ति आत्मविमर्शसे आत्मप्रकाश करती है। ये ही सौषुप्त स्वाप्न और जाग्रत्क जगत्‌के रूप हैं, यह सब विकास कहलाता है। इसके विपरीत सङ्कोचमें विसर्गकी बैन्दवी-शक्ति आत्म-प्रकाश से आत्म-विमर्श करती है। अपरोक्षतया आत्मरूपसे सभी भाव अस्मत्प्रत्ययगोचर होनेके कारण सभी रूपों और नामोंका 'अस्मि' आदि उत्तम पुरुषके वचनोंसे महर्षि गण सत्कार करते हैं।

उपर्युक्त वर्णनसे पाठक भली भाँति जान जायेंगे कि वस्तुस्थिति क्या है। 'अस्म्यहम्' से विकास, निग्रह, विमर्श, शक्ति अथवा नानात्व वा जगत्‌का तथा 'अहमस्मि' से संकोच, अनुग्रह, प्रकाश, शिव, वा एकत्व वा स्थिरत्वका रहस्य अनुभूत किया जा सकता है। इस प्रकार पूर्व प्रश्नों के उत्तर सपष्ट हो गये, जैसे—

१ अकल्पित क्या है ?

उत्तर—आत्मा।

२ कैसा है ?

उत्तर—महोऽस्म्यहम्।

३ कितना है ?

उत्तर—परिपूर्ण है।

४ कहाँ है ?

उत्तर—अपने आपमें है।

५ किस कारण है ?

उत्तर—स्वयं सिद्ध है।

६ किस लिये है ?

उत्तर—आनन्दके लिये है।

७ किससे है ?

उत्तर—प्रकाश-विमर्शसे है।

८ किसका है ?

उत्तर—अपना ही है। अस्तु।

प्रश्न प्रतिप्रश्न उत्तर प्रत्युत्तर अनन्त हो सकते हैं, किन्तु आत्माऽनुग्रहसे तृप्ति प्रकट हो जाती है, फिर कोई शङ्का नहीं होती, तब समाधानकी भी आवश्यकता नहीं रहती। इसका पूर्ण रहस्य जाननेके लिये हमारे 'श्रीआत्म-विलास' 'श्रीमहानुभव-शक्तिस्तव' 'श्रीविंशतिकाशास्त्र' 'श्रीराष्ट्रसञ्जीवन' 'श्रीसंक्रान्ति-पञ्चदशी' आदि ग्रन्थोंका यथावत् अध्ययन करना चाहिये। अन्तमें इतना ही—

धन्याः स्वमेव सकलेषु चराचरेषु
व्याप्तं प्रकाममनुभूय सुधाकलाढ्यम्।
कल्याण-धाम्नि रसयन्ति हि सावधानाः
शैवा वनौ शिवपदध्वनिमध्वनीनाः॥

निवेदन है।

तीनमासका साप्ताहिक व्यापारभविष्य

[लेखक—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य]

(१) ता. ३ से १० जनवरी तक—

ता. ३ को २ बजे चांदी, सोना रुई खरीदो। सावधान—ता. ४ को मंदीका रियेक्शन आवे तो और खरीदो, ता. ७ को ५ बजे लाभ लेकर ता. ८ को खुलते बाजार बेचो। ता. १० के २ बजे तक मंदीका रियेक्शन आवेगा, दोतरफा लाभ मिल जायगा। राशि मिथुन, कन्या, मीनको दिल्ली, हापुड़, आगरा, कानपुरकी मंडियोंसे लाभ होगा। कर्क, तुला, मेषको बम्बई, कलकत्तासे लाभ रहेगा। वृश्चिक, मकर कुम्भको गुड़, मटर, गुवारमें अमृतसर, मोगा, मेरठ, हापुड़, दिल्लीसे लाभ रहेगा। खोटी दशावाले गोचरमें ४।८।१२वें राहु मंगल हो, साढ़ेसाती, द्वादशस्थ ग्रहकी दशावालोंको "श्रीचक्रयंत्र" का पूजन करके दाहिने हाथकी भुजामें बांधकर व्यापार करनेसे लाभ होगा। विशेष—इस साप्ताहमें इकतरफा तेजीमंदीकी लाइनें चलेंगी, गली लगाकर व्यापार करनेवाले लाभ उठा सकेंगे, बाकी देखते रह जायेंगे। ता. ३ को क्लोजिंगकी २॥ दिनकी लड़ी ३१ की लगावें, तीन दिनके ब्यौरेवार अंक प्राप्त करनेके लिये पत्र व्यवहार करें।

(२) ता. ११ से १८ जनवरी तक—

ता. १० को बाजार खुलते चांदी, सोना, रुई, अलसी, अरंडा खरीदो, ता. १४ तक लाभकी आशामें रहें। सावधान ता. १२ के २ बजेसे लाईन विपरीत चले तो सौदा संभालो वरना लिया हुआ माल खड़ा रहने दो, ता. १४ के ५ बजे तक नफा मिल जायगा। अलसी, सरसों, शक्कर, गुड़, गुवार, मटर, कुछ तेजीका रियक्शन लेकर मंदीकी तरफ जायेंगे, बाजार भाव ता. १४ से तेजीकी ओर न चले तो मंदीकी गाड़ीमें सवार हो जावें।

विशेष—लाभके लिये लक्ष्मीदेवीका साप्ताहिक तांत्रिक अनुष्ठान करना चाहिये। मेष, कन्या, वृश्चिकको सुवर्ण, गुड़, शक्करसे विशेष लाभ। वृषभ, तुला, धनुको रुई, शेयर, शक्कर, जूट, बारदानेसे लाभ हो। मिथुन, मकर, मीनको मूंगफली अरंडा, सरकी, सरसों, तिल्लीके व्यापार से लाभ। कर्क, सिंह, मकरको मटर, गुवार, चना, सुगंधिपदार्थोंसे लाभ रहेगा।

(३) ता. १८ से २४ जनवरी तक—

इस साप्ताहमें दो तरफा बाजार चलेगा, घटे भाव लो और चढ़े हुए भावोंमें बेचो। ता. १८ को खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई, गुवार, मटर, सरसों, मूंगफली खरीदो, ता. २१ के ४ बजे नफा मिल जायगा। ता. १९ के बाजार पर ध्यान रखो, बाजार विपरीत रुई चांदीका हो तो सौदा बदलें, वरना २४ तक अच्छे मुनाफाका संकेत है। ता. २० को कुछ मंदीका संकेत है, यह रियक्शन बराबर बाजारकी हालतको वदल देगा। यहाँ घटेभाव खरीदो, ता. २२ को २॥ तक नफा लेकर साफ हो जावें। गुड़, शक्कर, मूंगफली, तेल, तिल्ली, बारदाना, जूटके भावोंमें एक तेजीका रियेक्शन ता. १८ से २० तक आवेगा, बादमें मंदीकी सूचना है। इस सप्ताहमें दो तरफा बाजार चलनेसे ताजी खरीदका काम कम करो, ७ दिनकी तेजीमंदी अच्छा मुनाफा देगी। ४८ घंटेकी लाइन पर विशेष ध्यान दो। अमरीकन कोटन फीगरकी लड़ी ५४ की ता. १८ से २२ तक बराबर साथ देगी। आर्डनरी, आयरन शेयरोंमें अच्छी घट बढ़ होगी कमाईका चांस है।

(४) ता. २५ से ३१ जनवरी तक—

इस सप्ताहमें इकतरफा लाइनका चांस है। ता. २५ को ३ बजे चांदी, सोना, रुई, अरंडा, मूंगफली, बेचो २॥ दिनकी मंदी हवा बांध देगी। ६० घंटेकी तेजी मंदी की गली लगाकर व्यापार करनेवाले ही लाभ उठा सकेंगे, बाकी देखते रह जायंगे। गुवार, मटर, गुड़, शक्करके भावोंमें ता. २७ से मंदी रहेगी, चढ़े हुवे भावोंमें बेचो, ता. ३१ तक लाभ हो जायगा। टाटा आर्डनेरी, आयरनशेयरके भावोंमें इकतरफा तेजी होगी।

ता. २५ की खरीद ता. २८ तक लाभ दे जायगी। गुवार, मटर, गुड़, शक्कर, बारदानाके भावोंमें मंदीकी सूचना है। चढ़े हुए भावोंमें बेचान करें, अलसी, अरंडा, मूंगफली, सरकी, विनोलाके भावोंमें इकतरफा मंदी चलेगी। स्टाक रोककर बैठनेका समय नहीं है। राशि मेष, कर्क, धनुको पूर्वदिशासे लाभ। वृषभ, सिंह, मकरको उत्तरदिशासे लाभ। मिथुन, कन्या, कुंभको पश्चिमदिशासे लाभ। तुला, वृश्चिक, मीनको उत्तरदिशासे लाभ रहेगा।

(५) ता. १ फरवरीसे ८ फरवरी तक—

इस सप्ताहमें रुई, चांदी, सोनाके अतिरिक्त प्रायः सब वस्तुओंमें मंदी रहेंगी। व्यापार मंदीका करनेवाले ही लाभ उठायेंगे बाकी देखते रह जायेंगे। खुलते बाजार ता. १ को चांदी, सोना, रुई खरीदो, ता. २ के २॥ बजने पर लेकर बेचो, ता. ३ को २॥ बजे फिर खरीदो, ता. ४ तक डबल मुनाफा मिल जायगा। ता. ४ के ३ बजेसे अनिश्चित मंदीका वातावरण बनेगा, सावधान! यहां इकतरफा लाईनसे लाभ उठानेका अवसर है। साप्ताहिक तेजी-मंदी लगानेवाले अवश्य ही लाभ उठावेंगे, २॥ दिनकी लाईन कॉटन फीगर ६१ मंदेकी बनेगी। गुवार, मटर, गुड़, शक्कर, बारदानेकी इकतरफा गली तेजीमंदीकी लगावें के फेरसे भी लाभकी आशामें रहो। यह सप्ताह व्यापारियोंके लिये सुवर्ण अवसर दिखानेवाला है। गारंटीड चांसेज प्राप्त करनेके लिये पत्र व्यवहार करें—

(६) ता. ६ से १६ फरवरी तक—

इस साप्ताहमें बाजारगति दोतरफा बध घटमें चलेगी। ता. ६ को २॥ बजे चांदी, सोना, रुई खरीदो, ता. १२ को २ बजे डबल बेचो, ता. १६ तक दोतरफा लाभ मिलनेके योग हैं। गुड़, बारदाना, शक्कर, गुवार, मटर, चना, अलसी, सरसों, मूंगफलीके भावोंमें ता. ११ से कुछ सुधार होगा, यह तेजीका रियक्शन लाईन बदलनेका अच्छा मौका देगा। सावधान, चतुर व्यापारी बाजारका टोन देखकर हमारी लाईनको समझकर व्यापार करनेसे इस साप्ताह मोटी कमाई प्राप्त करनेका चांस है। दोनों तरफके चांसोंसे लाभ उठाया जा सकता है। कागज और कपड़ेकी तेजी मंदी हवा बांध देगी। स्टाक रखनेवाले बेचैन हो जायँगे।

(७) ता. १७ से २४ फरवरी तक—

इस साप्ताहमें गिरे हुए भावों का सुधार होगा, तेजी लाईनवालोंको सांत्वना मिल जायगी। ता १७ को २॥ बजे चांदी, सोना, रुई खरीदो, ता. १६ को ३ बजे तक लाभ लेकर डबल बेचो। ता. २१ को २ बजे फिर खरीदो, ता. २४ के सायंकाल तक तीन गुना लाभ एक व्यापारसे होनेका समय है। इस लाईनके अचूक चांस टाईम टकेवारके साथ प्राप्त करनेका समय ता. १५ फरवरी है, इसके पहिले पत्र व्यवहार करें। ता. १७ से २४ तक ७ दिन भाग्यांक ८४ की लड़ी बराबर अंकसे अंक बनावेंगी। ढाई दिनमें सोती हुई तकदीर जगा देगी, इकाईके अंक ४।६।८ ५र सदा ध्यान देवें।

(८) ता. २५ फरवरीसे ४ मार्च तक—

इस साप्ताह विशेष घट बढ़ की ता. २५ है। इस दिन २४ घंटेकी तेजीमंदी लगाकर अपना भाग्य अजमायें, प्रायः सर्वराशि वालोंको लाभका संकेत है। अंक २।८।६ लगावें। ता. २५ को १ बजे चांदी, सोना, आयरन, आर्ड-नरी खरीदो, ता. २८ तक लाभ लेकर बेचो, ता. ३ तक लाभ हो जायगा। गुड़, गुवार, मटर, सरसों, तिल्ली, चना, अलसी, कालीमिर्च, तेल मूंगफलीके भावोंमें अचानक तेजी आकर ता. १ मार्च से मंदीकी ओर जायेंगे, ता. १ को २॥ बजे बेचें, ता. ४ तक लाभ उठावें। ता. २५।२६।२८।२६ में तेजीका रियक्शन मंदीके खिलाड़ियोंका भाग्य जगानेके लिये आवेगा। चतुर व्यापारी इस चालको पहिले जानकर लाभ उठानेकी चेष्टा करें।

(९) ता. ५ से १२ मार्च तक—

इस साप्ताहमें प्रायः सभी वस्तुओंमें मन्दीकी सूचना है। चांदी, सोना, रुई ता. ५ को २॥ बजे बेचो, ता. ७ को २॥ बजे डबल खरीदो, ता. ११ तक डबल मुनाफा मिल जायगा। आयरन, आर्डनरी, शेयरोंमें अच्छी मंदी रहेगी, बराबर ऊंचे भावोंमें बेचना ही चांस है। तेजीके रियक्शन ५।७।८ में चढ़े हुए भावोंमें बेचो, ता. १२ तक नफा लो। गुड़, शक्कर, मटर, गुवार, मूंगफलीके भावोंमें

कुछ सुधार होगा, यह तेज का रियक्शन मंदी वालोंके लिये सुवर्ण चांस होगा। साप्ताहिक तेजी मंदी लगानेवाले ही लाभ उठा सकेंगे, बाकी देखते रह जायँगे।

(१०) ता. १३ से २० मार्च तक—

इस सप्ताहमें तेजीका वातावरण प्रायः सर्वत्र ही दिखाई देगा। व्यापारियोंको प्रायः मंदीकी लाईनें समाप्त करके तेजीकी ओर बढ़ना चाहिये। चांदी, सोना, रुई, आर्डनरी-शेयर-अरंडा अलसी ता. १४ को १॥ बजे खरीदो, ता. १८ के ४ बजे तक लाभ उठाकर डबल बेचो, ता० २० तक दोनों तरफके चांसोंसे लाभ हो जावेगा। मटर, गुवार, अरहर, गुड़, सरसों, अलसी, मूंगफलीके भावोंमें आश्चर्य-जनक घट बढ़ चलेगी। ता. १४ से ता. १७ तक तेजी, ता. १८से २० तक मंदीका धमाका आवेगा। टाटा आर्डनरी, आयरनके भावोंमें तेजी रहेगी। राशि मेष, कर्क, वृश्चिक, कुम्भ, मीन वालोंको इस सप्ताहमें अच्छा लाभ होगा। वायदेके व्यापारमें मुहूर्तसे व्यापार करें।

(११) ता. २१ से २८ मार्च तक—

इस सप्ताहमें इकतरफा तेजी चलेगी, सावधान! मंदीमें खरीद किया हुआ माल संग्रह अवश्य ही नफा दे जायगा। ता. २१ को २ बजे चांदी, सोना, रुई खरीदो, ता. २६ तक अच्छा नफा मिल जायगा। सावधान ता. २२ के सायंकालकी बाजार टोन देखें, यदि विपरीत चले तो बराबर करलो वरना डरनेकी कोई बात नहीं, ता. २६ तक अच्छा नफा प्राप्त होगा। मटर, गुवार, अरहर, गुड़, शक्कर, मूंगफली तेल आदिके भाव ता. २२ से तेजीमें जायँगे खरीदसे लाभ होगा।

(१२) ता. २६ मार्चसे ४ अप्रेल तक—

इस सप्ताहमें बाजार दोनों तरफ चलेंगे, नीचेमें खरीदो ऊँचेमें बेचो। हर वस्तुके व्यापारी लाभ उठा सकेंगे। विशेष विचार आगामी अंकमें देंगे।

अनुभूत योग

[लेखकः—श्रीबद्रीप्रसादजी गुप्त ब्यानिया गणकचूड़ामणि]

(१) धनभावेश सूर्य या मंगल हो और वह यदि गुलिक या शनिसे दृष्ट हो तो गर्मी या पित्तदोषसे नेत्रोंमें रोग होता है।

(२) राहु यदि शुक्र या आत्मकारकग्रह वा लग्नारूढ़-पदसे ६।४ भावमें होता है तो नेत्रोंमें रोग करता है।

(३) लग्नेश यदि मंगल या बुधके क्षेत्रमें हो अथवा मंगल या बुधसे दृष्ट होकर किसी भी राशिमें हो तो नेत्रोंमें रोग होता है।

(४) अमावस्याके जन्ममें चन्द्रमा चतुर्थभावमें हो या तुलाराशिका हो और वह मंगलसे दृष्ट तथा गुरुसे अदृष्ट हो और लग्न या चन्द्रमा पापग्रहसे युक्त हों या पापग्रहके इत्थशालमें हों तो मनुष्योंको आंखोंका रोग दीर्घकाल तक रहता है।

(५) रात्रि तथा कृष्णपक्षके जन्ममें सूर्य अथवा नवम-भाव यदि शनिसे युक्त हो और शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो मनुष्य बायें नेत्रसे काणा होता है।

(६) दिनके जन्ममें सूर्य यदि दशवभावसे चतुर्थभाव तक स्थित हो अथवा चन्द्रमा या मंगल छठेभावके स्वामी होकर तनुभावमें बैठे हों तो मनुष्य दाहिने नेत्रसे काणा होता है।

(७) शुक्र धनवानमें यदि क्रूर ग्रहसे युत होता है तो मनुष्य काणा या नेत्रविकारी या स्खलितवाणी होता है।

(८) चन्द्रमा २।१२ भावमें नेत्रविकार करने वाला होता है।

(९) धनभाव पापग्रहसे युक्त हो और धनभावका स्वामी शुभग्रहसे दृष्ट वा युत हो तो मनुष्य नेत्रोंको दबाने वाला होता है।

(१०) गुरु यदि १।२ भावमें होता है तो मनुष्यको मिष्ठान्न प्रिय बनाता है और वह मनुष्य हितकर, मधुर तथा सत्य वक्ता होता है।

(पृष्ठ आठका शेष)

हैं और तटस्थ नीतिका अवलम्बन कर रहे हैं। इसलिये मार्शल टीटोका भारत आना महत्वपूर्ण है। इसके कारण रूस-अमरीका इन दो प्रबल राष्ट्रोंके दो दलोंके मध्य तटस्थ रहनेवाले देशोंका बल और प्रभाव बढ़ेगा और मनीलासे लेकर बेलग्रेड तक युद्ध-निरोधक और शान्ति-स्थापक तटस्थ राष्ट्रोंका एक पक्ष अनायास तैयार हो जायगा और यह दोनों प्रबल पक्षोंको परस्पर टक्कर लेनेसे बराबर रोकता रहेगा। टीटो और नेहरूकी नीतियोंका यह सम्मिलन शान्तिके तत्त्वोंका पोषण करेगा, और उसका बल बढ़ायगा। भारतने इसी विश्वासके साथ मार्शल टीटो का हार्दिक स्वागत किया है।

महान् निर्वाचन संग्राम—

आन्ध्रमें फरवरी मासके मध्य विधानसभाका निर्वाचन होगा। १९६ सदस्योंका चुनाव होना है। कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ही वस्तुतः अखाड़ेमें है। कम्युनिस्ट पार्टीने १४० उम्मीदवारोंके नाम भी घोषित कर दिये हैं। वह इस विश्वासके साथ निर्वाचन लड़ रही है कि भारत भरमें पहली कम्युनिस्ट सरकार आन्ध्रमें स्थापित होगी। उसकी इस धारणाको मिथ्या सिद्ध करनेके लिये कांग्रेस छोटे-छोटे दलोंके साथ समझौता करके अपनी स्थिति दृढ़ करनेका यत्न कर रही है। कांग्रेसने बम्बई प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री सदाशिव पाटिलको अपना सेनानायक नियुक्त किया है। आंध्रका निर्वाचन इस बातका निर्णय करेगा कि भारतमें कम्युनिज्मके फैलनेकी आशा है या नहीं और इस देशमें उसके लिये स्थान है या नहीं। इस दृष्टिसे आन्ध्रके निर्वाचन संग्रामके फलाफल पर सबकी दृष्टि लगी हुई है। देखें, इसका क्या परिणाम निकलता है।

चांदी सोना रुईकी—
तीनमासकी साप्ताहिक अनुभूत रिपोर्ट

[लेखक ज्योतिषभूषण दैवज्ञरत्न श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा]

(१) प्रथम सप्ताह—

पौष शुक्ला ६ सोमवार ता. ३ जनवरीसे ६ जनवरी तक रुई चांदी सोना और हरेक तरहका मादक पदार्थ चाहे एकवार घट जाये भले ही अन्तमें घटबढ़से अच्छी तेजीकी संभावना है, घटे वहाँ खरीदो। ता. ३ तेजी, ४ को अच्छी घटबढ़। ता. ५ को तेजी। ता. ६ को सायंकाल या रात्रिमें तेजी। ता. ८ को २-३ बजेसे तेजी।

(२) दूसरा सप्ताह—

ता. १० जनवरीसे १७ जनवरी तक साधारण भाव रहे या कुछ तेजी रहेगी। जो घट जायेंगे वे बढ़ेंगे। मूल भाव वे ही रहेंगे। ता. १२-१५-१७ को कुछ तेजी रहेगी। ता. १३-१४ को दोतरफा लगावें या तेजी लगावें। यहां पर पाट हैसियन तैलादि पदार्थ तेज होंगे।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता. १८ से २३ जनवरी तक साधारणमें कुछ मंदी रहेगी बढ़े भाव बेचो। ता. २०-२१ मंदी। ता. १६ से २३ के बीचमें फीचरोंके अंक निश्चय डबल आवेंगे। हो सकता है १ या २ का अंक आवे परंतु कोई भी अंक आवे डबल जरूर आवेगा।

(४) चौथा सप्ताह—

ता. २४ से ३१ जनवरी तक तेजी होके मंदी होगी। ता. २४-२५ दोनों तेजी नहीं तो एक अचूक तेज। ता. २६ के सायंकाल या २७ को बेचो, ३१ तक मंदी होगी। रुई अवश्य मंदी। चांदी मंदी होके तेज होगी। ता. १ फरवरीसे शेयर तेज, हैसीयन वीट्वीज़ मंदी। ता. ४ तक अवश्य खरीदो आगे तेजी होगी। ता. ६ फरवरीका दिन संसारमें उत्पातोंका जन्मदाता है, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति भयंकर होगी। मंत्रीमंडलमें बहुत उलटफेर होगा।

(५) पांचवाँ सप्ताह—

ता. १ फरवरीसे ६ तक घटबढ़ अच्छी होगी। घटे भाव खरीदो। ता. १ को दोतरफा लगावें यहाँसे शेयर अचूक तेज। ता. २ को मंदी होके तेजी। ता. ३ को मंदी। ता. ४ को घटबढ़। ता. ५-६-७ अच्छी घटबढ़ होके अच्छी तेजी। ता. ६ बंद बाजार तेजी रुई मंदी होके तेज।

(६) छठा सप्ताह—

ता. ७ से १३ फरवरी तक घटबढ़ होके सामान्यभाव बन जायेंगे। दोतरफा लगाके जिधर निकले उधर ही बदल दो। ता. १०-११-१२ को नजराना अवश्य लगावें। ता. ७ को मंदी, सायंकाल तेजी। ता. ८ को कई एकवार घटबढ़ होगी १ घंटासे व्यापार बदलते रहो।

(७· सातवां सप्ताह—

ता. १४ फरवरीसे २२ फरवरी तक बाजार साधारण रहेगा। २-३ दिन तक घटबढ़ अच्छी रहेगी। ता. १४ को एकतरफा बाजार रहेगा। ता. १५ या १६ को अच्छी तेजी। ता. १६ को न्यूयार्क कॉटनमें अच्छी और अचूक तेजी। ता. १७-१८ मंदी। ता. १६ तेजी होके मंदी। दिनके १ बजे बाजारमें उथल-पुथल अच्छी होगी। ता. २१ तेजी २२ घटबढ़से मंदी।

(८) आठवाँ सप्ताह—

ता. २३ फरवरीसे २८ फरवरी तक अच्छा भाग्य होतो अच्छा चान्स है, यहाँ कार्यालयसे स्पेशल रिपोर्ट मंगाना ठीक रहेगा, जो १ हफ्तेकी ५) में मिलेगी। फेल जानेपर दाम वापिस किया जायेगा, तैलादि पदार्थ तेज। ता. २८ यह एक तारीख ही कई रंग दिखायेगी यहांसे आगे तेजीका ध्यान है।

(९) नौवाँ सप्ताह—

ता. १ मार्चसे ८ मार्च तक यहाँ शेयरोंकी तेजी कोई

नहीं रोक सकता। रुई चांदीमें घटबढ़से तेजी, सुवर्ण कुछ मंदा। ता. १-२ अच्छी तेजी, ता. ३ को सायंकाल मंदी। ता. ४ को घटबढ़से मंदी। ता. ५ और ६-७ को अच्छी तेजी। ता. ८ को घटबढ़से मंदी।

(१०) दशवाँ सप्ताह—

ता. ६ मार्चसे १७ मार्च तक लोह लकड़ी तिल तैल शेयर तेज और वस्तु धीरे-धीरे मंदीकी तरफ रहेगी। ता. १४ के सायंकालसे अवश्य मंदी।

(११) ग्यारहवाँ सप्ताह—

ता. १८ मार्चसे २४ मार्च तक साधारण घटबढ़ रहेगी। घटे उस दिन खरीदो बढ़े उस दिन बेचो। ता. १८-१९ एक तेजी एक मंदी, ता. २१-२२ में एक तेजी एक मंदी, ता. २१ तेजी, २२ मंदी ऐसा ध्यान है।

(१२) बारहवाँ सप्ताह—

ता. २५ मार्चसे ३१ मार्च तक घटेभाव या बढ़ेभाव खरीदो तेजीका ध्यान है, ता. २५-२६-२८-३० अवश्य तेजी आवेगी आगे ईश्वर जाने।

चांदी सोना रुई गुवार मटर शेयर तिलहन आदिकी—

त्रैमासिक व्यापाररुख

[ले० श्री गणेश, विद्यासागर, विश्वनाथ शर्मा दैवज्ञ रमलाचार्य]

जनवरी १९५५

ता० ३ जनवरीको बाजारमें मंदीके झटकेमें माल खरीदो और ता० ५ जनवरी तक तेजीका नफा लेते रहो। ता० ६ जनवरीको फिर मंदीका झटका लगेगा। ७, ८ को दोनों तरफ [illegible] चलता रहेगा। ता० १० को प्रथम कुछ मंदा आकर २ बजे से अचानक तेजी आना चालू हो जायेगी। यह तेजी ता० १२ तक बनी रहेगी। ता० १३ को मंदी चालू होकर ता० १४ के बन्द बाजार तक मंदी खेलना। ता० १५ को अच्छी घटा बढ़ी चलेगी। ता० १७, १८ को आये उछाले बेचो और मंदीका नफा लेलो। ता० १९, २० इन दोनों दिनोंमें दोनों तरफ बाजार झुलता रहेगा, नजराने खाना ठीक जँचता है। ता० २१, २२ को एकतर्फा तेजीकी तरफ बाजार चलता रहेगा। ता० २४ को आये उछाले बेचो और ता० २५ को बन्द बाजार तक मंदीका नफा लेलो। ता० २६ को अच्छी तेजी एक ही दिनमें आ जायेगी। ता० २७, २८ को नजराने द्वारा व्यापार करो। ता० २९ तेजी रहेगी। ता० ३१ को दुतर्फा चलेगा।

फरवरी १९५५

ता० १, २, को बाजार दुतर्फा चलता समान भी रह सकता है। ता० ३ को अच्छी मंदी आकर रहेगी। ता० ४ को बुध वक्री होगा नजराने लगाकर व्यापार करो, आज बाजार जिधर जायेगा उसी लाईन पर ता० ९ तक रहेगा। ता० १० से १२ तक मंदी वाली पार्टीका जोर रहेगा। ता० १४ से ता० २२ तक बाजारोंमें भारी तहलका मच जायेगा, यहाँ समस्त मार्केट तेजीका रुख पकड़ लेंगे। तेजी खेलने वाली पार्टी जीत जाएगी, यहाँ चाँदी ५) ७) सुवर्ण २) २॥) गुड़ १॥) २) गवार, मटर, चना ॥।) १) अलसी, सरसों, मूंगफली २।) ३) शेयर ॥।) १) की तेजी पकड़ लेंगे सावधानीसे व्यापार करने वालोंको निश्चय लाभ होकर रहेगा। ता० २३ से २५ तक बाजार दोनों तरफ चलता हुआ भी तेजीका ही समर्थन करेगा। ता० २६ से २८ तक दुतर्फा चलता समानभाव रह जायेगा।

मार्च १९५५

ता० १ को मंदी आयेगी। ता० २ को दुतर्फा बाजार चलेगा। ता० ३ को तेजी चालू होकर ता० ८ तक तेजी

त्रैमासिक पर्वव्रतादि

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

जनवरी १९५५ ई०

ता. ४ मंगलवार—पुत्रदा एकादशी व्रत।

त. ६ गुरुवार—प्रदोष व्रत।

ता. ८ शनिवार—सत्यव्रत पूर्णिमा माघस्नानारम्भ।

ता. ११ मंगलवार—श्रीगणेश ४ संकष्टचौथ व्रत चन्द्रोदय रात्रि स्टे. टा. ८।४७

ता. १३ गुरुवार—लोहड़ी महोत्सव पंजाबदेशे।

ता. १४ शुक्रवार—मकरसंक्रांतिपुण्यकाल १०।३७ उ.

ता. १९ बुधवार—षट्तिला एकादशी व्रत।

ता. २१ शुक्रवार—प्रदोष व्रत।

ता. २३ रविवार—मौनी अमावास।

ता. २५ मंगलवार—चन्द्रदर्शन।

ता. २६ बुधवार—भारतीय गणतन्त्रस्थापना दिवस

ता. २७ गुरुवार—तिलचौथ।

ता. २८ शुक्रवार—वसन्तपंचमी श्री ५

ता. ३० रविवार—अचला ७ रथसप्तमी।

ता. ३१ सोमवार—भीष्माष्टमी।

फरवरी १९५४

ता. ३गुरुवार—जया एकादशी व्रत।

ता. ४ शुक्रवार—प्रदोष व्रत भीष्मद्वादशी।

ता. ६ रविवार—सत्यव्रत माघीपूर्णिमा रविपुष्ययोग।

ता. १० गुरुवार—श्रीगणेशचौथव्रतचन्द्रोदय १०-५

ता. १२ शनिवार—कुम्भसंक्रांति मु. १५ पुण्यकाल दूसरे दिन।

ता. १४ सोमवार—श्रीसीता जयन्ती।

ता. १८ शुक्रवार—विजया एकादशी व्रत।

ता. २० रविवार—श्रीमहाशिवरात्रि व्रत प्रदोषव्रत।

ता. २२ मंगलवार—अमावास्या।

ता. २४ गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु. ४५ फुलहरिया २

मार्च १९५५

ता. १ मंगलवार—होलाष्टकारम्भ।

ता. ४ शुक्रवार—आमला एकादशी व्रत।

ता. ६ रविवार—प्रदोष व्रत।

ता. ८ मंगलवार—होलिकादहन सत्यव्रत फाल्गुनी १५

ता. ९ बुधवार—छारेण्डी धूलिवन्दन।

ता. १२ शनिवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय१०-१९

ता. १४ सोमवार—मीनसंक्रांति मु. ३० पुण्यकाय मध्याह्नोन्तर।

ता. १५ मंगलवार—शीतलासप्तमी।

ता. २० रविवार—पापमोचिनी एकादशी व्रत।

ता. २१ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत।

ता. २२ मंगलवार—वारुणीपर्व।

ता. २३ बुधवार—मेलापृथूदक (कुरुक्षेत्र) चैत्री १४

ता. २४ गुरुवार—अमावास्या।

ता. २५ शुक्रवार—नवरात्रारम्भ घटस्थापन निम्ब-पत्रभक्षण चन्द्रदर्शन श्रीगौतम जयन्ती।

ता. २६ शनिवार—गणगौरीपूजन मत्स्यजयन्ती।

ता. ३१ गुरुवार—दुर्गाष्टमी श्रीताराजयन्ती।

ता. १ अप्रैल शुक्रवार—श्रीरामनवमी व्रत।

चलेगी, ता० ९ से ११ तक दुतर्फा चलते तेज ही रहेगा। ता० १२ से १७ तक मंदी खेलो। ता० २१ को खुलते बाजार माल खरीदो और ता० २४ को बंद बाजार तेजीका नफा लेलो। ता० २१ से २४ में अच्छी तेजी आनी चाहिये। ता० २५, २६ में दोनों तरफ चलते बाजार तेज हो जायेंगे। ता० २८, २९ मंदा रहेगा। ता० ३० को अच्छी तेजी, ता०३१ दोनों तरफ चलेगा घटे खरीद नफा लेलो।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

भयानक भविष्यवाणियोंसे भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं

भारतीय गणराज्यके छठे वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

प्रत्येक वस्तुका संयोग और वियोग महाशक्ति कालीकी इच्छापर ही है। कालके 'कालपन' का ही दूसरा नाम काली है। सबसे आद्य तत्त्व सबसे बड़ा होनेके कारण 'महाकाल' कहा जाता है और उसकी सर्वतंत्रस्वतन्त्रताको 'महाकाली' कहते हैं। महाकाली महाकालके साथ जो क्रीड़ा करती है उसमें अनन्त ब्रह्माण्डोंके सृष्टि-स्थिति-संहार होते रहते हैं। निग्रह और अनुग्रह यही दो इनके मूल हैं और इन दोनों का 'वागर्थाविव' सम्बन्ध है। वस्तुतः ये दो नहीं एक ही है, इस बातको पूर्णरूपेण अनुभूत कर लेनेपर कभी भी कल्याण नहीं होगा और यही वस्तुतः महाकालीकी समा-वना है। इसी कारण दैवज्ञ जो कुछ विचार प्रकट करता वे आभासमात्र ही होते हैं। उनका ठीक-ठीक होना भी महाकालीकी इच्छा पर है। अपनी माता कितनी भी भयानक हो, वह अपने पुत्रके लिए भयानक नहीं। और [illegible] तो उसे छोड़कर पुत्र कहाँ जायें ? इसीलिए उससे डरकर ही खाली काम चल नहीं सकता। उसकी आराध-नासे दैवज्ञ अपनी दृष्टिको बहुत दूरतक विस्तृत कर सकता है। जहाँ दैवज्ञकी विस्तृत दृष्टिमें अशुभ घटनाएँ घटनेकी सम्भावना हो सकती है, वहीं शुभ घटनाएँ घटनेकी भी सम्भावना रहती ही है। अशुभ घटनाओंको डरावने शब्दोंमें प्रकाशित कर साधारण जनताको भयभीत करना आर्ष-दृष्टि में मान्य नहीं हो सकता। दैवज्ञको चाहिए कि शुभाशुभ घटनाओंका संकेत वह अवश्य करे, पर लोगोंको सुरक्षित रखते हुए और संयत भाषामें। ऐसा ही ऋषियोंका आदेश है। और फिर भविष्यत्की घटनाओंके सम्बन्धमें शतप्रतिशत यथार्थ वर्णन कर सकना बड़े-बड़े योगसिद्ध महापुरुषोंके लिए भी जो कठिन है वह एक साधारण दैवज्ञ कैसे ठीक प्रकाशित कर सकता है। अपने अपने विचार लोगोंके सम्मुख प्रकट करना अनुचित नहीं, पर वे होने चाहिएँ आर्षप्रणालीसे ही।

भारतमें कुछ ऐसे भविष्यवक्ता भी अब प्रकट हो गये हैं, जो मनमाने ढंगपर ज्योतिर्विज्ञानकी आड़में बेशिर-पैरकी भयानक भविष्यवाणियाँ करके जनताको भयभीतकर ज्योतिर्विज्ञानकी हत्या कर रहे हैं। ऐसे लोगोंमें आंध्र राज्यके एक प्रोफेसर प्रमुख हैं, जिन्होंने अभी जुलाई १९५४ में काश्मीरके भविष्य पर अंग्रेजीमें 'Fate of Kashmir' नामक पुस्तक प्रकाशित कर बड़ा भयानक चित्र उपस्थित किया है। (यह पुस्तक लेखकने समालोच-नार्थ हमारे पास भी भेजी है) इस पुस्तकमें १९५५ के नवम्बरमें वृश्चिक राशिमें ६ ग्रह इकट्ठे करके महाभारत कालीन इन ग्रहोंकी तुलनाके साथ नवम्बरमें तृतीय विश्व-युद्धकी घोषणा करते हुए आपने यह फतवा दिया है कि "ज्योतिश्शास्त्रके अनुसार यह सम्भव नहीं कि जम्मू और काश्मीर भारतमें मिल गये या भविष्यमें मिल जायेंगे। १९५४ के अक्टूबरसे १९५६ के जून तक पाकिस्तानकी सशस्त्र स्थल और वायुसेना भारत पर आक्रमण करेगी। दो पागल सांडोंकी लड़ाईमें जिस प्रकार छोटा बछड़ा कुचला जाता है उसी प्रकार भारत-पाककी लड़ाईमें काश्मीर श्मशान भूमि बन जायेगा। युद्धके कारण राजधानी दिल्ली से हटानी पड़ेगी।" इत्यादि अनेकों अनर्गल बातोंसे पुस्तक भरी पड़ी है। श्री नेहरूजी, कांग्रेस, स्वर्गीय श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी और युद्धके सम्बन्धमें भी इन महा-शयने ऐसी ही निराधार भयानक भविष्यवाणियोंकी तीन-चार पुस्तकें तीन वर्ष पहले भी प्रकाशित कीं थीं, वे सब मिथ्या सिद्ध हो चुकी हैं। परन्तु उनके कुछ अंशका अन्धानुकरण पंजाबके एक दो दैवज्ञोंने सस्ती प्रसिद्धि प्राप्त

त्रैमासिक पर्वव्रतादि

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

जनवरी १९५५ ई०

ता. ४ मंगलवार—पुत्रदा एकादशी व्रत ।

त. ६ गुरुवार—प्रदोष व्रत ।

ता. ८ शनिवार—सत्यव्रत पूर्णिमा माघस्नानारम्भ ।

ता. ११ मंगलवार—श्रीगणेश ४ संकष्टचौथ व्रत चन्द्रोदय रात्रि स्टे. टा. ८।४७

ता. १३ गुरुवार—लोहड़ी महोत्सव पंजाबदेशे ।

ता. १४ शुक्रवार—मकरसंक्रांतिपुण्यकाल १०।३७ उ.

ता. १९ बुधवार—षट्तिला एकादशी व्रत ।

ता. २१ शुक्रवार—प्रदोष व्रत ।

ता. २३ रविवार—मौनी अमावास ।

ता. २५ मंगलवार—चन्द्रदर्शन ।

ता. २६ बुधवार—भारतीय गणतन्त्रस्थापना दिवस

ता. २७ गुरुवार—तिलचौथ ।

ता. २८ शुक्रवार—वसन्तपंचमी श्री ५

ता. ३० रविवार—अचला ७ रथसप्तमी ।

ता. ३१ सोमवार—भीष्माष्टमी ।

फरवरी १९५४

ता. ३गुरुवार—जया एकादशी व्रत ।

ता. ४ शुक्रवार—प्रदोष व्रत भीष्मद्वादशी ।

ता. ६ रविवार—सत्यव्रत माघीपूर्णिमा रविपुष्ययोग ।

ता. १० गुरुवार—श्रीगणेशचौथव्रतचन्द्रोदय १०-५

ता. १२ शनिवार—कुम्भसंक्रांति मु. १५ पुण्यकाल दूसरे दिन ।

ता. १४ सोमवार—श्रीसीता जयन्ती ।

ता. १८ शुक्रवार—विजया एकादशी व्रत ।

ता. २० रविवार—श्रीमहाशिवरात्रि व्रत प्रदोषव्रत ।

ता. २२ मंगलवार—अमावास्या ।

ता. २४ गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु. ४५ फुलहरिया २

मार्च १९५५

ता. १ मंगलवार—होलाष्टकारम्भ ।

ता. ४ शुक्रवार—आमला एकादशी व्रत ।

ता. ६ रविवार—प्रदोष व्रत ।

ता. ८ मंगलवार—होलिकादहन सत्यव्रत फाल्गुनी १५

ता. ९ बुधवार—छारेण्डी धूलिवन्दन ।

ता. १२ शनिवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय १०-१५

ता. १४ सोमवार—मीनसंक्रांति मु. ३० पुण्यकाय मध्याह्नोत्तर ।

ता. १५ मंगलवार—शीतलासप्तमी ।

ता. २० रविवार—पापमोचिनी एकादशी व्रत ।

ता. २१ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत ।

ता. २२ मंगलवार—वारुणीपर्व ।

ता. २३ बुधवार—मेलापृथूदक (कुरुक्षेत्र) चैत्री १४

ता. २४ गुरुवार—अमावास्या ।

ता. २५ शुक्रवार—नवरात्रारम्भ घटस्थापन निम्बपत्रभक्षण चन्द्रदर्शन श्रीगौतम जयन्ती ।

ता. २६ शनिवार—गणगौरीपूजन मत्स्यजयन्ती ।

ता. ३१ गुरुवार—दुर्गाष्टमी श्रीताराजयन्ती ।

ता. १ अप्रैल शुक्रवार—श्रीरामनवमी व्रत ।

चलेगी, ता० ९ से ११ तक दुतर्फा चलते तेज ही रहेगा । ता० १२ से १७ तक मंदी खेलो । ता० २१ को खुलते बाजार माल खरीदो और ता० २४ को बंद बाजार तेजीका नफा लेलो । ता० २१ से २४ में अच्छी तेजी आनी चाहिये । ता० २५, २६ में दोनों तरफ चलते बाजार तेज हो जायेंगे । ता० २८, २९ मंदा रहेगा । ता० ३० को अच्छी तेजी, ता०३१ दोनों तरफ चलेगा घटे खरीद नफा लेलो ।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

भयानक भविष्यवाणियोंसे भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं

भारतीय गणराज्यके छठे वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

प्रत्येक वस्तुका संयोग और वियोग महाशक्ति कालीकी इच्छापर ही है। कालके 'कालपन' का ही दूसरा नाम काली है। सबसे आद्य तत्त्व सबसे बड़ा होनेके कारण 'महाकाल' कहा जाता है और उसकी सर्वतंत्रस्वतन्त्रताको 'महाकाली' कहते हैं। महाकाली महाकालके साथ जो क्रीड़ा करती है उसमें अनन्त ब्रह्माण्डोंके सृष्टि-स्थिति-संहार होते रहते हैं। निग्रह और अनुग्रह यही दो इनके मूल हैं और इन दोनों का 'वागर्थाविव' सम्बन्ध है। वस्तुतः ये दो नहीं एक ही है, इस बातको पूर्णरूपेण अनुभूत कर लेनेपर कभी भी अकल्याण नहीं होगा और यही वस्तुतः महाकालीकी समाराधना है। इसी कारण दैवज्ञ जो कुछ विचार प्रकट करता है वे आभासमात्र ही होते हैं। उनका ठीक-ठीक होना उसी महाकालीकी इच्छा पर है। अपनी माता कितनी भी भयानक हो, वह अपने पुत्रके लिए भयानक नहीं। और [illegible] तो उसे छोड़कर पुत्र कहाँ जायें ? इसीलिए उससे डरकर ही [illegible] काम चल नहीं सकता। उसकी आराधनासे दैवज्ञ अपनी दृष्टिको बहुत दूरतक विस्तृत कर सकता है। जहाँ दैवज्ञकी विस्तृत दृष्टिमें अशुभ घटनाएँ घटनेकी सम्भावना हो सकती है, वहीं शुभ घटनाएँ घटनेकी भी सम्भावना रहती ही है। अशुभ घटनाओंको डरावने शब्दोंमें प्रकाशित कर साधारण जनताको भयभीत करना आर्ष-दृष्टि में मान्य नहीं हो सकता। दैवज्ञको चाहिए कि शुभाशुभ घटनाओंका संकेत वह अवश्य करे, पर लोगोंको सुरक्षित रखते हुए और संयत भाषामें। ऐसा ही ऋषियोंका आदेश है। और फिर भविष्यत्की घटनाओंके सम्बन्धमें शतप्रतिशत यथार्थ वर्णन कर सकना बड़े-बड़े योगसिद्ध महापुरुषोंके लिए भी जो कठिन है वह एक साधारण दैवज्ञ कैसे ठीक प्रकाशित कर सकता है। अपने अपने विचार लोगोंके सम्मुख प्रकट करना अनुचित नहीं, पर वे होने चाहिएँ आर्षप्रणालीसे ही।

भारतमें कुछ ऐसे भविष्यवक्ता भी अब प्रकट हो गये हैं, जो मनमाने ढंगपर ज्योतिर्विज्ञानकी आड़में बेशिर-पैरकी भयानक भविष्यवाणियाँ करके जनताको भयभीतकर ज्योतिर्विज्ञानकी हत्या कर रहे हैं। ऐसे लोगोंमें आंध्र राज्यके एक प्रोफेसर प्रमुख हैं, जिन्होंने अभी जुलाई १९५४ में काश्मीरके भविष्य पर अंग्रेजीमें 'Fate of Kashmir' नामक पुस्तक प्रकाशित कर बड़ा भयानक चित्र उपस्थित किया है। (यह पुस्तक लेखकने समालोचनार्थ हमारे पास भी भेजी है) इस पुस्तकमें १९५५ के नवम्बरमें वृश्चिक राशिमें ६ ग्रह इकट्ठे करके महाभारत कालीन इन ग्रहोंकी तुलनाके साथ नवम्बरमें तृतीय विश्व-युद्धकी घोषणा करते हुए आपने यह फतवा दिया है कि "ज्योतिश्शास्त्रके अनुसार यह सम्भव नहीं कि जम्मू और काश्मीर भारतमें मिल गये या भविष्यमें मिल जायेंगे। १९५४ के अक्टूबरसे १९५६ के जून तक पाकिस्तानकी सशस्त्र स्थल और वायुसेना भारत पर आक्रमण करेगी। दो पागल सांडोंकी लड़ाईमें जिस प्रकार छोटा बछड़ा कुचला जाता है उसी प्रकार भारत-पाककी लड़ाईमें काश्मीर श्मशान भूमि बन जायेगा। युद्धके कारण राजधानी दिल्ली से हटानी पड़ेगी।" इत्यादि अनेकों अनर्गल बातोंसे पुस्तक भरी पड़ी है। श्री नेहरूजी, कांग्रेस, स्वर्गीय श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी और युद्धके सम्बन्धमें भी इन महाशयने ऐसी ही निराधार भयानक भविष्यवाणियोंकी तीन-चार पुस्तकें तीन वर्ष पहले भी प्रकाशित कीं थीं, वे सब मिथ्या सिद्ध हो चुकी हैं। परन्तु उनके कुछ अंशका अन्धानुकरण पंजाबके एक दो दैवज्ञोंने सस्ती प्रसिद्धि प्राप्त

करनेके लिए अपनी जंत्री और उर्दू पत्रोंमें भी किया था। इन्हींके समान दक्षिण हैदराबादके एक दैवज्ञसम्राट् (धूर्त-राट्!) ने भी पिछले दिनों 'पाकिस्तान-टाइम्स' में विस्तृत भविष्यवाणी प्रकाशित करवाई थी कि—"१९५७ में पाकिस्तान काश्मीर पर विजय पा लेगा और जोधपुर आगरा तक पाकिस्तान अपनी सीमा बढ़ा लेगा। पूर्वी पंजाब और पश्चिमी बंगाल भी भारतके कब्जेसे निकल जावेंगे।" इत्यादि। इन छद्मवेषियोंकी भविष्यवाणियोंको पढ़ सुन कर ज्योतिश्शास्त्र पर श्रद्धा रखने वाली जनतामें भारी भयका संचार हुआ है। अनेकों पाठकोंने हमारा ध्यान इन भयावनी भविष्यवाणियोंकी ओर आकर्षित किया है और अपने पंचांग तथा 'श्रीस्वाध्याय' में इसका स्पष्टीकरण चाहा है, अतः सर्वसाधारण जनताका भ्रम निवारण करनेके लिए यहाँ कुछ लिखना आवश्यक हो गया है।

संसारकी कोई भी शक्ति काश्मीरको भारतसे अलग नहीं कर सकती

ऐसी अनर्गल बेशिर-पैरकी भविष्यवाणियोंसे पाठकों को भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं। उक्त ज्योतिषीजी ने १९५५ के नवम्बरकी जो युद्ध-कुण्डली दी है वह सरासर गलत है। न तो कार्तिक कृष्ण ३० को वृश्चिक राशि में ६ ग्रह इकट्ठे होते हैं और न मार्गशीर्षमें ही। पता नहीं किस दिव्य-दृष्टिसे उन्होंने नवम्बर १९५५ में महाभारत कालीन ६ ग्रहोंके एकत्र होनेकी कल्पना कर डाली है। हम दृढ़ता पूर्वक कह सकते हैं कि संसारकी कोई भी शक्ति अब काश्मीरको भारतसे अलग नहीं कर सकेगी और न अभी सन् १९५५-५६ में महायुद्ध होनेकी ही सम्भावना है। पाकिस्तानको तो अपने घरको 'पाक' रखना ही कठिन हो जावेगा, वह विचारा भारत पर आक्रमण क्या करेगा! गतवर्ष सं० २०११ के पंचांगमें हमने लिखा था कि—"इस वर्षमें संसारकी बड़ी बड़ी शक्तियां विश्वशान्ति और सद्भावना स्थापित करनेका भरसक प्रयत्न करेंगी। भारतका भी इसमें प्रमुख भाग होगा।......भारतको अन्तर्राष्ट्रीय कार्योंमें विशेष महत्त्वपूर्ण मध्यस्थताका कार्य करना पड़ेगा।" तदनुसार आज विश्वमें भारतको जो गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हो रहा वह सर्व विदित है।

सं० २०१५ वि० से आगे भारतका गौरव और सुख समृद्धि और भी विशेष रूपसे बढ़ने लगेगी, यह बात हमने आजसे ७ वर्ष पूर्व सं० २००४ के पंचांग और 'श्रीस्वाध्याय' में भी स्पष्ट लिखी थी कि—"भारत पूर्ण रूपेण सुखी एवं समृद्ध सं० २०१५ सन् १९५८ ई० के बाद ही हो सकेगा।" सं० २०२० के आसन्न भारतमें आर्य संस्कृति प्रधान कुछ धर्म सापेक्ष नये गणतन्त्र-राज्यकी स्थापना होगी और यहींसे सारे विश्वका पथ-प्रदर्शन होगा। आगे उत्तरोत्तर भारतका भविष्य उज्ज्वल है इसमें कोई सन्देह नहीं।

सन् १९५७ से ६१ तक का समय संसारके लिए अशान्तिकारक अवश्य रहेगा। यहाँ भारतमें भी शासन सम्बन्धी कुछ आन्तरिक कठिनाइयाँ आ सकती हैं, यह हमने दो वर्ष पूर्व भी लिखा था। वृश्चिक और धनुः राशिके शनिमें जब मंगल राहु केतु हर्शलनेपच्यूनका सम्बन्ध होता है उस समय संसारके कई भागोंमें अराजकता विग्रह उत्पातादि होते हैं। ३० वर्षमें शनि तीसरा और राहु पांचवाँ भचक्र-भ्रमण पूरा करके फिर उसी राशिमें आ जाते हैं, तथा ९ वर्षके बाद ९९ वें वर्षमें शनिके साथ राहु वा केतु का संयोग फिर उसी राशिमें आता है, तब कोई ऐतिहासिक घटना घटित होती है। सन् ५६-५७ में विगत चार शताब्दियोंमें भारतमें भी प्रत्येक बार कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटी हैं—सन् १५५६ में अकबरने हेमूको हराया और मुगल-साम्राज्यकी दृढ़ नींव डाली। सन् १६५७ में सम्राट् शाहजहाँ रोगग्रस्त हुआ और दिल्लीके सिंहासनके लिए उसके पुत्रोंमें गृहयुद्ध हुआ, जिसने मुगल-साम्राज्य की जड़ोंको हिला दिया। १७५७ में प्लासीका युद्ध हुआ और क्लाइवने बृटिश साम्राज्यकी नींव इस देशमें रक्खी। १८५७ में बृटिश-साम्राज्यको देशसे उखाड़ फेंकनेका विफल प्रयत्न किया गया। अब सन् १९५७ में भी कोई युगपरिवर्तनकारी घटना हो तो आश्चर्य नहीं। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि सन्

५७ से ६१ तक आग्नेय-एशिया और मिश्र अरब पाकिस्तान आदि यवन राष्ट्रोंमें युद्धोत्पातादिसे हानि होगी। सम्भव है पूर्वी बंगाल सन् ५७ में ही पाकिस्तान के अधिकारसे निकल जावे और ६१ तक पाकिस्तान नाम मात्रको ही शेष रह जावे। स्व० श्री योगी अरबिन्द घोषका तो मत था कि सन् १९५७ ई० में पाकिस्तानकी इतिश्री हो जावेगी। ११ नवम्बर १९५५ को शनि वृश्चिक राशिमें आवेगा, इसके एक वर्ष बाद संसारमें कोई युग परिवर्तनकारी घटना घटने और भारतमें अन्तःकलह बढ़ना लिखा है—

"यदा वृश्चिकगः सोरिर्मेदिनी दुःख संयुता।
वर्षमात्रमथो चोर्ध्वमिन्द्रप्रस्थो विनश्यति॥"

किन्तु, यह समय अभी दूर है, इसका विशेष विवेचन हम तत्कालीन सं० २०१४-१५ के पंचांगों और 'श्रीस्वाध्याय' में करेंगे।

भारतीय गणराज्यका छठावर्ष

पाठकोंको स्मरण होगा हमने सं० २००७ के 'श्रीविश्व-विजय-पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर २६ जनवरी १९५० ई० की गणराज्य जन्मकुण्डली देकर विस्तृत भविष्य विवेचन करते हुए प्रारम्भमें ही लिखा था कि—"इस गणराज्यकी स्थापना उत्तरायण और सर्वार्थसिद्धि योगमें हुई, यह राज्य चिरस्थायी एवं यशस्वी बनानेवाला शुभ योग है। लग्नेश गुरु लाभमें, बुध केन्द्र (राज्य) में और शनि छठे है, ये सब प्रकारके षड्यन्त्रों और अनार्य शत्रुओं को परास्त करते हुए आर्य गणराज्यको सुदृढ एवं चिरस्थायी बनानेमें सहायक सिद्ध होंगे।" इत्यादि।

राष्ट्रकी जन्मकुण्डलीके साथ राष्ट्रके प्रधान पुरुष राष्ट्रनायककी जन्मकुण्डलीके ग्रहोंका राष्ट्रकी प्रत्येक गतिविधिमें महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। राष्ट्रपति श्रीराजेन्द्रप्रसादजीके जन्मलग्न धनुः और गणराज्य जन्मलग्न मीन (दोनों) का स्वामी गुरु भाग्य लाभस्थ है और प्रधानामात्य श्रीजवाहरलाल जी नेहरूका जन्मलग्न एवं राशि कर्कका अधिपति चन्द्रमा तथा गणराज्य लग्नाधिपति और कांग्रेस जन्मलग्नाधिपति गुरु में परस्पर परम मित्रता है, अतः इन दोनों राष्ट्रनायक महापुरुषोंके द्वारा राष्ट्रका और राष्ट्रके द्वारा इनका गौरव संसार में खूब बढ़ता रहेगा। शनि रोग शत्रुओंको परास्त करेगा। अब २६ जनवरी १९५५ से प्रवेश होने वाले गणराज्यके छठे वर्षकी कुण्डली यह है—सं० २०११ माघ शु० ३ बुधवार इष्ट घट्यादि २५।१४ सूर्य ९।१२ लग्न ३।६।



भारतके प्रधानमन्त्री श्रीनेहरूजीका जन्मलग्न और राशि ही इसवर्ष गणराज्य वर्षलग्न आया है, अतः श्री नेहरूजीके द्वारा भारतकी सर्वतोमुखी उन्नति होगी। विदेशोंमें गौरव बढ़ेगा। भाग्येश गुरु व्ययमें केतुके साथ और लग्नेश चन्द्रमा अष्टमस्थ है यह आन्तरिक स्थितिको चिन्ताकारक बनाता है। प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें मतभेद और शासकवर्ग तथा प्रजामें पारस्परिक स्नेह सद्भावना न रहनेसे प्रगतिमें कुछ बाधा पड़ेगी। कांग्रेसजनोंमें भी कुछ सैद्धान्तिक मतभेद होंगे। अधिकारारूढ व्यक्ति राष्ट्रहितकी अपेक्षा अपनी पदप्रतिष्ठाकी रक्षा एवं निजी स्वार्थको अधिक महत्त्व देंगे, इससे प्रधान राष्ट्रनायकोंको कठिन समस्याका सामना करना पड़ेगा। दो-तीन प्रान्तोंकी राजनीतिमें केन्द्रको विशेषरूपसे हस्तक्षेप करना पड़ेगा। राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, बंगाल, दिल्ली, मद्रास, अजमेर और मध्यप्रदेशके कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलोंमें पारस्परिक प्रतिस्पर्धा एवं फूटके कारण गतिरोध उत्पन्न होगा। जगल्लग्नके धनभावमें नीचकाबुध है और गणराज्य वर्षलग्न में धन भावमें मुन्था शनि चन्द्रमासे दृष्ट है अतः आर्थिक समस्या असमाधानकारक रहेगी, बेकारी बढ़ेगी। पूंजीपति और श्रमजीवियोंमें असन्तोष बढ़कर कुछ कारखानोंमें हड़तालें होंगी और कहीं स्थिति बिगड़नेसे पुलिसको कड़ी

कार्यवाही करनी पड़ेगी। वर्षके उत्तरार्धमें करके बोझसे व्यापारी वर्ग एवं प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। अर्थमन्त्रीके लिए वर्षका उत्तरार्ध उत्तम नहीं है। सुरक्षा सेना और विकास योजनामें व्यय विशेष होगा। इस वर्षमें नवीन विकास योजनाएँ भूमिसुधार ग्रामसुधार यातायात नवीन बांध शिक्षा-प्रचार रेल्वे डाक तारकी उन्नति आदिमें विशेष प्रगति होगी। उत्तरप्रदेश, पंजाब, मध्यभारत और राजस्थानमें भूगर्भसे खुदाईमें बहुतसी प्रागैतिहासिक वस्तुएँ प्राप्त होंगी। विज्ञानमें भारत उन्नति करेगा। परमाणु-शक्तिके अन्वेषणमें सफलता मिलेगी। विदेशी वैज्ञानिकों का सहयोग मिलेगा। राष्ट्रभाषा हिन्दीका सरकारी विभागों में प्रचलन बढ़ेगा। शिक्षासंस्थाओंमें सैनिक शिक्षा अनिवार्य होगी। पंचम भाव शनिराहुकी क्रूरकर्तरीमें है अतः यह वर्ष शिक्षामन्त्रीके लिए अशोभनीय है। छात्रोंमें भी असन्तोष बढ़ेगा। गौरक्षा आन्दोलन उग्ररूप धारण करके अन्तमें सरकारकी नीतिकुशलतासे सफलतापूर्वक समाप्त होगा। निष्कर्ष यह है कि यद्यपि भाग्येश गुरु व्ययस्थ केतुके साथ है, अतः आरम्भमें अनेक आन्तरिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती दिखाई देंगी तथापि गुरु चलितमें लग्नमें आ गया है, एतदर्थ अन्तमें सभी कठिनाइयों पर विजय पा ली जावेगी। सरकारी नीतिमें भी कुछ परिवर्तन होगा और यदि राष्ट्र पर किसी प्रकारकी भी आपत्ति आई तो उसके प्रतीकारके लिए सभी दलोंका पूर्ण सहयोग मिलेगा।

इस वर्षका उत्तरार्ध (कार्तिकसे आगेका समय) संसार और भारतके लिए कुछ अशान्त वातावरण उत्पन्न करेगा, क्योंकि १२ नवम्बर १९५५ को शनि वृश्चिक राशिमें प्रवेश करेगा। आगे पौष शुक्लमें शनि-मङ्गलका युद्ध होगा, तथा आषाढ़में सूर्यग्रहणके बाद कार्तिक शु० १५ को चन्द्रग्रहण और इसके १५ दिन बाद फिर सूर्यग्रहण हो रहा है, यह संसारमें कहीं युद्ध रोग उपद्रव आधिदैविक आधिभौतिक उत्पातादि कोई दुर्घटना और मन्त्रिमण्डलोंमें उलटफेर वर्षके अन्दर उपस्थित करते हैं। प्रजामें अन्याय भ्रष्टाचारकी वृद्धि और राष्ट्र, समाज, जाति, कुटुम्ब परिवार, यहाँ तककी पति-पत्नियोंमें भी कलहका बीजारोपण कर देते हैं, लिखा भी है—

सोमग्रहे निवृत्ते पक्षान्ते यदि भवेद् ग्रहोऽर्कस्य।
तत्रानयः प्रजानां दम्पत्योर्वैरमन्योन्यम्॥
रवेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य ग्रहणानि भवन्ति चेत्।
तदा च कष्टके योगे रुण्डमुण्डा च मेदिनी॥

इस वर्ष संसारमें यान (हवाई जहाज रेल्वे मोटर) दुर्घटनाएँ और अग्निकाण्ड अधिक होंगे। आठ-नौ वायुयान दुर्घटनाओंमें दो बड़ी भयानक होंगी। ज्येष्ठ आषाढ़ मासमें हिन्द-महासागर और प्रशान्तमें कोई दुर्घटना घटेगी। ज्येष्ठसे आश्विन तक भारतके दो-तीन प्रमुख नेताओंका स्वास्थ्य बिगड़ेगा। यहीं चोरी डाके हत्याकाण्ड भी यत्रतत्र विशेष होंगे। इस वर्ष प्रत्येक विभागमें स्त्रियोंका उत्कर्ष बढ़ेगा।

तीन मासका घटनाचक्र

इन तीन मासोंमें जनवरीसे मार्चके अन्त तक संसारमें राजनैतिक धार्मिक सामाजिक सांप्रदायिक आर्थिक हलचलें अधिक होंगी। नेताओं और राष्ट्रनायकोंका देशविदेशमें भ्रमण और पारस्परिक विश्वशान्ति सद्भावना और सन्धि समझौतेकी चर्चाएँ अधिक होंगी। दक्षिणमें राजनैतिक वातावरण उग्र बनेगा। बंगाल, राजस्थान, पंजाब और मध्यभारत-मन्त्रिमण्डलमें गतिरोध उत्पन्न होगा। माघ शुक्ल प्रतिपदाको सोमवार है और मित्रक्षेत्र तथा स्वराशिस्थ मंगल, उच्चका शनि गुरु, सुभिक्ष कारक है। मंगल गुरुके कारण फाल्गुन शुक्ल ८ ता० १८ फरवरी तक गुड़में २) २॥) की मंदीका योग है, वहाँसे आगे चैत्रमें गुड़में अच्छी तेजीके योग बने हैं।

फाल्गुन शुक्लसे चैत्रान्त तक गुड़में ४) ५) की तेजीका योग है। चांदीमें भी फाल्गुन तक १५) २०) की मंदीका योग है। अब चांदी १५७) १५८) से ऊपर नहीं जायेगी। जनवरीसे ही चांदीमें मंदीके ग्रह योग हैं। जब भी चांदी १५७) हो तो एक मासकी मंदी लगाना लाभप्रद होगा। बम्बई रुई जरीला ६००) के लगभग पहुँचकर फिर भाव ऊपर उठेंगे। विशेष जानकारीके लिए समय पर पत्र व्यवहार करें।

गुड़का दैवीचांस

'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको लाभ पहुँचानेके लिए यहाँ हम गुड़का एक दैवीचांस निःशुल्क भेंट कर रहे हैं। यह दैवीचांस व्यापारियोंको प्रसादरूपमें अनुभवके लिए दिया जा रहा है। अब गुड़में २।) २॥) की मन्दी फाल्गुन तक निश्चितरूपमें आवेगी। इस समय गुड़ फाल्गुन वायदा बम्बई कर्बरेट तथा उत्तर-भारत एक्सचैंजमें १२।) है, यहाँ से नीचा चलेगा। अर्थात् ६) ६॥) भाव हो जायेगा। हाजर गुड़ खुर्पापाड़का सुनाम धूरी मण्डीमें ६) ६॥) के लगभग भाव अवश्य बनेगा। हापुड़ आदि गुड़की मण्डियोंमें ६॥) ७॥) खुर्पापाड़ गुड़का भाव बनेगा, इसमें सन्देह नहीं। निस्संकोच बेचनेका कार्य करें। मन्दा अवश्य आकर रहेगा। लाभ उठानेवाले दशांश भेजकर आगेके लिए भी दैवीचांसके प्रसादकी प्रतीक्षा करें। हमारे नियम और फीस आदिका विवरण आगे पृष्ठ ५६ पर विज्ञापनमें देखें।

—चाननराम शर्मा वैद्य

अनुभूत व्यापार विचार

[ले० श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य

गुड़

१ जनवरीसे ३ ता० तक तेज।

४ जनवरीसे ६ जनवरी तक मन्दा।

७, ८ जनवरीको घटा बढ़ी।

९ जनवरीसे १२ ता० तक तेज।

१३ जनवरीसे २३ ता० तक मन्दा।

२४ ,, ,, २९ ,, ,, घटाबढ़ी। परन्तु रुख मन्दा रहेगा।

३० जनवरीसे १ फरवरी तक तेज।

२ फवरीको मन्दा रहेगा।

३ फरवरीसे १३ ता० तक तेज रहेगा।

१४ फरवरीको मन्दा रहेगा।

१५ फरवरीसे १८ ता० तक तेज।

१९, २० तारीखको मन्दा रहेगा।

२१ फरवरीसे २४ ता० तक तेज रहेगा। इस मासमें २) तेजीकी सम्भावना है।

२५ फरवरीसे २७ ता० तक घटाबढ़ी रुख मन्दा।

२८ फरवरीसे ७ मार्च तक तेज रहेगा।

८ मार्चसे ११ मार्च तक मन्दा रहेगा।

१२ मार्चसे १४ मार्च तक तेज रहेगा।

१६ मार्चको मन्दा रहेगा।

१७ मार्चसे २१ मार्च तक तेज रहेगा।

२२ मार्चसे २४ तक मन्दा रहेगा।

२५, २६ मार्चको घटाबढ़ी रहेगी।

२७, २८ मार्चको मन्दा रहेगी।

२९ मार्चसे १ अप्रैल तक तेज़ रहेगी।

सूचनाः—गुड़के साथ ही गवारा, सरसों, सोना चांदी आदि भाव चलेंगे। परन्तु ३० जनवरीसे १० फरवरी तक सरसों मन्दी रहेगी। मार्चके पूर्वार्द्धमें गुड़में डेढ़-दो रुपए तेजी आएगी। समयके अभावसे साधारणतया संक्षिप्त भाव विवरण दिया है। आगामी अंकमें सूक्ष्म विचार पूर्वक संशोधित अचूक भावफल लिखे जावेंगे।

विशेष सूचनाः—त्रैमासिक भाव ६॥=) से नीचे नहीं हो सकेगा, ऐसी सम्भावना है।

तीसरी बार

छप गया

महामहिम आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके
सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं।

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र हैं, पति नहीं।

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति
किक्रान्ति है, संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मँगाइये। मूल्य
) मार्ग व्यय -) 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग'के स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्ग व्यय सहित ।=) में

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग
प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न
है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल
सी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गईं।
इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत
होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? पर-
मात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार
करता है? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिये?
दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां
होता है उनकी उपपत्ति क्या है? आदि-आदि आध्या-
त्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार
करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये।
आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा

मूल्य २) मार्ग व्यय ।।=) अलग।

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन

'श्रीराष्ट्रालोक' का भाष्य

यह ग्रन्थ विश्व-सहित्यमें एक अद्भुत है। अठारह वर्ष पहले इसका निर्माण हुआ था, यह संस्कृतमें है। इस अद्वितीय ग्रन्थको राष्ट्रभाषानुवादके साथ प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है। इस सम्पूर्ण विशालग्रन्थ के प्रकाशनमें लगभग १२०००) बारह सहस्र रुपये व्यय होंगे। यह सम्पूर्ण व्यय एक ही महानुभावका होगा, वे महानुभाव ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय-वर्णके हों, साथ ही सच्चरित्र एवं आर्य-प्रकृतिका होना आवश्यक है। उनका सचित्र परिचय भी इस ग्रन्थके प्रारम्भमें रहेगा। ग्रन्थकार के साथ ही इस ग्रन्थके प्रकाशकका नाम भी विश्वमें अमर रहेगा। उक्त नियमानुसार जो सज्जन इस ग्रन्थ प्रकाशन द्वारा राष्ट्र एवं साहित्य सेवाके साथ अपना जीवन सार्थक बनाना चाहते हों वे निम्न पते पर पत्रव्यवहार करें।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्‌गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन— 'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ......इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ....।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है ...... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है ......।

श्रीयुत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, राज्यपाल उत्तरप्रदेश–'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं। ......मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ ......।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमारजी—'श्रीस्वाध्याय' साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रक्खे हुए है। .... पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।.........''

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी मुख्य-मन्त्री उत्तरप्रदेश–'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकल रहा है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किंवा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरण गुप्त— "......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति— 'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है। ......यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़करजी—"...... वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है। ......"

श्री डा० रामकुमारजी वर्मा —"...... 'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"..... 'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।...... प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (भू० पू० सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।......आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सात्वलेकरजी—"...... 'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।